किसी भी तरह के विज्ञापन एवं समाचार के लिए संपर्क करें मो0: 9891706853

दैनिक

राष्ट्रीय संस्करण

RNI: UPHIN/2021/84200

समाज जागरण

नोएडा उत्तर प्रदेश,दिल्ली एनसीआर, हरियाणा,पंजाब बिहार,मध्य प्रदेश, छतीसगढ, झारखण्ड असम से प्रसारित

वर्ष: 3 अंक: 213 नोएडा, (गौतमबुद्धनगर) शनिवार 17 मई 2025 http://samajjagran.in पृष्ठ - 12 मूल्य 05 रुपया

NOTAM जारी, भारत करेगा घातक मिसाइल टेस्ट!

अंडमान की लहरों से उठेगा ब्रह्मोस का तूफान?

भारत ने 23-24 मई 2025 के लिए एक नोटिस टू एयरमेन जारी किया है. यह NOTAM अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के आसपास जारी किया गया है.

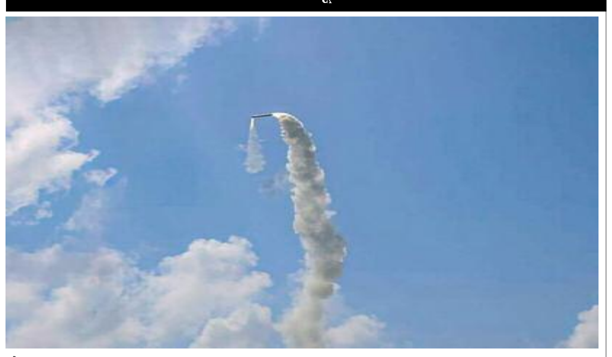

नई दिल्लीः 23-24 मई तारीखें तय हैं और जगह भी. अंडमान और निकोबार की लहरों के बीच भारत एक बार फिर मिसाइल शक्ति का दम दिखाने जा रहा है. अगर मिसाइल टेस्ट हुआ तो यह उन देशों को चेतावनी होगा जो भारत की सहनशीलता को कमजोरी समझ बैठे हैं भारत सरकार ने इस तारीख को NOTAM जारी किया है. यह एक वैधानिक सूचना होती है, जो उड़ानों को उस क्षेत्र से दूर रहने का अलर्ट देती है क्योंकि वहां कोई बड़ा सैन्य या वैज्ञानिक परीक्षण होने वाला है. और जब बात अंडमान की हो, तो समझ जाइए... बात ब्रह्मोस जैसी घातक मिसाइल की हो सकती है.

ब्रह्मोसः भारत की 'मौन चेतावनी'

ब्रह्मोस कोई आम मिसाइल नहीं है. ये आवाज से लगभग तीन गुना तेज चलती है और दुश्मन को संभलने तक का मौका नहीं देती. भारत और रूस की संयुक्त तकनीक से बनी ये मिसाइल जमीन, हवा और समुद्र... तीनों से दागी जा सकती है. इसकी रेंज अब 900 किलोमीटर तक पहुंच चुकी है, यानी दुश्मन के दिल में उतरने की काबिलियत रखती है.

पाकिस्तान में 'घुसकर' चलाए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद से ही देश में नई ऊर्जा दिख रही है. और चीन की चालबाजियों को देखते हुए, भारत अब 'शब्दों की नीति' नहीं, 'शस्त्रों की रणनीति' पर आगे बढ़ रहा है. अंडमान में मिसाइल टेस्ट महज सैन्य अभ्यास नहीं, ये क्षेत्र में बैठे दो खास देशों के लिए इशारा है कि भारत अब चुप नहीं बैठेगा.

भारत ने दिखाया बड़ा दिल,

अफगानी ट्रकों के लिए खोला अटारी-बाघा बॉर्डर, लेकिन पाकिस्तान ने फिर दिखा दी औकात

भारत ने अफगानिस्तान के करीब 150 ट्रकों को एंट्री की इजाजत दी, जबकि पाकिस्तान ने मंजूरी रोक रखी है.

नई दिल्ली. पहलगाम हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर है. इस बीच ट्रेडर्स के लिए राहत की खबर आई है. भारत ने अफगानिस्तान के ट्रकों की देश में एंट्री को लेकर बड़ा दिल दिखाया है और दूसरी ओर पाकिस्तान ने इन ट्रकों की मंजूरी को रोक रखा है. दरअसल, भारत ने फंसे हुए करीब 150 अफगानी ट्रक को एंट्री की इजाजत दे दी है. इसी कड़ी में अफगानिस्तान से आने वाले 8 ट्रकों ने शुक्रवार (16 मई) को अटारी इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट से भारत में प्रवेश किया. ये ट्रक 24 अप्रैल से लाहौर और वाघा बॉर्डर के बीच फंसे हुए ट्रकों में से थे.

भारतीय अधिकारियों ने स्पेशल गेस्चर के रूप में करीब 150 अफगान ट्रकों को सूखे मेवे और नट्स के साथ प्रवेश की अनुमति दी. लेकिन, लोगों ने बताया कि पाकिस्तानी अधिकारियों ने अपनी बॉर्डर पर इन ट्रकों की मंजूरी को रोक रखा है

इंडो-फॉरेन चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रेसिडेंट ने की पुष्टि

आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, दोपहर में सूखे मेवे ले जा रहे 8 ट्रक अटारी-वाघा बॉर्डर पार कर भारत पहुंचे. यह भारत और पाकिस्तान के बीच ट्रेड के लिए अनुमति प्राप्त एकमात्र लैंड लिंक है. इस बात की पुष्टि करते हुए इंडो-फॉरेन चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रेसिडेंट बीके बजाज ने कहा, "8 ट्रक भारतीय सीमा में आ चुके हैं. अन्य ट्रकों के भी जल्द आने की उम्मीद है. हम भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सरकारों का धन्यवाद करते हैं."

ट्रेडर्स को होता भारी नुकसान

अमृतसर के सूखे मेवे के ट्रेडर्स मुकेश सिधवानी ने कहा, "रूट के बंद होने के कारण सामान की गुणवत्ता खराब हो रही थी. भारतीय आयातक अफगान ट्रेडर्स को एडवांस पेमेंट करते हैं. अगर यह रूट फिर से नहीं खुलता, तो हमें भारी नुकसान उठाना पड़ता,"

तालिबान के साथ भारत के नए कूटनीतिक संबंधों का आगाज

तालिबान के प्रवक्ता सुहैल शाहीन ने 16 मई को कहा, "अफगानिस्तान भारत के साथ अपने संबंधों को फिर से सामान्य बनाने और देश के विकास के लिए निवेश को आमंत्रित करने की कोशिश कर रहा है." यह बयान तब आया जब विदेश मंत्री एस जयशंकर और तालिबान के एक्टिंग विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी से गुरुवार को बातचीत की. यह भारत और अफगानिस्तान की तालिबान सरकार के बीच मंत्री स्तर की पहली बातचीत थी.

एयर इंडिया ने सरकार से इंडिगो के तुर्की एयरलाइन्स के साथ लीज को खत्म करने के लिए पैरवी की: रिपोर्ट

एयर इंडिया ने सरकार से तुर्की एयरलाइन्स के साथ प्रतिद्वंद्वी इंडिगो के लीजिंग गठजोड़ को रोकने के लिए संपर्क किया है। इसके लिए उसने व्यापार पर पड़ने वाले प्रभाव के साथ-साथ इस्तांबुल द्वारा पाकिस्तान को समर्थन दिए जाने से उत्पन्न सुरक्षा चिंताओं का हवाला दिया है। यह जानकारी रॉयटर्स द्वारा देखे गए एक दस्तावेज और एक स्रोत से मिली है। भारत-पाकिस्तान संघर्ष में पाकिस्तान पर तुर्की के रुख के खिलाफ भारत में बढ़ते जनाक्रोश के बीच, भारतीय अपनी छुट्टियां रद्द कर रहे हैं। सरकार ने 16 मई को राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देते हुए तुर्की की ग्राउंड हैंडलिंग सेवा फर्म सेलेबी की सुरक्षा मंजूरी रद्द कर दी।

भारतीय सांसद वैश्विक स्तर पर पाकिस्तान को बेनकाब करेंगे: शशि थरूर, असदुद्दीन ओवैसी चुनी गई 'सूची' में?

भारत आतंकवाद समर्थक पाकिस्तान के खिलाफ कूटनीतिक हमला करने जा रहा है। कई राजनीतिक दलों के सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल हाल ही में पहलगाम आतंकी हमले में पाकिस्तान की भूमिका के बारे में विदेशी सरकारों को जानकारी देने और सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक समर्थन जुटाने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय आउटरीच कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है। इस हमले में 26 निर्दोष नागरिक मारे गए थे। सूत्रों ने बताया कि कांग्रेस सांसद शशि थरूर और एआईएमआईएम सांसद असदुद्दीन ओवैसी के प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने की संभावना है।

पाकिस्तान के खिलाफ भारत का बड़ा कूटनीतिक प्रयास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार दुनिया के प्रमुख देशों में बहुदलीय सांसदों का एक प्रतिनिधिमंडल भेजने की योजना बना रही है। कूटनीतिक प्रयास के पीछे मुख्य एजेंडा पाकिस्तान की अपनी धरती पर आतंकी संगठनों को वित्तपोषित करने और उन्हें बढ़ावा देने में भूमिका को उजागर करना और सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक सहमति बनाना है।

सूत्रों ने बताया कि सांसदों का प्रतिनिधिमंडल विदेशी सरकारों और संस्थानों के सामने सबूत पेश करेगा। इन क्रॉस-पार्टी प्रतिनिधिमंडलों का उद्देश्य विदेशी सरकारों और संस्थाओं के समक्ष भारत के साक्ष्य और रुख को सीधे प्रस्तुत करके वैश्विक कथानक को बदलना होगा।

शशि थरूर, असदुद्दीन ओवैसी चयनित 'सूची' में

सूत्रों ने टाइम्स नाउ को बताया कि कांग्रेस सांसद शशि थरूर और एआईएमआईएम सांसद असदुद्दीन ओवैसी प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा हो सकते हैं। शशि थरूर, जो भारत में विदेश मामलों पर संसदीय पैनल के प्रमुख भी हैं, प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर सकते हैं। शशि थरूर और ओवैसी ने ऑपरेशन सिंदूर का खुलकर समर्थन किया है, जिसमें भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में 9 आतंकी ठिकानों पर सटीक और मापा हमला किया था।

पहले नमस्कार... फिर घुटने पर बैठ जॉर्जिया मेलोनी का स्वागत

तिरानाः अल्बानिया की राजधानी तिराना में आयोजित यूरोपीय राजनीतिक समुदाय की बैठक में एक ऐसा दृश्य देखने को मिला, जिसने कूटनीति की दुनिया में गर्मजोशी और रंग भर दिए. अल्बानिया के प्रधानमंत्री एडी रामा ने यूरोप के 40 से अधिक नेताओं का स्वागत कुछ इस अंदाज में किया कि हर कैमरा और हर आंख उन पर टिक गई. बारिश के बीच रामा नीली छतरी लेकर, EPC लोगो लगी टाई और स्नीकर्स में हर नेता को व्यक्तिगत अंदाज में रिसीव कर रहे थे. लेकिन सबसे ज्यादा सुर्खियां तब बटोरीं जब उन्होंने इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी के सामने घुटनों पर बैठकर उनका स्वागत किया.

बैठक के दिन अचानक बारिश शुरू हो गई लेकिन एडी रामा का उत्साह जरा भी नहीं टूटा. उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "लगता है ये ब्रिटिश प्रतिनिधिमंडल के साथ आई गैर-स्थानीय बारिश है!" इस टिप्पणी ने सभी नेताओं को हंसा दिया. रामा का यह आत्मविश्वास और हाजिरजवाबी उनकी सॉफ्ट डिप्लोमेसी को और मजबूती देती है. नेता की गर्मजोशी ने यह साबित किया कि कूटनीति अब केवल भाषणों और बैठकों तक सीमित नहीं बल्कि दिल से दिल जोड़ने की कला भी है.

सोने की होल्डिंग में वृद्धि के कारण इस सप्ताह भारत का विदेशी मुद्रा भंडार मे भारी उछाल।

4.55 बिलियन डॉलर से बढ़कर 690.61 बिलियन डॉलर हो गया।

नई दिल्लीः शुक्रवार को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 9 मई को समाप्त सप्ताह के लिए 4.553 बिलियन डॉलर बढ़कर 690.617 बिलियन डॉलर हो गया, जो मुख्य रूप से सोने की परिसंपत्तियों में उल्लेखनीय वृद्धि के कारण हुआ। यह पिछले रिपोर्टिंग सप्ताह से उलट है, जब भंडार 2.065 बिलियन डॉलर घटकर 686.064 बिलियन डॉलर रह गया था। एजेंसी पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, सितंबर 2024 के अंत में भंडार 704.885 बिलियन डॉलर के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया था। समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान, विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां - विदेशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा घटक - 196 मिलियन डॉलर की मामूली वृद्धि दर्ज करते हुए 581.373 बिलियन डॉलर पर पहुंच गई। डॉलर के संदर्भ में व्यक्त एफसीए, मुद्रा की चाल के प्रभाव को दर्शाते हैं, जैसे कि रिजर्व में रखे गए यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं की सराहना या अवमूल्यन।

समग्र वृद्धि में एक प्रमुख योगदानकर्ता स्वर्ण भंडार में तेज वृद्धि थी, जो आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार $4.518 बिलियन बढ़कर $86.337 बिलियन हो गया।

इस बीच, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) में $26 मिलियन की गिरावट आई, जो $18.532 बिलियन पर आ गया। आईएमएफ के साथ भारत की आरक्षित स्थिति में भी $134 मिलियन की कमी देखी गई, जो रिपोर्टिंग सप्ताह के दौरान $4.374 बिलियन पर आ गई।

देश के केंद्रीय बैंक द्वारा बनाए गए ये विदेशी मुद्रा भंडार मुख्य रूप से अमेरिकी डॉलर जैसी प्रमुख आरक्षित मुद्राओं में रखे जाते हैं, जबकि यूरो, जापानी येन और ब्रिटिश पाउंड स्टर्लिंग में छोटे आवंटन होते हैं। केंद्रीय बैंक रुपये की कमजोरी के दौरान अमेरिकी डॉलर बेचकर और रुपये के मजबूत होने पर भंडार जमा करके मुद्रा बाजारों में सक्रिय रूप से तरलता का प्रबंधन करता है।

नीरज चोपड़ा ने रचा इतिहास, 90 मीटर जेवलिन थ्रो करने वाले पहले भारतीय बने

नई दिल्ली. भारत के लाड़ले नीरज चोपड़ा ने इतिहास रच दिया है. स्टार जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने 90 मीटर का आंकड़ा भी पार कर लिया है. उन्होंने शुक्रवार को दोहा डायमंड लीग में 90.23 मीटर जेवलिन थ्रो किया. हालांकि, ऐतिहासिक प्रदर्शन करके भी नीरज चोपड़ा गोल्ड मेडल नहीं जीत सके. जर्मनी के जूलियन वेबर ने 91.06 मीटर के थ्रो के साथ गोल्ड मेडल पर कब्जा किया. नीरज चोपड़ा को सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा.

सपा के कुछ नेता लगातार समाज को जातियों में बांटने की राजनीति कर रहे : केंद्रीय मंत्री बीएल वर्मा

0 सैन्य अफसरों की जाति को लेकर विवादित बयान पर मचा सियासी तूफान

0 सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। सपा के वरिष्ठ नेता प्रो. रामगोपाल यादव द्वारा सेना में जातिगत आधार पर टिप्पणी करने के बाद सियासत गर्मा गई है। इस पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री बीएल वर्मा ने कहा कि सैनिक की कोई जाति नहीं होती। जो वर्दी पहनता है, वह केवल देश के लिए मर-मिटने वाला जांबाज होता है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के कुछ नेता लगातार समाज को जातियों में बांटने की राजनीति कर रहे हैं, और अब वे सेना तक को इसमें घसीटने लगे हैं। सेना का गौरव, उसका शौर्य और बलिदान, देश की अस्मिता का प्रतीक है।

शुक्रवार को बरेली पहुंचे बीएल वर्मा ने जीआईसी ऑडिटोरियम में आयोजित एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया, जहां उन्होंने सफाई व्यवस्था में लगे 50 कर्मचारियों को टूलकिट वितरित की और उनके योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया। इस आयोजन का संयोजन नेशनल सफाई कर्मचारी वित्त और विकास निगम तथा नगर निगम के सहयोग से हुआ। मंच से बोलते हुए मंत्री ने सफाई कर्मचारियों को समाज की रीढ़ बताया और उनके कार्य को सम्मानजनक दृष्टि से देखने की अपील की।

ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र, सेना की कार्रवाई का किया समर्थन

बीएल वर्मा ने हाल ही में हुए एक सैन्य ऑपरेशन का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की बेटियों के सिंदूर की कीमत क्या होती है। उन्होंने बताया कि पहलगाम हमले के बाद सेना ने आतंकी ठिकानों को निशाना बनाकर 100 से अधिक आतंकियों को मार गिराया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले ही स्पष्ट किया था कि अगर पाकिस्तान कोई दुस्साहस करेगा, तो भारत माकूल जवाब देगा

सेना पर राजनीति नहीं, सम्मान होना चाहिए

बीएल वर्मा ने स्पष्ट किया कि देश की सेना का सम्मान हर नागरिक का कर्तव्य है। तिरंगे की गरिमा और देश की एकता को बनाए रखने में सेना की भूमिका सर्वोपरि है। इसे लेकर राजनीति करना अनुचित है। सेना ने भारत की ताकत का लोहा न केवल पाकिस्तान को, बल्कि दुनिया को भी मनवाया है। उन्होंने यह भी कहा कि देशभर में चल रही तिरंगा यात्राएं राष्ट्र की एकता और गौरव का प्रतीक हैं और सभी दलों को इस दिशा में सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

पटना में सीएम ने किया पिंक बस सेवा की शुरुआत

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता वेद प्रकाश

पटना/ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राजधानी पटना के एक अणे मार्ग स्थित अपने आवास परिसर से इस योजना का औपचारिक शुभारंभ किया और पिंक बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह सेवा खास तौर पर महिलाओं और छात्राओं के लिए शुरू की गई है, जिससे उन्हें अब सस्ती, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा का विकल्प मिलेगा। पहले चरण में कुल 20 मिनी पिंक बसों को राज्य के विभिन्न शहरों में चलाया गया है। इनमें पटना में 8, मुजफ्फरपुर में 4 तथा गया, भागलपुर, दरभंगा और पूर्णिया में 2-2 बसें शामिल हैं। वहीं, दूसरे चरण में 80 और पिंक बसों को सड़कों पर उतारे जाने की योजना है, जिससे सेवा का विस्तार राज्य के अन्य हिस्सों में भी किया जाएगा।इन पिंक बसों को खासतौर पर महिलाओं की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। सुरक्षा के लिहाज से बसों में पैनिक बटन और सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, वहीं हर सीट पर मोबाइल चार्जिंग की सुविधा भी दी गई है। किराया भी आम जनता की जेब के अनुकूल रखा गया है, जो 6 रुपये से लेकर अधिकतम 25 रुपये तक होगा। राज्य की परिवहन मंत्री शीला कुमारी ने जानकारी दी कि यह सेवा महिलाओं को एक सुरक्षित, भरोसेमंद और आत्मनिर्भर यात्रा का माध्यम प्रदान करेगी। उन्होंने बताया कि सरकार की मंशा है कि इन बसों का संचालन पूरी तरह से महिलाओं द्वारा किया जाए। यानी ड्राइवर और कंडक्टर दोनों महिलाएं होंगी। हालांकि, फिलहाल महिला चालकों की संख्या पर्याप्त नहीं होने के कारण पहले चरण में कुछ बसों का संचालन पुरुष चालकों द्वारा किया जा सकता है। भविष्य में जब महिला चालकों की नियुक्ति हो जाएगी, तब यह सेवा पूर्णतः महिला-संचालित रूप में कार्य करेगी। यह बसें सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक चलेंगी और प्रमुख शहरों के मुख्य मार्गों पर सिटी बस सेवा के रूप में कार्य करेंगी। इनमें केवल महिलाएं और छात्राएं ही सफर कर सकेंगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने बजट भाषण 2025 में इस सेवा की घोषणा की थी और अब यह योजना धरातल पर उतर चुकी है। सरकार की इस पहल को राज्य में महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर माना जा रहा है। इसके माध्यम से न सिर्फ महिलाओं को सुरक्षित यात्रा की सुविधा मिलेगी, बल्कि वे अधिक आत्मनिर्भर बन सकेंगी।

राष्ट्रीय एकता सबसे ऊपर

ऑपरेशन सिंदूर को इतिहास एक ऐसे अवसर के रूप में भी याद किया जाना चाहिए जिसने देश को आने वाले समय के लिए एकजुट किया।

बीते करीब तीन सप्ताह में जो कुछ घटित हुआ है वह देश के समकालीन इतिहास में विशिष्ट स्थान पाएगा। 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की हत्या कर दी गई। इस घटना ने पूरे देश को हिला दिया। हालांकि हमले के वास्तविक आरोपी नहीं

पकड़े जा सके हैं लेकिन सुरक्षा बलों के पास यह पता लगाने के पर्याप्त प्रमाण थे कि इसका संबंध पाकिस्तान और पाकिस्तान में स्थित आतंकवादी संगठनों से था। इस घटना ने पूरे देश को एकजुट कर दिया। विपक्षी दलों ने भी सरकार का समर्थन करते हुए कहा कि वह जो उचित समझे वह कदम उठाए। 6-7 मई की दरमियानी रात भारतीय सशस्त्र बलों ने ऑपरेशन सिंदूर की शुरूआत की और पाकिस्तान तथा पाक के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर में 9 स्थानों पर आतंकी ठिकानों पर हमला किया। यह सैन्य कार्रवाई नपी-तुली, सटीक निशाने पर और बिना उकसावे वाली थी। बहरहाल पाकिस्तान ने हालात बिगाड़ने शुरू कर दिए और भारतीय सैन्य बलों को जवाब देना पड़ा। भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान में सैन्य परिसंपत्तियों को काफी नुकसान पहुंचाया। चूंकि भारतीय सैन्य बलों ने आरंभिक लक्ष्य हासिल कर लिया था इसलिए भारत ने पाकिस्तान की अपील पर कार्रवाई को स्थगित करने का निर्णय लिया।

22 अप्रैल के बाद से घटित सभी घटनाओं का खूब विश्लेषण किया जा रहा है और उन पर चर्चा भी हो रही है। यह मानना सही है कि सुरक्षा प्रतिष्ठान भी हर पहलू का आकलन कर रहा है ताकि अगर कोई कमी है तो उसे दूर किया जाए। इसके अलावा भविष्य को लेकर भी पूरी तैयारी रखनी है। ध्यान देने वाली बात यह है कि सशस्त्र बलों की कामयाबी के अलावा भारत ने जबरदस्त राष्ट्रीय एकता का भी प्रदर्शन किया है। यह याद करना उचित होगा कि पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में मृतकों को उनकी धार्मिक पहचान की पुष्टि करने के बाद मारा गया था।

अब यह बात व्यापक तौर पर मानी जा रही है कि अन्य लक्ष्यों के अलावा हमले का इरादा देश में सांप्रदायिक तनाव भड़काना भी था। परंतु यह कारगर नहीं हुआ। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई को राष्ट्र के नाम संबोधन में भी कहा, ह्वपूरा देश, हर नागरिक, हर समुदाय, हर वर्ग एकजुट होकर आतंकवाद के खिलाफ ठोस कार्रवाई के लिए खड़ा रहा ह्व हालांकि, दुर्भाग्यवश कुछ लोग नहीं चाहते कि यह एकता बरकरार रहे। उदाहरण के लिए मध्य प्रदेश सरकार के एक मंत्री ने एक महिला सैन्य अधिकारी को लेकर एक अपमानजनक और सांप्रदायिक टिप्पणी की। इस अधिकारी ने अन्य अधिकारियों के साथ ऑपरेशन सिंदूर के दौरान मीडिया को जानकारियां दी थीं। हालांकि अदालतों ने इस मामले का संज्ञान लिया है और कानूनी कदम उठाया जा चुका है लेकिन जरूरत है एक स्पष्ट राजनीतिक संदेश देने की। राज्य सरकार और राजनीतिक नेतृत्व को यह दिखा देना चाहिए कि ऐसी हरकतों की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

दुर्भाग्यवश मंत्री ने जो कुछ कहा है वह एक विभाजनकारी राजनीति और समाज का प्रतिबिम्ब है और यह अपनी तरह की कोई इकलौती घटना नहीं है। पहलगाम आतंकी हमलों में मारे गए नौसेना अधिकारी की पत्नी को उस समय ऑनलाइन ट्रोल किया गया जब उन्होंने कहा था कि मुस्लिमों या कश्मीरियों को निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए। संघर्ष विराम की घोषणा के बाद विदेश सचिव विक्रम मिस्री और उनके परिवार, खासकर उनकी बेटी को भी ऑनलाइन ट्रोल किया गया। ट्रोल करने वालों को मिस्री की बेटी के पेशेवर काम में सांप्रदायिक दृष्टिकोण मिल गया। देश की सार्वजनिक बहस में ऐसी बातें स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए। देश ने बीते कुछ हफ्तों में जो एकजुटता दिखाई है उसे बचाने की जरूरत है। ऑपरेशन सिंदूर को इतिहास में केवल एक सैन्य कामयाबी के रूप में नहीं दर्ज होना चाहिए। इसे एक ऐसे अवसर के रूप में भी याद किया जाना चाहिए जिसने देश को आने वाले समय के लिए एकजुट किया। अब यह सभी दलों के राजनीतिक नेतृत्व पर निर्भर है कि वे चुनावी लाभ के लिए विभाजनकारी राजनीति से दूर रहें और भारतीय राज्य को भी ऐसी विभाजनकारी बातों को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। इससे देश में सौहार्द बढ़ेगा और आर्थिक विकास में तेजी आएगी।

अब सुप्रीम कोर्ट से राष्ट्रपति मुर्मू की भिड़ंत

समाज जागरण

लगता है कि सरकार और भाजपा के बडे नेता सुप्रीमकोर्ट को चैन से नही बैठने देंगे. सुप्रीमकोर्ट से पहले भाजपा सांसद निशिकांत दुबे और बाद में उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड ने मुठभेड की थी. दुबे ने सीजेआई को देश में चल रहे तमाम गृहयुद्धों के लिए जिम्मेदार ठहराया था और धनकड ने राज्यपालों के अधिकारों को सीमित करने पर आपत्ति जताई थी. अब राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी सुप्रीम कोर्ट के 8 अप्रैल के ऐतिहासिक फैसले पर कड़ी प्रतिक्रिया जताई है,.राष्ट्रपति ने इस फैसले को संवैधानिक मूल्यों और व्यवस्थाओं के विपरीत बताया और इसे संवैधानिक सीमाओं का अतिक्रमण करार दिया।

संविधान की अनुच्छेद 143(1) के तहत राष्ट्रपति ने सर्वोच्च न्यायालय से 14 संवैधानिक प्रश्नों पर राय मांगी है। यह प्रावधान बहुत कम उपयोग में आता है, लेकिन केंद्र सरकार और राष्ट्रपति ने इसे इसलिए चुना क्योंकि उन्हें लगता है कि समीक्षा याचिका उसी पीठ के समक्ष जाएगी जिसने मूल निर्णय दिया और सकारात्मक परिणाम की संभावना कम है।

सुप्रीम कोर्ट की जिस पीठ ने फैसला सुनाया था उसमें जस्टिस जे.बी. पारदीवाला और आर. महादेवन भी शामिल थे। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा था, 'राज्यपाल को किसी विधेयक पर तीन महीने के भीतर निर्णय लेना होगा। इस समय सीमा में या तो स्वीकृति दें या पुनर्विचार हेतु लौटा दें। यदि विधानसभा पुनः विधेयक पारित करती है तो राज्यपाल को एक महीने मे उसकी स्वीकृति देनी होगी। यदि कोई विधेयक राष्ट्रपति के पास भेजा गया हो तो राष्ट्रपति को भी तीन महीने के भीतर निर्णय लेना होगा।'

राष्ट्रपति नेश्रीमती द्रोपदी मुर्मू ने इस फैसले को संविधान की भावना के प्रतिकूल बताया और कहा कि अनुच्छेद 200 और 201 में ऐसा कोई समय-सीमा निर्धारित नहीं की गई है। राष्ट्रपति ने कहा, ह्वसंविधान में राष्ट्रपति या राज्यपाल के विवेकाधीन निर्णय के लिए किसी समय-सीमा का उल्लेख नहीं है। यह निर्णय संविधान के संघीय ढांचे, कानूनों की एकरूपता, राष्ट्र की सुरक्षा और शक्तियों के पृथक्करण जैसे बहुआयामी विचारों पर आधारित होते हैं ह्व

सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा था कि यदि विधेयक तय समय तक लंबित रहे तो उसे 'मंजूरी प्राप्त' माना जाएगा। राष्ट्रपति ने इस अवधारणा को सिरे से खारिज किया और कहा, ह्वमंजूर प्राप्त की अवधारणा संवैधानिक व्यवस्था के विरुद्ध है और राष्ट्रपति तथा राज्यपाल की शक्तियों को सीमित करती है ह्व उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि जब संविधान स्पष्ट रूप से राष्ट्रपति को किसी विधेयक पर निर्णय लेने का विवेकाधिकार देता है तो फिर सुप्रीम कोर्ट इस प्रक्रिया में हस्तक्षेप कैसे कर सकता. राष्ट्रपति ने सुप्रीम कोर्ट की अनुच्छेद 142 के तहत की गई व्याख्या और शक्तियों के प्रयोग पर भी सवाल उठाए हैं । इसके तहत न्यायालय को पूर्ण न्याय करने का अधिकार मिलता है। राष्ट्रपति ने कहा कि जहां संविधान या कानून में स्पष्ट व्यवस्था मौजूद है वहां धारा 142 का प्रयोग करना संवैधानिक असंतुलन पैदा कर सकता है।परोक्ष रुप से राष्ट्पति की चिंता पूरी भाजपाऔर संघ की चिंता है.

हमेशा मौन रहने वाली राष्ट्रपति मुर्मू ने एक और महत्वपूर्ण सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकारें संघीय मुद्दों पर अनुच्छेद 131 (केंद्र-राज्य विवाद) के बजाय अनुच्छेद 32 (नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा) का उपयोग क्यों कर रही हैं। उन्होंने कहा, ह्वराज्य सरकारें उन मुद्दों पर रिट याचिकाओं के माध्यम से सीधे सुप्रीम कोर्ट आ रही हैं। यह संविधान के अनुच्छेद 131 के प्रावधानों को कमजोर करता है ह्व

सवाल ये है कि सरकार एक एककर सभी संवैधानिक प्रमुखों का इस्तेमाल सुप्रीमकोर्ट से टकराने के लिए क्यों कर रही है? हमारी राष्ट्रपति मानें या न मानें हैं तो रबर स्टेंप ही. हां उन्हे हस्तक्षेप का अधिकार संविधान ने जरूर दिया है. उनके पास सरकारी विधेयकों को लौटाने का हक भी है. इस हक का इस्तेमाल दही- मिश्री खिलाने वाले हाथ कभी नहीं करते. ज्ञानी जैल सिंह जैसे राष्ट्रपति जरूर सुप्रीमकोर्ट से टकराने के बजाय सरकार से टकराने का साहस रखते थे. बहरहाल बात ये है कि क्या छह महीने के लिए देश के मुख्य न्यायाधीश बने जस्टिस बीआर गवई साहब राष्ट्रपति महोदया की आपत्तियों का निराकरण कर पाएंगे या फिर गेंद छह माह बाद आने वाले अपने उत्तराधिकारी के पाले में डालकर बच निकलेंगे?

राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू एक भद्र महिला हैं, वे धनकड की तरह बडबड नहीं करतीं. उनकी इसी विनम्रता का लाभ परोक्ष रूप से अपनी राजनीति के लिए करती रही है. देश में जितने भी विधानसभा चुनाव हाल के वर्षों में हुए सरकार ने चुनाव से पहले राष्ट्रपति को उन राज्यों के आदिवासी अंचलों में भेजा. मप्र, झारखंड के राष्ट्रपति के दौरे इसका प्रमाण हैं. हमें उम्मीद करना चाहिए कि हमारी राष्ट्रपति महोदया अपना राजनीतिक इस्तेमाल नहीं होने देंगी. वे सुप्रीमकोर्ट से भी टकराव मोल नहीं लेंगी.

@ राकेश अचल

राष्ट्रवाद के दौर में राहुल की जातिवादी राजनीति

अजय कुमार,वरिष्ठ पत्रकार

बिहार की राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर रही है, और इस दौर के केंद्र में इस बार राहुल गांधी हैं। जब पूरा देश 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद राष्ट्रवाद की राजनीति की ओर फिर से झुक गया, राहुल गांधी ने इसके ठीक उलट जातीय जनगणना और सामाजिक न्याय को अपनी राजनीतिक प्राथमिकता बना लिया है। यह वही बिहार है, जिसने कभी मंडल राजनीति की नींव रखी थी और जहां जातीय समीकरण अब भी हर चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। ऐसे में राहुल गांधी का यह फोकस न केवल एक रणनीतिक चुनावी दांव है, बल्कि यह संकेत भी है कि कांग्रेस अब केवल राष्ट्रीय मुद्दों पर नहीं, बल्कि क्षेत्रीय राजनीति की नब्ज पर भी हाथ रखना चाहती है।

बीते पांच महीनों में राहुल गांधी बिहार के चार दौरे कर चुके हैं और हर बार उन्होंने अलग-अलग जिलों को चुना है। यह चयन यूं ही नहीं है, बल्कि हर दौरे के पीछे सामाजिक समूहों की स्पष्ट गणना है। दरभंगा में उन्होंने दलित छात्रों से मिलने की कोशिश की, लेकिन प्रशासन ने उन्हें अंबेडकर छात्रावास में जाने की अनुमति नहीं दी। इसके बावजूद राहुल गांधी ने हार नहीं मानी। उन्होंने पदयात्रा शुरू की, पुलिस और प्रशासनिक अफसरों से बहस की और आखिरकार टाउन हॉल में शिक्षा न्याय संवाद के जरिए अपनी बात रखी। यह कोई साधारण राजनीतिक दौरा नहीं था, बल्कि प्रतीकों से भरा हुआ एक बड़ा संदेश था।

राहुल गांधी ने दरभंगा में छात्रों से कहा कि देश की 90 फीसदी आबादी के पास कोई अवसर नहीं है। उन्होंने पूछा कि उच्च नौकरशाही में आपके कितने लोग हैं? डॉक्टरी पेशे में आपके कितने लोग हैं? शिक्षा व्यवस्था में आपके कितने लोग हैं? और फिर खुद ही जवाब दिया ह्वजीरोह्व। उन्होंने आगे कहा कि मनरेगा की सूची में मजदूरों की संख्या देखिए, वह 90 प्रतिशत आबादी से ही भरी हुई है। लेकिन जब बात सत्ता, संपत्ति और ठेकेदारी की आती है, तो सारा पैसा केवल 8 से 10 प्रतिशत लोगों के पास पहुंच जाता है। राहुल गांधी ने इसे लोकतंत्र की सबसे बड़ी विफलता बताया और कहा कि जब तक सामाजिक रूप से वंचित वर्ग एकजुट नहीं होंगे, तब तक कोई बदलाव संभव नहीं है।

राहुल गांधी की यह बात बिहार जैसे राज्य में खास असर डाल सकती है, जहां जातीय आधार पर लोगों की पहचान और उनकी सामाजिक स्थिति गहराई से जुड़ी हुई है। खास बात यह भी है कि राहुल गांधी केवल भाषणों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उन्होंने दलित समाज के साथ वक्त बिताने और उनकी संस्कृति को समझने का प्रयास किया है। पटना के एक मॉल में उन्होंने दलित समाज के लोगों के साथ 'फुले' फिल्म देखी, जो सामाजिक क्रांति के अग्रदूत महात्मा फुले के जीवन पर आधारित है। यह एक संदेश था कि कांग्रेस अब दलित राजनीति को केवल चुनावी गणित नहीं, बल्कि वैचारिक जिम्मेदारी मान रही है।

हालांकि, राहुल गांधी का यह अभियान राजनीतिक टकराव से अछूता नहीं रहा। दरभंगा दौरे के दौरान पुलिस प्रशासन ने उन्हें छात्रावास में प्रवेश से रोका, जिसे कांग्रेस ने दलितों से संवाद रोकने की साजिश करार दिया। प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया पर इसे दलित विरोधी रवैया बताते हुए बिहार सरकार पर हमला किया और लिखा कि अगर एक नेता दलित छात्रों से मिलना चाहता है तो उसमें क्या गलत है? दूसरी ओर प्रशासन का कहना है कि भारत में कहीं भी छात्रावासों में राजनीतिक कार्यक्रम की अनुमति नहीं दी जाती, इसलिए उन्हें टाउन हॉल में अनुमति दी गई थी।

बिहार में कांग्रेस की यह सक्रियता महज बीजेपी के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह सहयोगी दल आरजेडी के लिए भी चुनौती बनती जा रही है। दरअसल, जिस प्रकार से राहुल गांधी सीधे तौर पर दलित-पिछड़े वर्ग को संबोधित कर रहे हैं, उससे आरजेडी का परंपरागत वोट बैंक खिसक सकता है। यही कारण है कि कुछ राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि बिहार में कांग्रेस अब आरजेडी को भी राजनीतिक रूप से प्रतिद्वंद्वी मानने लगी है। ठीक वैसे ही जैसे दिल्ली में कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोला, बिहार में आरजेडी पर कांग्रेस की निगाह टिकी है।

लोकसभा चुनाव 2024 में कांग्रेस और आरजेडी की स्थिति लगभग बराबर रही। लेकिन यह बराबरी कई समीकरणों पर आधारित थी जैसे पप्पू यादव का कांग्रेस के समर्थन में खड़ा होना। अब जब विधानसभा चुनाव नजदीक हैं, कांग्रेस शायद खुद को आरजेडी की छाया से निकालकर स्वतंत्र ताकत के रूप में स्थापित करना चाहती है। यही वजह है कि राहुल गांधी के कार्यक्रमों में जातिगत न्याय, सामाजिक प्रतिनिधित्व, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दे बार-बार सामने आते हैं, जो कि आरजेडी की पारंपरिक राजनीति का मूल आधार रहे हैं।

राहुल गांधी लगातार यह भी कहते रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार जातिगत जनगणना को लेकर दबाव में आई और उन्हें अंततः इसे स्वीकार करना पड़ा। कांग्रेस इसे अपनी जीत के रूप में प्रचारित कर रही है और राहुल गांधी बार-बार दोहरा रहे हैं कि जब तक समाज की सही तस्वीर हमारे पास नहीं होगी, तब तक न्याय संभव नहीं है। यही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि निजी संस्थानों में आरक्षण लागू किया जाना चाहिए और एससी-एसटी सब-प्लान का बजट पारदर्शी ढंग से लागू हो।

बीजेपी की रणनीति इस पूरे परिदृश्य में अलग है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रवाद की भावना को फिर से जगाने की कोशिश की जा रही है। इसका असर भी दिखा है, लेकिन बिहार में राहुल गांधी की जातीय राजनीति के सामने बीजेपी को भी अब जवाब देना पड़ रहा है। बीजेपी नेता बार-बार यह कह रहे हैं कि जातीय जनगणना का क्रेडिट कांग्रेस नहीं ले सकती, क्योंकि इसे लागू करने का फैसला तो एनडीए सरकार ने किया है। फिर भी राहुल गांधी लगातार इसे अपनी उपलब्धि के रूप में जनता के सामने रख रहे हैं।

यह दिलचस्प है कि जब राहुल गांधी को दरभंगा में छात्रों से मिलने से रोका गया, उन्होंने इसे उसी तरह से प्रचारित किया जैसे उन्होंने लोकसभा में बोलने न दिए जाने की घटनाओं को किया था। उनका यह तरीका विपक्ष को एक पीड़ित की तरह पेश करने का है, जो कि सत्ताधारी दल के अहंकार और तानाशाही के खिलाफ लड़ रहा है। यह छवि जनता के बीच एक भावनात्मक जुड़ाव पैदा करती है, खासकर तब जब मुद्दा दलित या पिछड़े वर्ग से जुड़ा हो।

कुल मिलाकर, राहुल गांधी ने बिहार चुनावों के लिए एक ऐसी पिच तैयार की है, जो अब तक बीजेपी और आरजेडी दोनों से अलग है। वह खुद को सामाजिक न्याय के एक नए प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं और इसमें उन्हें सीमित सफलता भी मिलती दिख रही है। अब यह देखना होगा कि बिहार की जनता इस नई कांग्रेस को कितनी गंभीरता से लेती है। क्या राहुल गांधी का जातीय न्याय का एजेंडा चुनाव में निर्णायक साबित होगा? क्या कांग्रेस आरजेडी को पछाड़कर प्रमुख विपक्ष बन पाएगी? और सबसे बड़ा सवाल, क्या राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस वह जनाधार फिर से हासिल कर पाएगी जो कभी उसका हुआ करता था?

बिहार की राजनीतिक बिसात पर बिछी यह चालें आने वाले दिनों में और रोचक मोड़ लेंगी, लेकिन इतना तय है कि राहुल गांधी ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि वह सिर्फ संसद तक सीमित नेता नहीं, बल्कि जमीनी संघर्ष करने वाले राजनीतिक खिलाड़ी भी हैं। उनकी यह कोशिश, चाहे सफल हो या असफल, भारतीय राजनीति में एक नई बहस को जन्म दे चुकी है एक ऐसी बहस जो सामाजिक न्याय को फिर से केंद्रीय मुद्दा बना रही है।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान की हालत – हम तो डूबे सनम तुम्हे भी ले डूबेंगे

अशोक भाटिया , मुंबई

हम तो डूबे सनम तुम्हे भी ले डूबेंगे कहावत पूरी तरह से पाकिस्तान व उसे मदद करने वाले दोस्तों पर लागू हो रही है । भारत द्वारा किए जा रहे ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान की तो हालत खराब हुई ही हुई अब उसकी मदद करने वाले देशों की भी हालत खराब हो रही है । ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन और तुर्की ने किस तरह पाकिस्तान का साथ दिया, इसे पूरी दुनिया ने देख लिया है। तुर्की और चीन निर्मित ड्रोनों का भरपूर इस्तेमाल पाकिस्तान ने भारत पर हमले के लिए किया लेकिन भारत के एयर डिफेंस सिस्टम ने उन सभी ड्रोनों और मिसाइलों की हवा निकाल दी। अभी भी पाकिस्तान द्वारा दागी गईं चीनी और तुर्की के मिसाइलों और ड्रोनों के अवशेष भारत में मौजूद हैं। हालांकि, भारत-पाकिस्तान के बीच सीजफायर हो गया है लेकिन चीन और तुर्की के अलावा एक और देश अजरबैजान का चेहरा बेनकाब हो गया है, जिसने भाईजान बनकर पाकिस्तान का समर्थन किया था। सूत्रों के मुताबिक, पाकिस्तान ने भारत पर हमले के लिए तुर्की के 350 से ज्यादा ड्रोन का इस्तेमाल किया। सवाल यह उठता है कि क्या तुर्की भी पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत से लड़ाई लड़ रहा था? तुर्की के सैन्यकर्मी भारत के खिलाफ ड्रोन हमले कराने के लिए पाकिस्तान में मौजूद रहे यानी ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत पर ड्रोन हमले कराने में तुर्की के सलाहकारों ने पाकिस्तानी सेना की मदद की। सोनगार ड्रोन्स हथियार ले जाने में सक्षम यूएवी यानी मानव रहित हवाई वाहन हैं जिनके पास टारगेट को पहचानने और उसे नष्ट करने की विशेष क्षमता होती है। ये तुर्की का पहला राष्ट्रीय हथियारबंद ड्रोन सिस्टम है जिसे क्रॉस बॉर्डर सैन्य अभियानों में इस्तेमाल किया जाता है। इसकी रेंज 5 से 10 किलोमीटर होती है। इसमें कैमरे और ऑटोमैटिक मशीनगन लगी होती है। इसे 2020 में पहली बार तुर्की की सशस्त्र सेना में शामिल किया गया था। पाकिस्तान की तरफ से कामिकाजे ड्रोन भी भारत के खिलाफ इस्तेमाल किए गए। ऐसे ही एक ड्रोन का मलबा नौशेरा में मिला। इस ड्रोन से रिहायशी इलाकों को निशाना बनाया गया था। लेकिन भारत के आकाश जैसे मेड इन इंडिया प्लैटफॉर्म के आगे इनकी एक न चली। सूत्रों से आई इस खबर को इस बात से पुख्ता किया जा सकता है कि तुर्की के दो ड्रोन ऑपरेटरों का पाकिस्तान में भारत के हमले में मारे जाने का दावा है, जिसे पाकिस्तान छिपा ले गया। तुर्की की तरफ से पाकिस्तान को दी गई मदद पर अब भारत की नजर रही । बड़ी बात ये है कि इन देशों की अर्थव्यवस्था में भारत का बड़ा योगदान है। चीन जहां भारत में अपने सस्ते माल बेचकर बड़ी कमाई करता है, वहीं तुर्की और अजरबैजान भारतीय पर्यटकों से गाढ़ी कमाई करता है। यानी ये देश कमाई भारत से करते हैं लेकिन उसका इस्तेमाल भारत के खिलाफ कर रहे हैं। ऐसे में भारतीयों ने अब इनका विरोध करना शुरू कर दिया है। सोशल मीडिया पर भी तुर्की और अजरबैजान के बहिष्कार का आह्वान किया जा रहा है। व्यापारियों के संगठन, कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (उअक्ळ) ने भी भारतीय व्यापारियों और नागरिकों से मौजूदा शत्रुता के बीच पाकिस्तान का खुला समर्थन करने के जवाब में तुर्की और अजरबैजान की यात्रा का पूरी तरह से बहिष्कार करने का आह्वान किया है। बता दें कि उअक्ळ लंबे समय से चीनी उत्पादों के बहिष्कार के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान चला रहा है, जिसका काफी प्रभाव पड़ा है, और अब इसका इरादा इस आंदोलन को तुर्की और अजरबैजान तक बढ़ाने का है। संगठन इस अभियान को तेज करने के लिए ट्रैवल और टूर ऑपरेटरों और अन्य संबंधित हितधारकों के साथ सहयोग करेगा।उअक्ळ के महासचिव और चांदनी चौक से सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने बुधवार को यह अपील की और इस बात पर जोर दिया कि पाकिस्तान के भाईजान तुर्की और अजरबैजान की यात्रा का बहिष्कार करने से इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं, खासकर उनके पर्यटन क्षेत्र पर काफी असर पड़ सकता है।अब तो तुर्की से कारोबार बंद करने और उसके सामानों के बहिष्कार की मांग भी देशभर से उठनी शुरू हो गई है। ऐसे में यह सवाल सभी के मन में उठता है कि आखिर हमारा तुर्की के साथ कितना बड़ा कारोबार है। दोनों देश एक-दूसरे से क्या खरीदते और बेचते हैं। भारत सरकार के ट्रेड डाटा को खंगालने से पता चलता है कि भारत और तुर्की एक दूसरे से कई जरूरी सामान खरीदते हैं। सबसे चौंकाने वाली बात तो यह है कि पाकिस्तान ही नहीं, भारत भी तुर्की से हथियारों की खरीद करता है। इसके अलावा दोनों देश केमिकल, इलेक्ट्रॉनिक सामान और कपड़ों का भी आयात-निर्यात करते हैं। तुर्की के पर्यटन में भी भारत की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। साल 2024 में तुर्की जाने वाले पर्यटकों में दूसरी सबसे ज्यादा हिस्सेदारी भारतीयों की रही है।भारत के व्यापार आंकड़े देखें तो पता चलता है कि अप्रैल 2024 से फरवरी 2025 तक भारत ने तुर्की को 5।2 अरब डॉलर (करीब 45 हजार करोड़ रुपये) का सामान निर्यात किया है। इससे पहले 2023-24 में यह आंकड़ा 6।65 अरब डॉलर का रहा था। हालांकि, निर्यात का यह आंकड़ा भारत के कुल एक्सपोर्ट का महज 1।5 फीसदी ही है। आयात की बात करें तो तुर्की से भारत ने अप्रैल, 2024 से फरवरी, 2025 तक 2।84 अरब डॉलर (करीब 24।4 हजार करोड़ रुपये) का सामान आयात किया था, जो भारत के कुल आयात का महज 0।5 फीसदी हिस्सा है।

तुर्की सबसे ज्यादा खरीदारी कपड़ों, अपैरल, सूती धागे, इंजीनियरिंग सामान, केमिकल और इलेक्ट्रॉनिक सामानों की करता है। सबसे ज्यादा डिमांड भारतीय सूती धागे, कपड़े और रेडिमेड कपड़ों की रहती है। इसके अलावा खनिज तेल और ईंधन की भी तुर्की में बड़ी डिमांड है। एल्युमीनियम प्रोडक्ट, ऑटो कंपोनेंट और इलेक्ट्रिकल मशीनरी का ज्यादातर निर्यात भारत ही तुर्की को करता है। एयरक्राफ्ट और उसके पार्ट्स, टेलीकॉम उपकरण, इलेक्ट्रिक मशीनरी और उसके उपकरण, कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन का भी तुर्की खूब आयात करता है। खाने-पीने के सामानों में खनिज तेल, चावल, चायपत्ती, कॉफी और मसालों के लिए तुर्की हमारे ऊपर ही निर्भर है। प्लास्टिक, रबर और दवाओं का भी तुर्की बड़ा खरीदार है। भारत का सबसे ज्यादा आयात मार्बल का होता है। इसके अलावा कुल आयात में करीब 86 करोड़ रुपये के सेब शामिल होते हैं। भारत सोना, सब्जियां, चूना और सीमेंट के लिए भी तुर्की से कारोबार करता है। 2023-24 में भारत ने 1।81 करोड़ डॉलर (करीब 155 करोड़ रुपये) का खनिज तेल आयात किया था। इसके अलावा केमिकल, मोती, आयरन और स्टील की खरीदारी भी हम तुर्की से करते हैं। तुर्की द्वारा पाकिस्तान का खुलेआम समर्थन करने के बाद देशभर में 'बॉयकॉट तुर्की' अभियान ने जोर पकड़ लिया है। महाराष्ट्र के पुणे से लेकर राजस्थान के उदयपुर तक व्यापारियों ने तुर्की से आयातित वस्तुओं का बहिष्कार कर तुर्की को आर्थिक मोर्चे पर जवाब देने का ऐलान कर दिया है। एजेंसी के अनुसार, महाराष्ट्र के पुणे में व्यापारियों ने तुर्की से आयात होने वाले सेबों की बिक्री पूरी तरह बंद कर दी है।

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक रमन कुमार झा द्वारा सांई प्रिटिंग प्रेस बी-42 सेक्टर 07 नोएडा से मुद्रित कराकर नियर दुर्गा पब्लिक स्कूल श्याम लाल कॉलोनी बरौला सेक्टर 49 नोएडा 201304, गौतमबुद्धनगर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
संपर्क 9891706853, संपादक- रमन कुमार झा, समस्त विवादों का निपटारा गौतमबुद्धनगर न्यायालय मे होगा। Website: https://samajjagran.in/ Email: vatankiawaz@gmail.com UPHIN/2021/84200

नारद जी से भी बड़ा नारायण का भक्त कौन निकला ?

पंडित राजेश अग्निहोत्री
भागवताचार्य के प्रवचन का अंश।

कल देवर्षि नारद जी पर चर्चा चल रही थी। अच्छा बताओ किसी को अपनी निंदा सुनना अच्छा लगता है? कोई आपसे यह पूछता है कि हमारे अंदर की कमी बताओ ? यदि आपने कभी बता दी तो आप उसके मन से उतर जाओगे। परन्तु वास्तविक मित्र वही होता है जो अपने मित्र को गलत रास्ते पर जाने से रोके,उसकी कमी को उजागर करे। लेकिन समाज के सामने नहीं, बल्कि अपने मित्र के सामने ही।जो व्यक्ति अपने मित्र की हर बात पर हां में हां करता है तो वह मित्र नहीं शत्रु है। प्रशंसा व्यक्ति के सामने नहीं पीठ पीछे करनी चाहिए। प्रशंसा सुनना हर व्यक्ति चाहता है और यही बात नारद जी के मन में आ गई।जैसा कि आप जानते हैं कि नारद जी हमेशा नारायण का नाम सुमिरन करते रहते हैं तो अपनी प्रशंसा सुनने के लिए नारद जी भगवान से पूछ बैठे कि प्रभु आपका सबसे बड़ा भक्त कौन है? नारद जी ने यह प्रश्न इसलिए किया क्योंकि वह सोच रहे थे कि भगवान उनका ही नाम बताएंगे कि आप ही सबसे बड़े भक्त हो परन्तु भगवान ने तो कह दिया कि अमुक गांव में अमुक नाम का किसान है वह मेरा सबसे बड़ा भक्त है ।यह सुनकर नारद जी मन ही मन में तिलमिला गये और उस किसान के यहां पहुंच गए। किसान ने नारद जी का आतिथ्य सत्कार किया। नारद जी ने देखा कि चौबीस घंटे में किसान ने केवल आठ बार नाम लिया भगवान का।मन में सोचते हुए भगवान के पास पहुंचे कि आठ बार नाम लेने वाला किसान मुझसे बड़ा भक्त कैसे हो गया। भगवान नारायण तो पल पल की हम सबके मन की खबर रखते हैं नारद जी के मन की शंका को मिटाने के लिए उन्होंने पहले से ही तैयारी कर रखी थी। नारद जी से पूंछा आप पृथ्वी की परिक्रमा लगाकर कितनी देर में आ जाओगे? नारद जी ने कहा प्रभु जी

दो घंटे में। नारायण भगवान ने नारद जी को तेल से पूरी भरी हुई एक कटोरी देते हुए कहा जाओ परिक्रमा लगाकर आओ लेकिन ध्यान रहे कि कटोरी का तेल एक बूंद भी नीचे न गिरे।नारद जी चल दिए बड़ी सावधानी से जा रहे थे कहीं तेल फैल न जाए। परिक्रमा लगाने में चौबीस घंटे से भी अधिक लग गये। नारद जी जब वापस आये तो नारायण भगवान ने पूंछा कि आपने इन चौबीस घंटों में मेरा नाम कितनी बार लिया।नारद जी बोले कि एक बार भी नहीं, क्योंकि मेरा ध्यान तो कटोरी के तेल पर केन्द्रित था। आपने इतनी बड़ी जिम्मेदारी दे रखी थी। नारायण भगवान ने कहा कि जिस किसान के यहां आप गये थे उसकी एक पत्नी,चार बच्चे,चार बहुएं,आठ जानवर थे।और सबकी जिम्मेदारी उस किसान के कन्धों पर थी। फिर भी वह चौबीस घंटे में आठ बार मेरा नाम लेता है आप तो एक जिम्मेदारी में ही नाम लेना भूल गए। यही आपके प्रश्न का उत्तर है।अब आप स्वतः अनुमान लगा लो कि सबसे बड़ा भक्त कौन है।नारद जी ने नारायण भगवान को अपनी भूल के लिए प्रणाम किया।सबाल यह नहीं है कि आप कितनी देर पूजा करते हो , चाहे थोडी देर करो परन्तु मन में उस परमात्मा का मनन चिंतन अवश्य करते रहें। चिंता नहीं चिंतन की आवश्यकता है।कल फिर चर्चा किसी अन्य विषय पर करते हैं।

पगड़ी पहनाने की सियासत

-राजेश बैरागी-

सम्मान की प्रतीक पगड़ी अब धंधे का उपकरण बन गई है।गौतमबुद्धनगर जैसे औद्योगिक जनपद में खरपतवार की भांति उगते जा रहे तथाकथित नेताओं के एक हाथ में आंदोलन के झंडे का डंडा रहता है और दूसरे हाथ में पगड़ी का खुला कपड़ा। पहचान स्थापित करने के लिए आंदोलन का झंडा काम आता है और धंधा चलाने के लिए पगड़ी का कपड़ा। जनपद में तेजी से विकास पथ पर अग्रसर एक प्राधिकरण के शीर्ष अधिकारी का कार्यालय सामान्य गति से चल रहा था कि अचानक बाहर सामूहिक शोर सुनाई पड़ा। इससे पहले कि शोर की तह तक जाया जाता,शोर कार्यालय में प्रवेश कर गया। एक तथाकथित किसान नेता अपने कुछ स्थाई समर्थकों सहित शीर्ष अधिकारी के कक्ष में प्रवेश कर गए। उनके हाथ में पगड़ी का खुला कपड़ा और उनके समर्थकों के हाथ में लड्डुओं का एक डिब्बा चमक रहा था। तथाकथित किसान नेता ने अधिकारी की शान में कसीदे पढ़े और निर्लज्जता के साथ आगे बढ़कर अधिकारी को पगड़ी बांध दी। अधिकारी सहज सरल प्रकृति के हैं। उनकी कार्यशैली सभी को साथ लेकर चलने की है।उनका कक्ष पूरे समय सभी के स्वागत में खुला रहता है। यहां यह बताना आवश्यक है कि पहले दिन प्राधिकरण क्षेत्र में एक राष्ट्रीय महत्व की औद्योगिक इकाई की स्थापना को मंजूरी मिली थी। निस्संदेह यह क्षेत्र के विकास और गौरव की बात थी। इसका बड़ा श्रेय अधिकारी और उनकी टीम को मिलना ही चाहिए। तथाकथित किसान नेता ऐसे अवसरों पर गिद्ध दृष्टि रखते हैं। अवसर मिला नहीं कि पगड़ी हाजिर। अधिकारी इस प्रकार

के पगड़ी पहनने से कोई लगाव नहीं रखते। उन्हें अपने कर्तव्य की चिंता रहती है।लंबा प्रशासनिक अनुभव है परंतु ऐसे पगड़ी पहनाने वालों की निर्लज्जता अनुभव पर भारी पड़ती है।हालांकि एक जनपद के ही एक अन्य प्राधिकरण के प्रमुख इस प्रकार के महिमा मंडन और पगड़ी पहनने जैसे नाटक से सख्त नाइत्तफाकी रखते हैं और उनकी कार्यशैली भी प्रशंसा पाती है।आम जनमानस में टोपी पहनाने की कहावत चलती है। टोपी विदा हो चुकी है, पगड़ी ने उसके स्थान पर कब्जा कर लिया है।न चाहते हुए भी पगड़ी पहनने वाला अधिकारी जानता है कि पगड़ी की कितनी और कितने बार कीमत चुकानी पड़ सकती है। और पगड़ी पहनाने वाला?वह तो पगड़ी के कपड़े में किए गए निवेश का उधार अधिकारी के सिर पर रखकर गया ही है।(नेक दृष्टि)

एक थे #तुर्की के अपने समय के बड़े #नेता. नाम #मुस्तफा_कमाल_अतातुर्क. जिन्ना भी इनको बहुत मानते थे. ये मुस्तफा साहब कभी भी भारत नहीं आये. लेकिन क्या आप जानते हैं कि इन्हीं मुस्तफा साहब के नाम से #भारत की राजधानी #दिल्ली के बीचोंबीच एक #सड़क भी है.
वही तुर्की जो पिछले लम्बे समय से #भारत_विरोधी_गतिविधियों में लगातार लगा हुआ है, कश्मीर मुद्दे पर हमेशा भारत सरकार के विरोध में खड़ा रहा है, और फिलहाल हमारे दुश्मन देश पाकिस्तान का (चीन के अलावा) दूसरा बाप बना हुआ है. वही तुर्की जो कुछ वर्ष से भारत के विरोध में एक मुस्लिम देशों का संगठन बनाने की लगातार कोशिश कर रहा है.

दिव्यांगजनों को कानूनी संरक्षकता प्रदान करने हेतु लोकल लेवल कमेटी की बैठक हुई संपन्न

जिलाधिकारी ने 20 संरक्षकता प्रमाण पत्र निर्गत करने हेतु सहमति की व्यक्त

पोर्टल पर अवशेष आवेदन पत्रों का यथाशीघ्र किया जाए निस्तारण : डीएम

गौतम बुद्ध नगर 16 मई 2025 सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा मानसिक रूप से दिव्यांगजनों को उनके कानूनी संरक्षकता प्रमाण पत्र प्रदान किये जाने के हेतु 4 प्रकार के दिव्यांगजनों को नेशनल ट्रस्ट एक्ट 1999 के अन्तर्गत प्रत्येक जनपद में अ४३२, ऊ१ी१' ढ'२८, टील्ल३' फी३१ी३ङ्खल्ल ल्ली ट४'-३स्र'ी ऊ्रु'३ी२ दिव्यांगता से ग्रसित दिव्यांगजनों के कानूनी संरक्षकता प्रदान किये जाने के उद्देश्य से आज डीएम मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में लोकल लेवल कमेटी की बैठक का आयोजन किया गया।

जिलाधिकारी तथा कमेटी के अन्य सदस्यों के समक्ष संरक्षकता प्रमाण पत्र निर्गत किये जाने हेतु 20 आवेदन प्रस्तुत किये गये, जिस पर विचार उपरांत कमेटी द्वारा कानूनी संरक्षकता प्रदान किये जाने हेतु दिव्यांगजनो के अभिभावक को संरक्षकता प्रमाण पत्र निर्गत किये जाने हेतु सहमति व्यक्त की गयी। जिलाधिकारी ने पोर्टल पर अवशेष आवेदन पत्रो का निस्तारण किये जाने हेतु निर्देशित किया।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विद्यानाथ शुक्ला, जिला दिव्यांगजन शक्तिकरण अधिकारी आशीष कुमार सिंह, जिला शासकीय अधिवक्ता, मुख्य चिकित्साधिकारी तथा स्वैच्छक संस्था के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सौजन्य से सूचना विभाग गौतम बुद्ध नगर।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में ग्राम योजना विकास प्रक्रिया को लेकर नीति निर्धारक एवं तकनीकी समिति की बैठक हुई संपन्न

गौतम बुद्ध नगर, 16 मई 2025 : जनपद गौतम बुद्ध नगर के ग्राम कलौंदा में ग्राम पंचायत स्थानिक विकास योजना को क्रियान्वित कराने के उद्देश्य से डीएम मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में नीति निर्धारक समिति एवं तकनीकी समिति की बैठक संपन्न हुई।

बैठक में पंचायती राज मंत्रालय द्वारा एक प्रस्तुति कलौंदो गाँव ग्राम पंचायत स्थानिक विकास योजना पर एपीजे स्कूल का आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग ग्रेटर नोएडा के प्रोफेसर आनंद खत्री और आर्किटेक्ट बिनीता बोस (एपीजे स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग) द्वारा दी गई, जोकि गाँवों और शहरी गाँवों के विशेषज्ञ हैं। यह कार्यक्रम मिनिस्ट्री ऑफ पंचायती राज मिनिस्टर एवं इस अलोक प्रेम नागर के मार्गदर्शन में चल रहा है। उन्होंने कलौंदा ग्राम प्रधान राजू नंबरदार व सिकंदर हयात, शकील और गौतम बुद्ध नगर के अन्य ग्रामीणों को ग्राम

योजना विकास प्रक्रिया में पारिस्थितिकी के महत्व के बारे में बताया।

एपीजे स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग ग्रेटर नोएडा के प्रोफेसर ने जिलाधिकारी को अवगत कराया की गौतम बुद्ध नगर के कलौंदा गांव को पंचायती राज मंत्रालय (टङ्कढफ) द्वारा एक आदर्श गाँव के रूप में विकसित किया जा रहा है। यदि हम गाँवों को बचाएँगे, तो हम अपने शहरों को भी बचा पाएँगे। भारत में शहरों के मास्टर प्लान की तरह एक गाँव मास्टर प्लान तैयार किया जा रहा है, जो जिला मजिस्ट्रेट द्वारा गठित एक तकनीकी और नीति समिति के मार्गदर्शन में बन रहा है। उन्होंने बताया कि यह मास्टर प्लान एक सैटेलाइट-आधारित योजना है, जिसे एन.आर.एस.सी. और आर.आर.एस.सी का समर्थन प्राप्त है। यह योजना भारत में टङ्कढफद्वारा 2025 में लिए गए 34 अन्य गाँवों में से एक है। ए.पी.जे. स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग, एनआईआईटी, एसपीए और आईआईटी जैसे प्रमुख संस्थानों के साथ मिलकर देश में गाँवों की वृद्धि की योजना और वास्तुकला सुधारने का कार्य कर रहा है। गौतम बुद्ध नगर में कई अर्बन विलेजेस हैं जो शहर की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं। जिला मजिस्ट्रेट के अधीन एक समिति का गठन किया जा रहा है, जो उच्च शिक्षण संस्थानों की क्षमता निर्माण (कैपेसिटी बिल्डिंग) पर कार्य करेगी और शहरी अर्बन विलेजेस एवं गावों पर काम करेगी। एपीजे स्कूल के रिसर्च सेल प्रमुख प्रो. आनंद इस कार्य की रूपरेखा विकसित करेंगे।

जिलाधिकारी ने मुख्य विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि इस संबंध में जिला पंचायत राज अधिकारी, ग्राम प्रधान व एपीजे स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग ग्रेटर नोएडा के प्रोफेसर के साथ मिलकर ग्राम कलौंदा का स्थलीय निरीक्षण कर लिया जाए और किस प्रकार से ग्राम को एक मॉडल ग्राम के रूप में विकसित किया जाता है इस पर अपने कार्य योजना तैयार करें। इस बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विद्यानाथ शुक्ला, जिला पंचायत राज अधिकारी वीरेंद्र सिंह, अन्य संबंधित अधिकारियों तथा ग्राम प्रधानों ने प्रतिभाग।

अर्पित सेवा संस्थान द्वारा लोक विमर्श कार्यक्रम का आयोजन किया गया

पंचायत जनपद बहराइच के विकास खण्ड - तेजवापुर अन्तर्गत ग्राम पंचायत जब्दी में उत्तर प्रदेश पंचायतीराज अधिनियम पर किये जा रहें शोध कार्य में लोकमत प्राप्त करने हेतु ग्राम पंचायत लोक विर्मश का आयोजन अर्पित सेवा संस्थान श्रावस्ती द्वारा आयोजित किया गया। यह शोध कार्य इंडिया पंचायत फाउंडेशन एवं पंच परमेश्वर विद्यापीठ द्वारा किया जा रहा है। विमर्श में सभी प्रतिभागियों ने गहनता से चर्चा कर अपने विचार व्यक्त किए। पंचायत व्यवस्था से सम्बन्धित इस शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के अधिनियम के गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन के साथ साथ देश के अन्य प्रमुख 9 राज्यों (बिहार, उत्तराखंड, केरल, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, झारखंड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, तथा जम्मू-कश्मीर) के अधिनियम के प्रावधानों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध कार्य को और अधिक व्यापक तथा प्रमाणिक बनाने के लिए पंचायत प्रतिनिधियों सामाजिक संगठनों तथा समाज के प्रबुद्ध नागरिकों के साथ स्थानीय स्तर पर लोक विमर्श का आयोजन किया जा गया।
विमर्श में उपस्थित संस्था के सचिव अवधेश कुमार शर्मा ने बताया कि इस विमर्श के माध्यम से हमारा उद्देश्य ग्राम पंचायत सदस्यों को ग्राम सभा के सम्मानित नागरिकों को, प्रतिनिधियों को विभिन्न राज्यों में ग्राम पंचायत के कार्य एवं व्यवहार से सम्बन्धित प्रावधानों और नीतिगत सिफारिशों के बारे में जानकारी प्रदान करना एवं ग्राम पंचायत से सम्बन्धित विषयों पर सामूहिक चर्चा के द्वारा लोकमत तैयार करना है। इस अवसर पर श्री बच्छराज,श्री रामशंकर श्रीमती सुशीला यादव,श्री सुन्दर श्रीमती नीलम देवी आदि मौजूद रहे।

बिना अनुमति भूजल दोहन पर 02 से 05 लाख जुमार्ना या कारावास संभव

जिलाधिकारी ने भूगर्भ जल संरक्षण को लेकर एनओसी एवं पंजीकरण के लिए दिये सख्त निर्देश

भूजल उपयोगकताओं के लिए एनओसी व पंजीकरण कराना अनिवार्य

गौतम बुद्ध नगर 16 मई 2025 : जिलाधिकारी/अध्यक्ष जिला भूगर्भ जल प्रबंधन परिषद् जनपद गौतमबुद्धनगर मनीष कुमार वर्मा ने बताया कि उत्तर प्रदेश भूगर्भ जल (प्रबंधन एवं विनियम) अधिनियम-2019 के अंतर्गत राज्य में भूमिगत जल संरक्षित नियंत्रित करने एवं भूमिगत जल का सतत प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए उसे दोनों परिमाणात्मक और गुणात्मक स्थायित्व प्रदान करने के लिए विशेष रूप से भूजल संकटग्रस्त ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में भूजल संरक्षण एवं संवर्धन पर जोर दिया गया है एवं औद्योगिक, वाणिज्यिक, अवसंरचनात्मक और सामूहिक उपयोगकताओं को भूजल निष्कर्षण हेतु अनापत्ति प्रमाण-पत्र (एनओसी) पंजीकरण का प्रावधान किया गया है, इसके अतिरिक्त भूगर्भ कूप निर्माण की समस्त ड्रिलिंग संस्थाओं का पंजीकरण अनिवार्य किया गया है। जनपद के समस्त औद्योगिक (इंडस्ट्रियल), वाणिज्यिक (कमर्शियल), अवसंरचनात्मक परियोजनाओं (इन्फ्रास्ट्रक्चरल), सामूहिक उपयोगकताओं (बुल्क यूजर) यथा आर०ओ० प्लांट, कार वाशिंग सेंटर, होटलों, लाजों, रिसोर्टो, निजी चिकित्सालयों, परिचर्चा गृहों, कारोबार प्रक्षेत्रों, माल्स, वाटर पार्क इत्यादि सहित मौजूदा एवं प्रस्तावित भूजल उपयोगकर्ता को सचेत किया जाता है कि उत्तर प्रदेश भूगर्भ जल (प्रबंधन एवं विनियम) अधिनियम-2019 की धारा 39 के अंतर्गत बिना पंजीकरण/अनापत्ति प्रमाण-पत्र (एनओसी) के भूगर्भ जल दोहन करने हेतु दोषी पाए गए व्यक्ति/समूह/ संस्था को 02 से 05 लाख रुपये तक का जुमार्ना अथवा 06 माह से 01 वर्ष तक का कारावास अथवा दोनों दण्ड निर्धारित किये गए हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि उपरोक्त श्रेणी के सभी भूगर्भ जल उपयोगकर्ता तत्काल भूगर्भ जल विभाग के वेब पोर्टल https://upgwdonline.in पर दिशा निर्देश देखते हुए निवेश मित्र के माध्यम से सभी वांछित तकनीकी रिपोर्ट व शपथपत्रों सहित ऑनलाइन आवेदन कर पंजीकरण/अनापत्ति प्रमाण-पत्र प्राप्त करना सुनिश्चित करें।

इसके अतिरिक्त आवेदन से सम्बंधित किसी भी अन्य जानकारी के लिए हाइड्रोलॉजिस्ट (कार्यालय अधिशासी अभियंता भूगर्भ जल विभाग खण्ड गौतमबुद्धनगर अए-18 अंसल गोल्फ लिंक-2 तिलपता चौक सूरजपुर ग्रेटर नोएडा) नोडल अधिकारी जिला भूगर्भ जल प्रबंधन परिषद जनपद गौतमबुद्धनगर को ईमेल ankurai3005@gmail.comपर संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि यदि किसी व्यक्ति/समूह/संस्था/फर्म द्वारा भूगर्भ जल निष्कर्षण हेतु अनापत्ति प्रमाण-पत्र रजिस्ट्रेशन हेतु आवेदन नहीं किया जाता है तो उसके उपरांत अवैध रूप से भूजल निष्कर्षण हेतु अधिनियम के अनुसार उसके विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाही की जाएगी। सौजन्य से सूचना विभाग गौतमबुद्धनगर।

जनपद में घटित विभिन्न अग्निकांड की घटनाओं को न्यून एवं उसके प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से प्रशासनिक अधिकारी एक्शन में

नगर मजिस्ट्रेट/अध्यक्ष जांच समिति के नेतृत्व में फायर सर्विस से संबंधित अधिकारियों द्वारा मैसर्स फेनो ऑर्गेनिक प्राइवेट लिमिटेड ई 39 साइट बी ग्रेटर नोएडा का किया भौतिक सत्यापन

गौतम बुद्ध नगर, 16 मई 2025 जनपद में घटित विभिन्न आपदाओं को रोकने तथा उनके प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी गौतम बुद्ध नगर मनीष कुमार वर्मा के निर्देशों के क्रम में प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा निरंतर प्रयास सुनिश्चित किए जा रहे हैं।

जिलाधिकारी द्वारा जनपद में अग्निकांड की घटनाओं को न्यून करने एवं उनके प्रभाव को कम करने के लिए नगर मजिस्ट्रेट नोएडा विवेकानंद मिश्र की अध्यक्षता एवं मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रदीप चौबे की सह-अध्यक्षता में एक संयुक्त टीम का गठन किया गया है। इस टीम में आपदा प्रबंधन विभाग और कारखाना निरीक्षण विभाग को भी सम्मिलित किया गया है।

प्रोजेक्ट अलंकार योजना के तहत राजकीय/अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के मरम्मत एवं निर्माण कार्यो की समीक्षा बैठक हुई संपन्न

कार्यदाई संस्था स्कूलों में कायाकल्प एवं निर्माण कार्यो को तय समय सीमा में गुणवत्ता के साथ करें पूरा

गौतम बुद्ध नगर, 16 मई 2025: जनपद गौतम बुद्ध नगर के समस्त राजकीय एवं अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को बेहतर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में आज प्रोजेक्ट अलंकार योजना के तहत राजकीय एवं अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में करायें जा रहे कायाकल्प एवं निर्माण कार्यों कि समीक्षा बैठक संपन्न हुई।

जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर धर्मवीर सिंह ने जिलाधिकारी को वित्तीय वर्ष 2021-22, 2022-23, 2023-24, 2024-25 व 2025-26 में प्रोजेक्ट अलंकार योजना के तहत विद्यालयों में दीवार छत, फर्श खिड़की दरवाजे की मरम्मत, विद्यालय की रंगाई पुताई, शौचालय पेयजल से संबंधित मरम्मत कार्य एवं अतिरिक्त कक्ष कक्षाएं, प्रयोगशाला, मल्टीपरपज हॉल, पुस्तकालय कक्ष व खेल के मैदान के निर्माण के संबंध में वर्तमान तक की गई प्रगति से अवगत कराया।

जिलाधिकारी ने कायाकल्प एवं निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए कार्यदाई संस्था लोक निर्माण विभाग, यूपीपीसीएल तथा आर ई डी के अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रोजेक्ट अलंकार योजना के तहत विद्यालयों में कायाकल्प एवं निर्माण से संबंधित जो कार्य आप लोगों को सौंपे गए हैं, उनको निर्धारित समय अवधि में पूर्ण गुणवत्ता के साथ पूर्ण करना सुनिश्चित करें। साथ ही विद्यालय निरीक्षक को निर्देश दिए कि उपरोक्त कार्य हेतु शासन से यथाशीघ्र शेष धनराशि को भी अवमुक्त करने हेतु पत्र प्रेषित किया जाए, ताकि सभी कायाकल्प एवं निर्माण कार्यों को निर्धारित समय अवधि में गुणवत्ता के साथ पूर्ण कराया जा सके एवं स्कूलों में पठन-पाठन हेतु सुदृढ़ मूलभूत सुविधाएं बच्चों को उपलब्ध हो सके। साथ ही विद्यालय प्रबंधकों को निर्देश दिए कि प्रोजेक्ट अलंकार योजना के तहत विद्यालय में करायें जा रहे कायाकल्प एवं निर्माण कार्यों की वर्तमान तक की फोटोग्राफी एवं वीडियो तैयार कर यथाशीघ्र जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में उपलब्ध करायें। उन्होंने कार्यदाई संस्था के अधिकारियों को निर्देश दिए कि उनके द्वारा भी समय-समय पर विद्यालयों में करायें जा रहे मरम्मत एवं निर्माण कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया जाए।

जिलाधिकारी ने बैठक में उपस्थित विद्यालयों के प्रधानाचार्यो से यह भी कहा कि स्कूलों में पठन-पाठन की गुणवत्ता पर भी विशेष फोकस रखा जाए। इसके लिए विद्यालय निरीक्षक को निर्देश दिए कि विद्यालयों की शिक्षा गुणवत्ता की समीक्षा हेतु बैठक निर्धारित कराई जाए एवं उसमें सभी विद्यालय अपने-अपने स्कूलों शिक्षा गुणवत्ता को लेकर की गई गतिविधियों के संबंध में पावर प्रजेंटेशन तैयार करते हुए बैठक में उपस्थित हो।

इस महत्वपूर्ण बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विद्यानाथ शुक्ला, जिला विद्यालय निरीक्षक डॉक्टर धर्मवीर सिंह, लोक निर्माण विभाग, यूपीपीसीएल, आर ई डी विभाग के अधिकारीगण तथा विद्यालयों के प्रधानाचार्यगण उपस्थित रहे।
सौजन्य से सूचना विभाग बुद्ध नगर से।

स्वच्छ भारत मिशन फेज 2 (ग्रामीण) के तहत जिला स्वच्छता समिति की बैठक हुई संपन्न

बायोगैस प्लांट एवं प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट का कराया जाए संचालन

व्यक्तिगत एवं सामुदायिक शौचालय का निर्माण निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप करें पूरा

स्वच्छ भारत मिशन फेस 2 (ग्रामीण) के तहत ग्रामों को मॉडल ग्रामों के रूप में करें विकसित: डीएम

गौतम बुद्ध नगर, 16 मई 2025: जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) फेस 2 के तहत जिला स्वच्छता समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में सर्वप्रथम जिला पंचायत राज अधिकारी वीरेन्द्र सिंह द्वारा पावर प्रजेंटेशन के माध्यम से वर्तमान तक की गई कार्रवाई से जिलाधिकारी को अवगत कराया गया।

जिलाधिकारी ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) फेस 2 के तहत रछहट के आरआरसी सेंटर, सामुदायिक खाद एवं सोक्ता गड्ढे, ई रिक्शा, सिल्ट कैचर एवं फिल्टर चैंबर आदि कार्यों की समीक्षा करते हुए समस्त ग्राम पंचायतों में मानकों के अनुसार समस्त कार्य कराए जाने के निर्देश दिए। व्यक्तिगत शौचालय के निर्माण की समीक्षा करते हुए कहा कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में व्यक्तिगत शौचालय निर्माण हेतु जो लक्ष्य शासन से प्राप्त हुआ है, उसी के अनुरूप शौचालय विहीन लाभार्थी चिन्हित

करते हुए उनको योजना के लाभ से लाभान्वित कराया जाए। जिलाधिकारी ने सामुदायिक शौचालय के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए पाया कि 82 ग्राम पंचायत के सापेक्ष 62 ग्राम पंचायत में सामुदायिक शौचालय निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है। उन्होंने जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया कि शेष ग्राम पंचायत में भी भूमि का चयन करते हुए सामुदायिक शौचालय का निर्माण कराया जाए।

जिलाधिकारी ने समीक्षा करते हुए पाया कि ग्राम पंचायत जारचा एवं खटाना धीरखेड़ा में गोवर्धन योजना के तहत बायोगैस प्लांट की स्थापना तथा ग्राम पंचायत जारचा में प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट की स्थापना की जा चुकी है, जिसके लिए जिलाधिकारी ने जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया गया ग्राम प्रधानों के साथ वार्ता करते हुए बायोगैस प्लांट एवं प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट का संचालन कराया जाए।

जिलाधिकारी ने जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देश दिए की सभी पंचायत सचिव, पंचायत सहायक रोस्टर के अनुसार कार्य करेंगे। साथ ही जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया कि ग्रामों की साफ सफाई की व्यवस्था सुदृढ़ रखी जाए एवं समय-समय पर साफ सफाई कार्यो की मॉनिटरिंग की जाए, ताकि वर्तमान में फैल रही वेक्टर जनित बीमारियों से ग्रामीणों को स्वस्थ रखा जा सके। साथ ही कहा कि जनपद की ग्राम पंचायत को मॉडल ग्राम पंचायत के रूप में विकसित करने की दिशा में काम किया जाए। इस महत्वपूर्ण बैठक का सफल संचालन जिला पंचायत राज अधिकारी वीरेन्द्र सिंह द्वारा किया गया।

इस बैठक में मुख्य विकास अधिकारी विद्यानाथ शुक्ला, जिला समाज कल्याण अधिकारी सतीश कुमार, अन्य संबंधित अधिकारीगण तथा जिला पंचायत सदस्य, ग्राम प्रधानों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
सौजन्य से सूचना विभाग गौतम बुद्ध नगर।

ग्रामोद्योग बोर्ड की कौशल सुधार प्रशिक्षण योजना: जिला ग्रामोद्योग अधिकारी कमलेश कुमार

जनपद श्रावस्ती, जिला ग्रामोद्योग अधिकारी कमलेश कुमार ने बताया है कि उ0प्र0 खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड की कौशल सुधार प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत जनपद श्रावस्ती में सामान्य वर्ग के 25 व्यक्तियों को टेलरिंग, 25 व्यक्तियों को टोकरी बुनाई, अनुसूचित जाति के 25 व्यक्तियों को टेलरिंग, 25 व्यक्तियों को ब्यूटी पार्लर, 25 व्यक्तियों को फल प्रशोधन एवं 25 व्यक्तियों को टोकरी बुनाई का 15 दिवसीय निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु विभागीय वेबसाइटे ४स्र'५ु.ङ्क५.ल्ले के निर्धारित पोर्टल पर इच्छुक अभ्यर्थियों द्वारा आवेदन किया जा सकता है। प्राप्त आवेदनों में से स्कोर कार्ड में निर्धारित 100 अंक में से न्यूनतम 60 अंक या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले आवेदकों का चयन जिला ग्रामोद्योग अधिकारी द्वारा करते हुये सूची प्राचार्य, मण्डलीय ग्रामोद्योग प्रशिक्षण केन्द्र, बहराइच को प्रशिक्षण देने के लिए पोर्टल पर ऑनलाइन प्रेषित किया जायेगा।
आवेदकों के उम्र की अधिकतम सीमा 45 वर्ष है तथा एक परिवार के एक सदस्य का ही चयन किया जाएगा। चयन के समय प्रशिक्षण हेतु दिव्यांग, बी0पी0एल0 परिवार के सदस्यों तथा महिलाओं को प्राथमिकता दी जायेगी। ग्रामीण क्षेत्र/नगर पंचायत (जिनकी जनसंख्या 20000 से अधिक न हो) के आवेदक ही उक्त प्रशिक्षण के पात्र होगें। अभ्यर्थी के पास आधार कार्ड होना अनिवार्य है। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में अनुसूचित जाति के लाभार्थियों को सक्षम अधिकारी द्वारा निर्गत अनुसूचित जाति प्रमाण-पत्र धारक का ही चयन किया जाएगा।
प्रशिक्षण कार्यक्रम मण्डलीय ग्रामोद्योग प्रशिक्षण केन्द्र, बहराइच/तहसील स्तर/ब्लॉक स्तर/जनपद स्तर पर आवश्यकतानुसार अनावासीय संचालित किये जाएंगे। ट्रेडवार प्रशिक्षण कार्यक्रम, सेक्टर स्किल काउंसिल द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त वैध प्रमाण-पत्र टी0ओ0टी0 धारक मास्टर ट्रेनर से कराया जाएगा। प्रशिक्षण की समाप्ति उपरान्त तुरन्त असेसमेन्ट/आर0पी0एल0 की कार्यवाही पूर्ण की जाएगी। प्रशिक्षणार्थियों को उद्योग प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों पर उपरोक्त ट्रेंड में प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रत्येक दिन प्रथम सत्र में प्रशिक्षण से सम्बन्धित ट्रेड के विषय में विभिन्न प्रकार की जानकारी दी जायेगी व प्रतिदिन तीन घण्टे की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी जायेगी। प्रशिक्षार्थियों को उत्पादन/सभी प्रकिया से विपणन तक की पूर्ण जानकारी भी दी जायेगी। प्रशिक्षार्थियों को रू 250/- प्रतिदिन की दर से रू0 3750/-प्रशिक्षुवृत्ति भी दिया जायेगा। प्रशिक्षण उपरान्त लाभार्थियों को विभागीय स्वरोजगार की योजनाओं में बैंको से वित्तपोषण भी कराया जायेगा।

उप जिलाधिकारी धामपुर ने किया बाढ सुरक्षात्मक कार्यों का स्थलीय निरीक्षण

दैनिक समाज जागरण मुस्कान खान जनपद बिजनौर

स्योहारा संभावित बाढ से पूर्व तैयारियों के परिप्रेक्ष्य में जनपद में चल रहे बाढ सुरक्षात्मक कार्यों की परियोजनाओं के वित्तीय कार्यों/ भौतिक सत्यापन तथा कार्यों की गुणवत्ता की जांच हेतु जिलाधिकारी द्वारा गठित समिति के अधिकारियों ने अफजलगढ सिंचाई खण्ड धामपुर के नियंत्रणाधीन धारा नदी

पर ग्राम घासीवाला इत्यादि की सुरक्षा हेतु कराए जा रहे बाढ़ सुरक्षात्मक कार्यों एवं खो नदी के दांए किनारे स्थित ग्राम मुकरपुरी, ज्योतिमा, इब्राहिमपुर में बाढ़ से सुरक्षा हेतु कराये जा रहे कटाव निरोधक कार्यो का स्थलीय निरीक्षण किया। उप जिलाधिकारी द्वारा सिंचाई विभाग के अधिकारियों को समस्त कार्य मानसून से पूर्व समय पूर्ण कराने के निर्देश दिए। इस दौरान उप जिलाधिकारी धामपुर रितु रानी, सहायक अभियंता पुनीत कुमार अग्रवाल, जूनियर इंजीनियर राकेश भारद्वाज, नवीन शर्मा, चंद्रकुश चौहान, गौरव कुमार एवं गजेंद्र सिंह चौहान आदि मौजूद रहे।

गुन्नौर गंगा में डूबी दोनों किशोरियों के शव दूसरे दिन उतराते मिले किए बरामद

दैनिक समाज जागरण

घटना स्थल से किशोरी ईशानी का शव पाँच सौ मीटर दूर तो अकिंल उर्फ गौरी का छः किलो मीटर दूर रामघाट पर मिला दोनों के शवों को मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया । गुन्नौर कोतवाली क्षेत्र गांव ईसमपुर डांडा के कच्चे घाट पर एक दिन पूर्व गंगा में डूबी दोनों किशोरियों के शव दूसरे दिन शुक्रवार की दोपहर घटनास्थल से किशोरी ईशानी पुत्री पदम सिंह पांच सौ

मीटर दूर उतराता मिला व दूसरी किशोरी अकिंल उर्फ गौरी पुत्री श्योराज उम्र 14 वर्षीय का छः किलोमीटर दूर रामघाट जनपद बुलंदशहर से उतराता हुए बरामद। गुन्नौर क्षेत्र के गांव ईसमपुर डांडा निवासी ईशानी पुत्री पदम सिंह उम्र 13 वर्षीय अंकिल उर्फ गौरी पुत्री श्योराज 14 वर्षीय,दोनों लड़कियां गुरुवार को घर से एक साथ गंगा किनारे बकरियां चराने गई थीं। दोनों लड़कियां घर से कहकर निकली थीं। कहा कि रघुवीर दास मंढी पर भंडारा खाने गई थी। लेकिन वे गंगा घाट पर बकरियां चराने चली गईं। दोपहर में गर्मी के कारण वे गंगा में स्नान करने लगीं। नहाते समय एक का पैर फिसल गया, और उसे बचाने के प्रयास में दोनों किशोरी पानी में बह गई। परिजनों को जैसे ही घटना की जानकारी मिली तो परिजनों में कोहराम मच गया। शुक्रवार को एसडीआरएफ व एसडीआरएफ पुलिस एवं गोताखोरों के द्वारा दोनों किशोरियों के शव पानी में उतराते मिले जिसमें ईशानी का शव घटना स्थल से पांच सौ मीटर दूर तो अकिंल उर्फ गौरी का छः किलोमीटर दूर जनपद बुलंदशहर के रामघाट पर उतराते मिले है ।शवों को मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। वही दोनों के परिजनों ने पुलिस से पोस्टमार्टम न कराने से साफ इंकार कर दिया। और दोनों के परिजनों दोनों किशोरियों के शवों का अंतिम संस्कार कर दिया।

गुन्नौर बच्चों के विवाद को लेकर दोनों पक्षों में जमकर मारपीट, तीन घायल

दैनिक समाज जागरण

गुन्नौर कोतवाली क्षेत्र के गाँव हैदराबाद में शुक्रवार की सुबह सात बजे बच्चों बच्चों के बीच कहासुनी के बाद मारपीट हो गई। इस दौरान एक पक्ष से तीन लोग घायल हुए। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ केंद्र ले जाकर भर्ती कराया है। पीड़ित पक्ष ने पुलिस को रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए प्रार्थना पत्र सौंपा। प्रार्थना पत्र मिलते ही पुलिस ने जांच पड़ताल करनी शुरू कर दी है। गुन्नौर कोतवाली क्षेत्र गांव हैदराबाद निवासी रोहन सिंह पुत्र रामस्वरूप ने शुक्रवार की सुबह सात बजे अपने घर में चाय नाश्ता कर रहे थे ।तभी दबंग रामजीमल,अशोक पुत्रगण रामसिंह, दिलकेश पुत्र राजपाल,निवासीगण हैदराबाद व वीरपाल पुत्र नामालूम निवासी पतरूआ थाना चंदौसी ने घर में घुसकर गालियां देने लगा। विरोध करने पर दोनों पक्षों के बीच विवाद होने लगा। बात बढ़ने पर दोनों पक्षों के बीच जमकर मारपीट होने लगी। इस दौरान रोहन पुत्र रामस्वरूप अंजली पुत्री अशोक,विशाखा पत्नी लालाराम, बुरी तरह घायल हो गए। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची, पुलिस ने घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। पीड़ित रोहन ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है पुलिस ने मामले पर कार्यवाई की है ।

पिनेकल स्कूल के बच्चों ने लहराया परचम

आई एम खान/दैनिक समाज जागरण ब्यूरो

बिसौली बदायूं। पिनेकल इंटरनेशनल एकेडमी नवादा का केंद्रीय माध्यमिक

शिक्षा बोर्ड की 10 वीं का परीक्षा परिणाम बेहतर रहा। जिसमें कक्षा दस के बच्चों का उत्कृष्ट प्रदर्शन देखने को मिला और विद्यालय का नाम रोशन किया। 10 वीं आस्था (91.6%,), तान्या सिंह (82%), रिद्धि यादव (81%), हर्ष सैनी(76%), ध्वज यादव (74%), आदि ने अपना शानदार प्रदर्शन किया। इस मौके पर विद्यालय के डायरेक्टर रवि जौहरी, प्रधानाचार्य विनोद पटेल, प्रतिभा मिश्रा, वेंकटेश शंखधार, शरद यादव, केशव पाराशरी, सुकेन्द्र पाल आदि शिक्षकों ने उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए बधाई दी।

साझेदारी मोड के अंतर्गत नए सैनिक स्कूलों के लिए पंजीकरण के चौथे दौर के लिए ऑनलाइन पोर्टल खोला गया

रक्षा मंत्रालय ने सैनिक स्कूल सोसाइटी के तहत राज्य सरकार/गैर सरकारी सगंठन(एनजीओ)/निजी क्षेत्र के साथ भागीदारी में 100 नए सैनिक स्कूल स्थापित करने की सरकार की पहल के अंतर्गत पात्र और इच्छुक आवेदक स्कूलों के पंजीकरण के लिए 15 मई, 2025 से 14 जून, 2025 तक एक ऑनलाइन वेब पोर्टल खोला है। इच्छुक स्कूल/ट्रस्ट/एनजीओ आदि पंजीकरण के लिए वेब पोर्टल पर सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। भारत सरकार का 100 नए सैनिक स्कूल स्थापित करने का लक्ष्य न केवल राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना

सड़क दुघर्टना में एक 32 वर्षीय युवक की मौके पर मौत दो लोग गंभीर रूप से घायल

दैनिक समाज जागरण
मुस्कान खान जनपद बिजनौर

अफजलगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग 74 पर स्थित गांव मनोहरवाली के समीप मैक्स पिकअप महिंद्रा गाड़ी व आईसर केन्टर गाड़ी की भिड़ंत में एक युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई जबकि दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को पुलिस द्वारा 108 एंबुलेंस की मदद से सीएचसी में भर्ती कराया गया ।पुलिस ने मृतक युवक ताजुद्दीन उम्र 32 वर्षीय के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा। वही सड़क दुघर्टना में दोनों गाड़ियां बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए। अफजलगढ़ थाना क्षेत्र के गांव सीरवासुचंद निवासी मोहम्मद इमरान उम्र 30 वर्षीय पुत्र मोहम्मद गफ्फार शुक्रवार की सुबह सवेरे अपने साथी आरिफ उम्र 28 वर्षीय पुत्र रियासत व ताजुद्दीन पुत्र जमालुद्दीन निवासी गांव उदयपुर थाना रेहड़ के साथ धामपुर की ओर से मैक्स पिकअप महिंद्रा गाड़ी में मुर्गी फार्म से मुर्गा

लेकर अफजलगढ़ की ओर जा रहे थे। जैसे ही उनकी मैक्स पिकअप महिन्द्रा गाड़ी गांव मनोहरवाली कट के नजदीक पहुंची तो आगे जा रही गाड़ी आईसर केन्टर चालक विजयपाल पुत्र नोनीराम निवासी गांव दनकरा थाना कैमरी जिला रामपुर जो अपनी गाड़ी में कोल्डड्रिंक जीरा छोटी बोतल लेकर हरिद्वार उत्तराखंड से हरदोई जा रहा था। कि गाड़ी में अचानक टक्कर लगने के दौरान मैक्स पिकअप महिंद्रा गाड़ी में सवार आगे बैठे ताजुद्दीन उम्र 32 वर्षीय निवासी गांव उदयपुर थाना रेहड़ की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई जबकि गाड़ी में सवार गाड़ी चालक गांव सीरवासुचंद निवासी मोहम्मद इमरान उम्र 30 वर्षीय तथा आरिफ उम्र 28 वर्षीय निवासी गांव उदयपुर थाना रेहड़ गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को पुलिस की मदद से 108 एंबुलेंस द्वारा सीएचसी अफजलगढ़ में भर्ती कराया गया जहां से प्राथमिक उपचार के बाद दोनों घायलों को हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। वही पुलिस ने सड़क दुघर्टना में क्षतिग्रस्त दोनो गाड़ियों को अपने कब्जे में लेकर मृतक युवक ताजुद्दीन के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल बिजनौर में भेज दिया। उधर थानाध्यक्ष सुमित राठी ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि मृतक ताजुद्दीन उम्र 32 वर्षीय पुत्र जमालुद्दीन निवासी गांव उदयपुर थाना रेहड़ के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। तहरीर मिलने पर आवश्यक कार्रवाई की जायेगी।

जिलाधिकारी ने सलाना मजालिसों की तैयारियों का लिया जायजा

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो
शमीम सिद्दीकी जनपद बिजनौर

जोगीरमपुरी/नजीबाबाद बिजनौर जिलाधिकारी जसजीत कौर द्वारा तहसील नजीबाबाद के ग्राम जोगीरम्पुरी स्थित दरगाह ए आलिया नजफे हिंद में आयोजित होने वाले वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सालाना मजालिसों के दृष्टिगत भ्रमण किया गया। उन्होंने इस अवसर पर दरगाह के प्रशासक गुलरेज हैदर से इस सम्बन्ध में सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाओं के बारे में विस्तृत रूप से विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी को दरगाह ए आलिया नजफे हिंद के प्रशासक श्री गुलरेज हैदर रिजवी ने बताया कि आगामी 22 मई से 25 मई,2025 तक चार दिवसीय सालाना मजालिस का आयोजन किया जाएगा जिसमें देश एवं विदेशों के लाखों जायरीन भाग लेंगे। उन्होंने आयोजित होने वाले कार्यक्रम पर विद्युत आपूर्ति सुचारु रखने, स्वास्थ्य विभाग द्वारा मेडिकल कैंपों का आयोजन, एंबुलेंस एवं फायर ब्रिगेड की गाड़ियों की उपलब्धता, नजीबाबाद से दरगाह

तक रोडवेज बस सर्विस, लोक निर्माण विभाग द्वारा साईन बोर्ड एवं सड़कों की समुचित मरम्मत, पेयजल एवं सफाई व्यवस्था कराने का अनुरोध किया। जिलाधिकारी ने उक्त समस्याओं का संज्ञान लेते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी समस्याओं का तत्काल निराकरण करना सुनिश्चित करें ताकि मजलिसो के आयोजन के समय जायरीन को कोई असुविधा न होने पाए। उन्होंने खाद्य सुरक्षा अधिकारी को निर्देश दिए कि कार्यक्रम मे लगने वाले स्टालों में उपलब्ध खाद्य सामग्री का नियमित रूप से निरीक्षण कराएं किसी भी अवस्था में बासी खाद्य सामग्री का क्रय-विक्रय नहीं होने दिया जाए तथा सभी खाद्य सामग्री की रेट लिस्ट बड़े और स्पष्ट शब्दों में बाहर प्रदर्शित कराना सुनिश्चित कराएं। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अभिषेक झा, अपर जिलाधिकारी प्रशासन विनय कुमार सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण विनय कुमार सिंह, उप जिलाधिकारी नजीबाबाद एवं सीओ पुलिस सहित संबंधित विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी, एडीओ पंचायत राकेश कुमार एवं गणमान्य लोग मौजूद थे।

राष्ट्रपति से भारत में एक राष्ट्र एक चुनाव की मांग करने पर एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

दैनिक समाज जागरण

राष्ट्रीय युवा वाहिनी भारतीय जागरूक परिषद के द्वारा महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन उपजिलाधिकारी गुन्नौर को दिया गया । जिसमें संगठन द्वारा एक राष्ट्र - एक चुनाव कराये जाने की मांग की गई राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित हरीश गौतम ने बताया एक राष्ट्र एक चुनाव के समर्थन में प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं जिसका उद्देश्य भारत के लोकतांत्रिक ढाँचे को अधिक प्रभावी पारदर्शी और आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाए जाने के साथ - साथ लोकसभा और सभी राज्य विधानसभा के चुनावों को एक साथ आयोजित करते हुए समय संसाधन और प्रशासनिक खर्चों की बचत करते हुए देश के विकास

कार्यों में निरंतरता बनी रह सके " एक राष्ट्र एक चुनाव" एक क्रांतिकारी कदम है जो भारत के लोकतंत्र को और अधिक मजबूत पारदर्शी और कुशल बनया जा सकता हैं जिससे सरकार के कार्यों में निरंतरता आने के साथ - साथ राष्ट्रीय एकता और अखंडता भी सुदृढ़ होगी संगठन प्रमुख नवनीत गाँधी ने बताया भारत में एक देश एक चुनाव कराये जाने के लिए देश के सभी राष्ट्रवादी संगठन एवं बुद्धिजीवी वर्ग चाहता हैं क्योंकि देश में एक साथ चुनाव होने से राष्ट्र व लोकतंत्र मजबूत होगा इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित हरीश गौतम नवनीत गाँधी समाज सेवक सावित्री यादव जीतपाल यादव आदि

लेखपाल और राजस्व निरीक्षक जन शिकायतों का निस्तारण शिकायतकर्ता की उपस्थिति में करें - राशि कृष्णा

आई एम खान/
दैनिक समाज जागरण ब्यूरो

बिसौली बदायूं। शुक्रवार को राजस्व कार्यों की प्रगति बढ़ाने के लिए एसडीएम राशि कृष्णा ने राजस्व निरीक्षक एवं लेखपालों की बैठक ली तथा जनहित से जुड़े कार्यों तथा शासन की प्राथमिकता में शामिल योजनाओं पर विस्तृत चर्चा करते हुए समय से पूर्ण करने का निर्देश दिया। उप जिलाधिकारी ने कहा कि लेखपाल और राजस्व निरीक्षक जन शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से मौके पर पहुंचकर शिकायतकर्ता की उपस्थिति में करें। उन्होंने निर्देशित किया कि विरासत, पैमाइश, प्रमाण पत्रों पर आख्या रिपोर्ट लगाने में देरी न की जाए। किसी भी मामले को ज्यादा समय

तक लंबित न रखा जाए। इस दौरान तहसीलदार विजय कुमार शुक्ला, नायब तहसीलदार गिरजा शंकर यादव, नायब तहसीलदार सृजन यादव, लेखपाल संघ के अध्यक्ष अमित कुमार, मुनेश पाल सिंह, विनोद कुमार शर्मा, धनपाल सिंह, राजेश शर्मा, सर्वेश यादव, यशपाल सिंह राजस्व निरीक्षक, संदीप कुमार, मोहित शर्मा, शोभित कुमार, राजेश कुमार, रिंकी गुप्ता, रिंकी बाथम, लोकपाल सिंह, राहुल सिंह, प्रताप सिंह, प्रियंका शर्मा, श्याम मोहन शर्मा, अनुज कुमार, सत्यम, शिव हरी पंकज, दीपक भटनागर, अनमोल मिश्रा, आदित्य कुमार, आदित्य कांत, सुनील कुमार आदि लेखपाल मौजूद रहे।

एसडीबी स्कूल में 10 दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर की शुरूआत

आई एम खान/
दैनिक समाज जागरण ब्यूरो

बिसौली बदायूं। श्री देवराह बाबा पब्लिक स्कूल में 10 दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर कक्षा एक से आठ तक आरंभ किया गया। जिसमें रचनात्मक गतिविधियां सदैव ही बच्चों में हर्ष उल्लास तथा उमंग और उत्साह उत्पन्न करती है। शिक्षा के साथ- साथ बच्चे अपनी अपनी रुचि के अनुसार प्रशिक्षण कक्षा में अपनी पसंद तथा रुचि की चीज सीखते हैं। घर की अनावश्यक तथा अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुएं बनाना भी बच्चे सीखते हैं। विद्यालय के निदेशक अखिलेश वार्ष्णेय एवं प्रधानाचार्य मीनू बत्रा ने कहा कि ऐसी कक्षाएं मनोरंजन के साथ-साथ भविष्य में बच्चों की रुचि के अनुसार कैरियर निर्माण करने में भी सहायक होती हैं। समस्त कक्षाएं शिक्षक बड़े ही रुचिकर विधि से संचालित कर

रहे हैं। एक्टिविटी इंचार्ज शारदा बवेजा ने कहा कि इन कक्षाओं के संचालन से बच्चों के अंदर की छिपी हुई प्रतिभाओं को निखारने में सहायता मिलती है। कक्षा एक व दो के बच्चों को आज आर्ट एंड क्राफ्ट तथा क्ले मॉडलिंग में क्ले से गणेश जी, शिवाजी, फल, फूल, पत्तियां, शिवलिंग, पशु पक्षी, जोकर, गुड़िया, टोकरी, फ्लावर पॉट, पेपर से ग्लास प्लेट्स, चटाई, ट्रे, पंखे, गुड़िया, वॉल हैंगिंग एवं अन्य कई आकर्षक वस्तुएं बनानी सिखाई गई। बच्चों ने देखकर बहुत ही अच्छी-अच्छी वस्तुएं बनायी। स्वाती, नीलम मिश्रा, विनीता , सुंदरी, रोमा, श्वेता, नीलोफर, शगुफ्ता, चेतना, रीता, दिव्या, अर्चना, शालू, गौरी आदि शिक्षिकाओं ने बहुत ही परिश्रम से बच्चों को सिखाया। शिविर में शिवांशी, तान्या, अर्नव, वंश, मुकेश, तनु, नित्या, महिमा, यशिका, जयंत, गौरव, मिष्ठी, अभय, पायल, अक्षिता, शिवा, नमन, उन्नति , आराध्या, प्रियदर्शनी, अवंतिका, दिव्यांशु आदि बच्चों ने श्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति द्वारा शेख गुलजाऱ के आवास पर हुआ सम्मान समारोह का आयोजन

पत्रकारो ने फूल मालाए पहनाकर नव मनोनीत नगर अध्यक्ष नौशाद सैफी व महामंत्री मयंक कश्यप का किया जोरदार स्वागत

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो
शमीम सिद्दीकी जनपद बिजनौर

नजीबाबाद। अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति के नजीबाबाद नव मनोनीत नगर अध्यक्ष व महामंत्री का पत्रकार शेख गुलजाऱ के आवास रानीकोटा में हुआ सम्मान समारोह का आयोटजन। पत्रकारो ने फूल मालाए पहनाकर किया जोरदार स्वागत। गुरूवार को तहसील क्षेत्र के ग्राम रानीकोटा में अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति नजीबाबाद ईकाई की ओर से पत्रकार शेख गुलजाऱ के आवास पर संगठन के नव मनोनीत अध्यक्ष नौशाद सैफी व महामंत्री मयंक कश्यप के सम्मान में एक भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिलाध्यक्ष हाशिम अहमद ने दोनों पदाधिकारियो को बधाई देते हुए शीघ्र ही नगर कमेटी के गठन को कहा। वही नगर अध्यक्ष नौशाद सैफी व महामंत्री मयंक कश्यप के पिछले कार्यकाल की प्रशंसा करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। संगठन के नव मनोनीत अध्यक्ष नौशाद सैफी व महामंत्री मयंक कश्यप व सभी पत्रकार साथियों ने फूल मालाए पहनाकर जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम को मरगूब हुसैन नासिर, नगर अध्यक्ष नौशाद सैफी, महामंत्री मयंक कश्यप, मीडिया प्रभारी शाही अराफात सैफी, कानूनी सलाहकार एडवोकेट फहीम अंसारी, शादाब जफर, अशरफ अली, रिहान अंसारी,शमीम सिद्दीकी, अल्ताफ रजा, नसीम उस्मानी, सुहेल राजू, आफताब आलम, जुनैद अंसारी, शेख गुलजाऱ, जिया अब्बास, अब्दुल रऊफ साहिल अंसारी, हसीब अहमद आदि ने संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम संयोजक पत्रकार शेख गुलजाऱ की ओर से एक खूबसूरत डीनर पार्टी का आयोजन किया गया। जिस में सभी पत्रकार साथियों ने उम्दा खाने का लुत्फ उठाया। अंत में अपने आवास पर पधारने के लिए अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति नजीबाबाद ईकाई के पत्रकार साथियों का धन्यवाद अदा करते हुए शेख गुलजाऱ ने उन्हें एक एक पेन उपहार स्वरूप प्रदान किया गया।

तिरंगा यात्रा में गूंजा भारत की सेना का शौर्य, खूब लहराया तिरंगा

शौर्य तिरंगा यात्रा मे हाथों में तिरंगा झंडा लेकर बड़ी संख्या में निकले देशभक्त

आई एम खान/
दैनिक समाज जागरण ब्यूरो

बदायूं। ऑपरेशन सिंदूर की कामयाबी भारतीय सेना के अदम्य साहस और शौर्य को समर्पित तिरंगा यात्रा पुलिस लाइन मैदान से निकाली गई। तिरंगा यात्रा जैसे-जैसे आगे बड़ी वैसे-वैसे लोग जुड़ते चले गए। तिरंगा यात्रा भामाशाह चौक, इंद्रा चौक, बाबूराम मार्केट, कश्मीरी चौक, परशुराम चौक, बदायूं क्लब होते हुए पुलिस लाइन मैदान पर समापन हुआ। तिरंगा यात्रा में देशभक्ति का सैलाब उमड़ा, लोगों ने भारतीय सेना के सम्मान में देशभक्ति के नारे लगाए। भारत माता की जय, वंदे मातरम के गगन भेदी नारे लगाए। सामाजिक लोगों ने परशुराम चौक पर फूल बरसाए। हर तरफ उत्सव जैसा नजारा था, हर हाथ में तिरंगा नजर आया हर दिल में भारत माता के प्रति प्रेम साफ दिखाई दिया। तिरंगा यात्रा में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ता, प्रबुद्ध जन, व्यापारी, भूतपूर्व सैनिक, एनसीसी कैडेट, विभिन्न कॉलेज के छात्र, जनप्रतिनिधि आदि बड़ी संख्या

में उपस्थित रहे। तिरंगा यात्रा में केंद्रीय राज्यमंत्री बीएल वर्मा ने कहा सेना के हमारे वीर जवानों ने जिस साहस, समर्पण और पराक्रम से देश की सुरक्षा के लिए अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है, वह हम सभी के लिए प्रेरणा है। इस यात्रा के माध्यम से उनके शौर्य को नमन करते हुए, हमने यह संकल्प लिया कि राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए हम सदैव कृतसंकल्पित रहेंगे। प्रभारी मंत्री गुलाब देवी ने कहा तिरंगा यात्रा में सहभागिता कर गर्व की अनुभूति हुई। यह तिरंगा यात्रा आतंकवाद के खिलाफ भारत की जीरो टॉलरेंस नीति और ऑपरेशन सिंदूर की ऐतिहासिक सफलता को समर्पित थी, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्णायक और दृढ़ नेतृत्व का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भाजपा जिलाध्यक्ष राजीव कुमार गुप्ता ने कहा यह तिरंगा यात्रा हमारा मान अभिमान और सम्मान है। देश की वीर जवानों का हौसला बढाना ही इस तिरंगा यात्रा का मुख्य उद्देश्य है ।सदर विधायक महेश चंद्र गुप्ता ने कहा तिरंगा यात्रा देश की एकता और अखंडता की वास्तविक पहचान है। सेना के पराक्रम को नमन करते हैं ।बिल्सी विधायक हरीश शाक्य ने कहा आज का भारत, नया भारत है। जो किसी भी दुस्साहस का मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। इस मौके पर पूर्व विधायक धर्मेंद्र शाक्य, पूर्व विधायक कुशाग्र सागर, पूर्व ब्लॉक प्रमुख बिसौली अमित पाठक, सहित अन्य उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने सभी राज्यों से खतरनाक अपशिष्ट की हाथ से सफाई की प्रथा को खत्म करने के लिए डॉ. बलराम सिंह बनाम भारत संघ - 2023 के मामले में जारी सुप्रीम कोर्ट के 14 निदेशों को तत्काल लागू करने का आग्रह किया

वास्तविक समय अनुपालन और निवारण सुनिश्चित करने के लिए मजबूत निगरानी प्रणाली बनाने पर जोर प्रगति को ट्रैक करने, कार्यान्वयन अंतराल की पहचान करने और सभी स्तरों पर उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए नियमित अनुवर्ती और समीक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर बल दिया गया संबंधित अधिकारियों से आठ सप्ताह के भीतर कार्रवाई रिपोर्ट मांगी गई खतरनाक अपशिष्ट की हाथ से सफाई की निरंतर प्रथा को देखते हुए राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के सभी मुख्य सचिवों और प्रशासकों को लिखे पत्र में सुप्रीम कोर्ट द्वारा 2023 के ऐतिहासिक निर्णय (डॉ. बलराम सिंह बनाम भारत संघ, 2023 आईएनएससी 950) में जारी किए गए 14 निदेशों का तत्काल कार्यान्वयन सुनिश्चित करने को कहा है, जिसका उद्देश्य हाथ से मैला ढोने और खतरनाक सीवर की सफाई की अमानवीय और जाति-आधारित प्रथा को खत्म करना है। आयोग ने कहा है कि यह प्रथा मानवाधिकारों, विशेष रूप से सम्मान के साथ जीने के अधिकार और कानून के समक्ष समानता के अधिकार का गंभीर उल्लंघन है। आयोग ने पाया है कि संवैधानिक और कानूनी सुरक्षा उपायों के साथ-साथ सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 29 जनवरी, 2025 को छह प्रमुख शहरों - दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, बेंगलुरु और हैदराबाद में पूर्ण प्रतिबंध की घोषणा के बावजूद, देश के कुछ भागों में खतरनाक कचरे की हाथ से सफाई की खबरें आ रही हैं। एनएचआरसी ने निम्नलिखित उपायों के तत्काल कार्यान्वयन की सिफारिश की है: स्थानीय प्राधिकारियों, ठेकेदारों और आम जनता सहित हितधारकों के बीच हाथ से सफाई के निषेध और प्रासंगिक न्यायिक निर्देशों का व्यापक प्रसार;

सरकारी अधिकारियों, सफाई कर्मचारियों और समुदायों के लिए हाथ से सफाई के कानूनी, सामाजिक और मानवाधिकार आयामों पर संवेदनशीलता कार्यक्रम;
वास्तविक समय अनुपालन और निवारण सुनिश्चित करने के लिए मजबूत निगरानी प्रणालियों की स्थापना;
प्रगति पर नजर रखने, कार्यान्वयन में अंतराल की पहचान करने तथा सभी स्तरों पर उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए नियमित अनुवर्ती कार्रवाई और समीक्षा प्रणाली।

शिरोमणि कमेटी ने पुंछ में मारे गए परिवारों को 5-5 लाख रुपए के चैक दिए

एडवोकेट धामी ने पुंछ हमले में मारे गए 4 सिखों के परिवारों से की मुलाकात

रघुनंदन पराशर जैतो समाज जागरण पंजाब चीफ ब्यूरो

जैतो, 16 मई : भारत और पाकिस्तान में तनावपूर्ण हालात के बीच शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष एडवोकेट हरजिंदर सिंह धामी आज जम्मू-कश्मीर के पुंछ में हुए हमलों में मारे गए 4 सिखों के परिवारों से मिलने पुंछ पहुंचे और उन्होंने परिवारों को 5-5 लाख रुपए की आर्थिक सहायता के चैक दिए। उन्होंने सभी प्रभावित परिवारों के घर जाकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं तथा रागी भाई अमरीक सिंह के नाम पर अंतिम अरदास में भी भाग लिया। इस मौके पर उनके साथ शिरोमणि कमेटी सदस्य भाई राजिंदर सिंह मेहता, सुरजीत सिंह भिट्टेवड़, महंत मंजीत सिंह, उप सचिव हरभजन सिंह वक्ता

भी मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि कल श्री रणजीत सिंह, रागी भाई अमरीक सिंह, पूर्व सैनिक अमरजीत सिंह और बीबी बलविंदर कौर (सभी पुंछ निवासी) हमलों के दौरान मारे गए। पुंछ पहुंचे एडवोकेट धामी ने कहा कि युद्ध के परिणाम कभी भी मानवता के पक्ष में नहीं हो सकते, बल्कि मानवता को इसके हानिकारक प्रभाव सदैव झेलने पड़ते हैं। उन्होंने कहा कि जिन परिवारों की जानें गई हैं, उनका दुख बहुत बड़ा है और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इसे साझा करने का विनम्र प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि यह कोई उपकार नहीं है, बल्कि यह सिख संगठन सभी का साझा है और इसी भावना के साथ अपना कर्तव्य निभा रहा है। इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी अध्यक्ष ने केंद्र सरकार से जम्मू-कश्मीर में सिखों के मामलों के प्रति ईमानदार दृष्टिकोण अपनाने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि एक समय जम्मू-कश्मीर में सिखों को अल्पसंख्यक दर्जा प्राप्त था, लेकिन वर्तमान में उन्हें इससे वंचित रखा गया है। उन्होंने कहा कि यह आरक्षण बनाना और सरकारी नौकरियों में अलग से कोटा उपलब्ध कराना सरकार की जिम्मेदारी है। एडवोकेट धामी ने जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री से मारे गए चार सिख परिवारों की स्थिति का जायजा लेने और उन्हें आवश्यक सुविधाएं प्रदान करने का भी अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि सरकार को इन परिवारों के एक-एक सदस्य को नौकरी देने की व्यवस्था करनी चाहिए।

इस बीच, महंत मनजीत सिंह ने घोषणा की कि वे प्रभावित सिख परिवारों के बच्चों की शिक्षा का खर्च उठाएंगे, ताकि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकें और भविष्य में परिवार का सहारा बन सकें। जम्मू-कश्मीर पहुंचे एडवोकेट धामी के साथ शिरोमणि समिति के सदस्य भाई राजिंदर सिंह मेहता, सुरजीत सिंह भिट्टेवड़, उप सचिव हरभजन सिंह वक्ता, अमृतपाल सिंह कुलार, महंत मनजीत सिंह प्रमुख शिरोमणि डेरा नंगली साहिब पुंछ, भाई हरबिंदर सिंह प्रभारी सिख मिशन, भाई जगतार सिंह सलाहकार/समन्वयक (जम्मू और कश्मीर) धर्म प्रचार समिति, एस. परविंदर सिंह अध्यक्ष गुरु नानक सेवा चैरिटेबल ट्रस्ट (जम्मू और जम्मू) भी थे। कश्मीर), स. नरिंदर सिंह अध्यक्ष जिला गुरुद्वारा प्रबंधन समिति पुंछ, स. रणजीत सिंह तोहरा, अध्यक्ष जम्मू गुरुद्वारा प्रबंधन समिति, स. हरचरण सिंह खालसा, स. हरदियाल सिंह, स. चरणजीत सिंह खालसा, पूर्व एमएलसी और अन्य उपस्थित थे।

स्वामी श्री दिव्यानंद जी और विवेकानंद जी महाराज का भव्य अभिनंदन, उमड़े श्रद्धालु

शाम चार बजे से श्री मोहन जगदीश्वर दिव्य आश्रम में हुआ करेगा सत्संग कार्यक्रम

मन्नू शर्मा पराशर जैतो दैनिक समाज जागरण

पंजाब/श्री मुक्तसर साहिब, 16 मई :- श्री मोहन जगदीश्वर आश्रम कनखल हरिद्वार के अनंत श्री विभूषित 1008 महामंडलेश्वर स्वामी दिव्यानंद गिरि जी महाराज, उनके परम शिष्य 1008 महामंडलेश्वर स्वामी श्री विवेकानंद जी महाराज तथा स्वामी श्री हृदयानंद जी महाराज का मुक्तसर पधारने पर श्रद्धालुओं ने भव्य अभिनंदन किया। महाराज जी अपने शिष्य मंडली सहित शुक्रवार देर शाम 5:00 बजे अबोहर रोड स्थित श्री मोहन जगदीश्वर दिव्य आश्रम में पधारे। जहां श्रद्धालुओं ने माल्यार्पण एवं पुष्पवर्षा कर महाराज जी का भव्य अभिनंदन किया। इस मौके आश्रम प्रांगण सदगुरुदेव महाराज के

जयकारों से गूंज उठा। इस मौके श्रद्धालुओं ने भजन संकीर्तन कर माहौल को धर्ममयी कर दिया।बता दें कि सदगुरु देव महाराज कुछ दिन मुक्तसर स्थित अपने इस आश्रम में रहेंगे और रोजाना शाम 4:00 से 6:00 बजे तक सत्संग कार्यक्रम दौरान श्रद्धालुओं को जहां प्रवचनों की अमृतवर्षा में स्नान करवाएंगे। वहीं भजन गंगा में डुबकियां भी लगवाएंगे। इस मौके अखिलेश, शोभित, विशाल, देवराज कसरीजा, मास्टर रेशम सिंह, फिरोजपुर से मास्टर राजीव, प्रिथी चंद,रमेश छाबड़ा समेत बड़ी गिनती में श्रद्धालु उपस्थित थे।श्री मुक्तसर साहिब में स्वामी श्री दिव्यानंद गिरि जी महाराज, स्वामी श्री विवेकानंद गिरी जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्रद्धालु।

13 वां श्याम महोत्सव 22 को, प्रख्यात भजन गायक कन्हैया मितल श्याम प्रेमियों को करेंगे निहाल:टिन्नू शर्मा, नरेश मित्तल

दैनिक समाज जागरण पंजाब चीफ ब्यूरो

जैतो,16 मई : क्षेत्र की प्रसिद्ध धार्मिक संस्था श्री श्याम सेवा मंडल इकाई जैतो द्वारा संचालित श्री इच्छापूर्ण श्याम मंदिर निकट बिसनंदी रेलवे फाटक में 13 वां श्याम महोत्सव 22 मई को बड़ी धूमधाम व श्रद्धा से मनाने का निर्णय लिया गया है।।मंदिर कमेटी के चेयरमैन प्रवीण जिन्दल, प्रधान टिन्नू शर्मा ने इस धार्मिक कार्यक्रम का पुनः निमंत्रण पत्र रीलिज किया। प्रोजैक्ट चेयरमैन संजय जिन्दल और पी.आर.ओ. नरेश मित्तल ने बताया कि इस धार्मिक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संजीव कुमार जिन्दल (एडीशनल सैक्रेटरी गृह मंत्रालय भारत सरकार) होंगे। दरबार पूजन श्री दीपक गर्ग मैनेजिंग डायरैक्टर ए.बी. कोटसपिन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड जैतो,भंडारा यजमान श्री जिया लाल जैन, चांदी राम जैन, विजय जैन व रविन्द्र जैन, ध्वजा

पूजन श्री कुलदीप मित्तल एडवोकेट, ज्योति पूजन श्री रविन्द्र कुमार गोयल पंचकूला, श्री श्याम तिलक श्री शिवजी राम गोयल कोटकपूरा, श्री बालाजी तिलक श्री कृष्ण मित्तल, श्री श्याम जी की आरती श्री भीमसैन गोयल मार्बल बाले, श्री बालाजी महाराज की आरती श्री ललित कुमार गोल्डा पायल ढाबा वाले, छप्पन भोग सुरेन्द्र कुमार काका और श्री श्याम सेवा मित्र मंडल वाले अपनी सेवा निभाएंगे। पूर्व प्रधान श्री राम अवतार वर्मा और पूर्व सचिव श्री विकास दीपू बांसल ने बताया कि इस धार्मिक कार्यक्रम में सूरजगढ़ धाम के मुख्य पुजारी श्री विनोद कुमार जी इनदौरीया सभी श्याम भक्तो पर श्री श्याम मोरछडी.के द्वारा बाबा के आशीर्वाद की वर्षा करेंगे। इस कार्यक्रम को लेकर जैतो व आसपास के शहरों कस्बों में खुशी का माहौल है। इस श्याम महोत्सव कार्यक्रम में श्री श्याम संकीर्तन महिला मंडल जैतो का पूर्ण सहयोग है। कार्ड रीलीज कार्यक्रम में यशपाल जिन्दल, विनोद शर्मा भारद्वाज,अनिल कुमार जिन्दल, हैप्पी जिन्दल,शालू शर्मा भारद्वाज, ललित कुमार गोल्डा, गगन जिंदल, बाबू राम सैनी, विट्ठू यादव, पुनीत यादव के इलावा अन्य सदस्य भी हाजिर थे। श्री श्याम सेवा मंडल जैतो के प्रधान टीनू शर्मा भारद्वाज व पी.आर.ओ.नरेश। जिंदल ने कहा कि यह महोत्सव 14 मई को होना था कि अचानक भारत -पाक युद्ध को देखते हुए कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया था। अब यह कार्यक्रम 22 मई को आयोजित होगा जिसके प्रति आम जनता विशेष रूप से महिलाओं में भारी उत्साह पाया जा रहा।

फिरोजपुर रेल मंडल द्वारा वरिष्ठ वाणिज्य प्रबंधक/ एफ.एस.मनु गर्ग के नेतृत्व में विशेष पार्सल जांच अभियान जारी

रघुनंदन पराशर जैतो समाज जागरण पंजाब चीफ ब्यूरो

जैतो,16 मई :फिरोजपुर मंडल द्वारा पार्सल के तहत बुक की जा रही वस्तुओं की निगरानी के लिए पार्सल कार्यालयों में 15 दिनों के लिए एक विशेष पार्सल जांच अभियान 06 मई 2025 से शुरू किया गया है। इस अभियान को मंडल रेल प्रबंधक श्री संजय साहू के निर्देशन में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक /एफएस श्री मनु गर्ग की अगुवाई में चलाया जा रहा है। यह विशेष अभियान फिरोजपुर कैंट, लुधियाना, अमृतसर, जालंधर सिटी, जालंधर कैंट रेलवे स्टेशनों पर चलाया जा रहा है। यह अभियान बुक किये गए पार्सल और लीज पर लिए जाने वाले पार्सल दोनों पर चलाया जा रहा है। इस अभियान में, पार्सल कर्मचारी और आरपीएफ

जवान द्वारा संयुक्त रूप से पार्सलों की गहन जाँच की जा रही है। जाँच के दौरान मिथ्या घोषित वस्तु पाए जाने पर यात्री / पार्टी पर रेलवे नियमों के अनुसार उचित कार्यवाही की जा रही है। अब तक लुधियाना में मिथ्या घोषित के 04 केस पकड़े गए है, जिसमें रेलवे नियमों के अनुसार पार्टी से जुमार्ना वसूल किया गया है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक /एफएस श्री मनु गर्ग ने यात्रियों / पार्सल ग्राहकों से अपील किया है कि बुकिंग के समय फॉरवार्डिंग नोट में जिस सामान का जिक्र किया जाता है, वही सामान बुकिंग में होना चाहिए अन्यथा मिथ्या घोषित आइटम अथवा खतरनाक अथवा प्रतिबंधित वस्तुओं का गलत घोषणा प्रस्तुत करने पर उनके खिलाफ रेलवे नियमों के अनुसार आवश्यक कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने बताया कि विशेष पार्सल चेकिंग अभियान पूरा होने के बाद भी जारी रहेगा।

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने 58वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया

रघुनंदन पराशर जैतो पंजाब चीफ ब्यूरो

जैतो,16 मई ;महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने आज (16 मई, 2025) नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक समारोह में संस्कृत विद्वान जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी को 58वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया।इस अवसर पर अपने संबोधन में महामहिम राष्ट्रपति ने जगद्गुरु रामभद्राचार्य को बधाई दी। उन्होंने ज्ञानपीठ पुरस्कार के लिए गुलजार को भी बधाई दी, जो पुरस्कार समारोह में शामिल नहीं हो सके। उन्होंने कामना की कि गुलजार जी जल्द ही पूरी तरह स्वस्थ और सक्रिय होकर कला, साहित्य, समाज और देश के लिए अपना योगदान देते रहें।राष्ट्रपति ने कहा कि साहित्य समाज को जोड़ता भी है और जगाता भी है। 19वीं सदी के सामाजिक जागरण से लेकर 20वीं सदी के हमारे स्वतंत्रता संग्राम तक, कवियों और रचनाकारों ने जन-जन को जोड़ने में महानायकों की भूमिका निभाई

है। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित 'वंदे मातरम' गीत लगभग 150 वर्षों से भारत माता की संतानों को जागृत करता रहा है और सदैव करता रहेगा। वाल्मीकि, व्यास और कालिदास से लेकर रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे शाश्वत कवियों की रचनाओं में हमें जीवंत भारत का स्पंदन महसूस होता है । यह स्पंदन ही भारतीयता का स्वर है। राष्ट्रपति ने 1965 से विभिन्न भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्यकारों को पुरस्कृत करने के लिए भारतीय ज्ञानपीठ ट्रस्ट की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट साहित्यकारों को पुरस्कृत करने की प्रक्रिया में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार के चयनकर्ताओं ने श्रेष्ठ साहित्यकारों का चयन किया है तथा इस पुरस्कार की गरिमा का संरक्षण और संवर्धन किया है।

राष्ट्रपति ने कहा कि ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित आशापूर्णा देवी, अमृता प्रीतम, महादेवी वर्मा, कुर्रतुल-ऐन-हैदर, महाश्वेता देवी, इंदिरा गोस्वामी, कृष्णा सोबती और प्रतिभा राय जैसी महिला रचनाकारों ने भारतीय परंपरा और समाज को विशेष संवेदनशीलता के साथ देखा और अनुभव किया है तथा हमारे साहित्य को समृद्ध किया है। उन्होंने कहा कि हमारी बहनों और बेटियों को इन महान महिला रचनाकारों से प्रेरणा लेकर साहित्य सृजन में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए तथा हमारी सामाजिक सोच को और अधिक संवेदनशील बनाना चाहिए।

महामहिम राष्ट्रपति ने श्री रामभद्राचार्य जी के बारे में कहा कि उन्होंने श्रेष्ठता का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनके बहुमुखी योगदान की प्रशंसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि दृष्टि बाधित होने के बावजूद उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से साहित्य और समाज की असाधारण सेवा की है। उन्होंने कहा कि श्री रामभद्राचार्य ने साहित्य और समाज सेवा दोनों ही क्षेत्रों में व्यापक योगदान दिया है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि उनके यशस्वी जीवन से प्रेरणा लेकर आने वाली पीढ़ियाँ साहित्य सृजन, समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण के सही मार्ग पर आगे बढ़ती रहेंगी।

दिल्ली के तीन जिलों पश्चिमी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली और शाहदरा में निकाली गई तिरंगा यात्रा

दैनिक समाज जागरण मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली, 16 मई : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के निर्देश के अनुसार आज से दिल्ली के विभिन्न 14 जिलों के प्रमुख 14 स्थानों पर तिरंगा यात्रा निकालने की शुरूवात हुई। आज दिल्ली के तीन संगठनात्मक जिलों पश्चिमी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली और शाहदरा में तिरंगा यात्रा निकाली गई।

पश्चिम दिल्ली में दिल्ली भाजपा की महामंत्री सांसद कमलजीत सहरावत के नेतृत्व में पूर्व राज्यपाल जगदीश मुखी, दिल्ली भाजपा के वरिष्ठ नेता राजीव बब्बर, जिलाध्यक्ष चंद्रपाल बख्शी के साथ सैकड़ों पार्टी नेता एवं कार्यकर्ता सम्मलित हुए।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने भाजपा के अन्य पदाधिकारियों के साथ तिरंगा यात्रा में शामिल हुए। इस मौके पर जिला अध्यक्ष दीपक गाबा और क्षेत्रीय विधायक, पार्षद और पार्टी नेता भी उपस्थित थे।

दक्षिण दिल्ली जिले की तिरंगा यात्रा में जिलाध्यक्ष राजकुमार चौटाला के नेतृत्व में सैकड़ों ने ओखला में तिरंगा यात्रा निकाली।

दिल्ली भाजपा के पूर्व अध्यक्ष सतीश उपाध्याय के नेतृत्व में आज दिल्ली इंजीनियर एसोसिएशन द्वारा आई.एन.ए. में तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा यात्रा में सतीश उपाध्याय ने कहा कि देश अभी भूला नही है कि अरविंद केजरीवाल ने 2016 में सेना से पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांग कर पाकिस्तान सरकार का मनोबल बढ़ाया था और आज फिर इन्ही अरविंद केजरीवाल की पार्टी के वरिष्ठ नेता रोज बयान देकर सरकार द्वारा सीजफायर को स्वीकार करने पर सवाल खड़े कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि एक बार देश के जवानों से उनके पराक्रम के सबूत मांगने पर दिल्लीवालों ने सत्ता से उखाड़ फेंका और अब इस तरह के बयानबाजी पर अब उन्हें विपक्ष में भी बैठने लायक नहीं छोड़ेंगे।

इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने कहा कि पाकिस्तान द्वारा जिस कायराना हरकत को अंजाम दिया गया है, वह भारत नहीं बर्दाश्त करेगा और अभी तक भारतीय सेना द्वारा उसका जवाब दिया गया है, आगे भी भारत किसी भी आतंकी गतिविधि को बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह साफ संदेश है कि अब पाकिस्तान के किसी भी हरकत का जवाब उसी के तरीके से दिया जाएगा। इस मौके पर विधायक अनिल गोयल एवं संजय गोयल भी उपस्थित थे।

कमलजीत सहरावत ने कहा कि आज का भारत बदल चुका है। यह नया भारत शांति चाहता है, पर आतंक के समूल विनाश के लिए किसी भी सीमा तक जाने को तत्पर है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने स्पष्ट कर दिया है कि अब भारत किसी प्रकार के नुक्लियर धमकी को बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने बयान में साफ कहा है कि "टेरर और टॉक साथ नहीं चल सकते। टेरर और ट्रेड का पाखंड अब नहीं चलेगा। जब-जब खून बहेगा, पानी का रास्ता बंद होगा। ऑपरेशन सिन्दूर स्थगित है, पर समाप्त नहीं। पाकिस्तान से बात होगी तो अब सिर्फ पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर ही होगी या फिर आतंकवाद पर।

नेपाल ने भारत के आतंकवाद विरोधी संघर्ष का समर्थन किया

गोरखा टाइगर राणा की चेतावनीः नेपाल को इस्लामी आतंक की जड़ें नहीं बनने देंगे

लेखकः डॉ. परविंदर सिंह रिपोटः रविंद्र आर्य

इंडिया / नेपाल सीमापार आतंकवाद की कड़ी निंदा करते हुए और पड़ोसी देशों के विरुद्ध किसी भी गतिविधि के लिए अपनी भूमि के उपयोग के प्रति सख्त रुख अपनाते हुए नेपाल ने भारत के आतंकवाद विरोधी रुख का पुरजोर समर्थन किया है। नेपाल के प्रधानमंत्री के. पी. शर्मा ओली ने दो टूक कहा कि किसी भी संघर्ष-प्रेरित संगठन को नेपाल की धरती से किसी अन्य राष्ट्र के खिलाफ संचालित होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने वैश्विक शांति के प्रति नेपाल की अटूट प्रतिबद्धता दोहराई और आतंकवाद के सभी स्वरूपों की स्पष्ट निंदा की। पहलगाम आतंकी हमले में एक नेपाली नागरिक की हत्या को उन्होंने नेपाल के लिए भी एक गहरी क्षति बताया।

नेपाल के विदेश मंत्रालय ने 8 मई को बयान जारी कर भारत और पाकिस्तान दोनों से संयम बरतने और क्षेत्रीय स्थिरता को प्राथमिकता देने की अपील की। मंत्रालय ने ह्लआतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियोंह्व के खिलाफ अपनी नीति दोहराई और भारत के साथ एकजुटता व्यक्त की। मंत्रालय ने यह भी आश्वस्त किया कि नेपाल की भूमि का उपयोग किसी भी शत्रुतापूर्ण गतिविधि के लिए नहीं होने दिया जाएगा।

नेपाल के प्रमुख राजनीतिक दलों ने भी भारत के इस संघर्ष में समर्थन जताया। नेपाली कांग्रेस (ठउ) के प्रवक्ता प्रकाश शरण महत ने कहा कि आतंकवाद के विरुद्ध भारत की कार्रवाई न्यायसंगत है। ठउ के महासचिव जीवन परियार ने स्पष्ट किया कि पार्टी वैश्विक स्तर पर आतंक के खिलाफ किसी भी कार्रवाई का समर्थन करती है। राष्ट्रपति के राजनीतिक सलाहकार और कांग्रेस नेता सुनील थापा ने आतंकवाद को धार्मिक मूल्यों का विकृतिकरण बताते हुए इसकी घोर निंदा की। मधेस प्रांत से कांग्रेस नेता महेंद्र यादव और मुख्यमंत्री सतीश सिंह ने भी भारत के साथ खड़े होने की घोषणा की।

गोरखा की आवाजः हम भारत-नेपाल की सुरक्षा के प्रहरी हैं

भारतीय सेना की गोरखा रेजिमेंट में दशकों तक सेवा दे चुके और अब राष्ट्रवादी मुखरता के प्रतीक बने पूर्व सैनिक टाइगर राणा ने इस्लामी आतंकवाद को लेकर चेतावनी दी है। उन्होंने कहा, ह्लअब समय आ गया है कि नेपाल के गोरखा रिटायर्ड सैनिक एकजुट होकर इस्लामी आतंक की जड़ें नेपाल में जमने से रोकें।

टाइगर राणा ने कहा कि भारत इस्लामी आतंकवाद का दशकों से केंद्र रहा है और नेपाल की भौगोलिक नजदीकी का लाभ उठाकर आतंकी गुट नेपाल-भारत सीमा के जरिए जासूसी, नेटवर्किंग और घुसपैठ की गतिविधियों को अंजाम देते रहे हैं। उन्होंने चिंता जताई कि नेपाल में अवैध मस्जिदों और मदरसों का निर्माण एक सुनियोजित ह्लजिहादी योजनाह्व का हिस्सा है, जो पाकिस्तान समर्थित प्रॉक्सी समूहों और स्लीपर सेल के रूप में सक्रिय हो सकते हैं।

ह्लमैं एक गोरखा सिपाही हूं। भारत और नेपाल, दोनों मेरे देश हैं। मुझे चिंता है कि आतंकवाद धर्म की आड़ में अधर्म की लड़ाई लड़ता है,

दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित सफल टैलेंट स्काउटिंग इवेंट ने पूरे भारत से छात्रों को आकर्षित किया

दैनिक समाज जागरण मुख्य संवाददाता

दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी ने 6 और 7 मई, 2025 को त्यागराज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में अपना वार्षिक टैलेंट स्काउटिंग इवेंट सफलतापूर्वक आयोजित किया। इस वर्ष के आयोजन में भारत भर के 10 से अधिक राज्यों से प्रभावशाली भागीदारी देखी गई, जो दिल्ली स्पोर्ट्स स्कूल की तेजी से बढ़ती मान्यता को दर्शाती है।

दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्देश्य कक्षा 6वीं से 9वीं और 11वीं के छात्रों के लिए परीक्षण आयोजित करना था। पहले दिन बॉक्सिंग, तैराकी, भारोत्तोलन और कुश्ती के लिए लेवल 1 और लेवल 2 टेस्ट पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया गया, जबकि दूसरे दिन तीरंदाजी, शूटिंग, टेबल टेनिस और लॉन टेनिस के लिए टेस्ट शामिल थे। दोनों दिन एथलेटिक्स और बैडमिंटन के ट्रायल आयोजित किए गए, जिन्हें कक्षा-वार विभाजित किया गया - कक्षा 6, 7 और 11 के लिए पहला दिन और कक्षा 8 और 9 के लिए दूसरा दिन। युवा खेल प्रेमियों ने इन सभी विषयों में अपने कौशल का प्रदर्शन बड़े

उत्साह के साथ किया।

प्रतिभागियों ने एक व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया से गुजरा जिसमें उन्नत उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके आयोजित 11 मोटर गुणवत्ता परीक्षण शामिल थे, साथ ही खेल-विशिष्ट मूल्यांकन भी किए गए। इस कठोर दृष्टिकोण का उद्देश्य भारत में खेलों के मानक को बढ़ाने के दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के मिशन के अनुरूप उभरती हुई खेल प्रतिभाओं की पहचान करना और उनका पोषण करना था।

सकारात्मक माहौल को और बढ़ाते हुए, कई छात्रों के साथ उनके माता-पिता या अभिभावक भी थे, जिन्होंने ट्रायल देखा और प्रतिभागियों के लिए किए गए सुचारू संचालन और विचारशील व्यवस्थाओं की सराहना की। सुव्यवस्थित प्रक्रिया और एथलीट-अनुकूल वातावरण की सभी उपस्थित लोगों ने व्यापक रूप से प्रशंसा की।

यह कार्यक्रम युवा एथलीटों के लिए अपनी क्षमता दिखाने के लिए एक मंच और प्रतिष्ठित दिल्ली स्पोर्ट्स स्कूल में प्रवेश पाने का मार्ग दोनों के रूप में कार्य करता है। स्कूल एक एकीकृत कार्यक्रम प्रदान करता है जिसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आवासीय सुविधाएँ और विश्व स्तरीय खेल अवसंरचना तक पहुँच शामिल है - इन सभी का उद्देश्य भारत में खेल आइकन की अगली पीढ़ी का पोषण करना है।

दिल्ली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी युवा एथलीटों को समर्थन और सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, यह सुनिश्चित करते हुए कि उन्हें अपने चुने हुए खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन और संसाधन प्राप्त हों।

श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ ने की दिल्ली की मुख्यमंत्री से मांग श्री गुरु रविदास जी के नाम पर हो स्कूल,कॉलेज, अस्पताल,मैट्रो स्टेशन का नाम।

संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास विश्व महापीठ के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री दुष्यंत कुमार गौतम के नेतृत्व में पीठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरजीत कुमार ; राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री धर्मवीर ; राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजवीर सिंह ; दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री मनोज कुमार आजाद ; संगठन महामंत्री प्रो. मनोज कुमार कैन;महामंत्री श्रीमती सुनीता पॉल उपाध्यक्ष श्री सोहनबीर कैन ,निर्मल कुमार कैम,श्री अनिल कुमार ,श्री रामस्वरूप जाटव; मंत्री श्रीमती सुमन चौधरी ; श्री मेहर सिंह छालिया तथा श्री गुरु रविदास विश्रामधाम मंदिर देव नगर,करोल बाग के प्रधान श्री गोपाल कृष्ण और उनके साथी श्री शिवचरण पीपल ,श्री दिनेश कुमार, श्रीमती वीणा जाजोरिया ने दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी और दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री रविन्द्र इंद्रराज एवं श्री मनिंदर सिंह सिरसा जी से केंद्रीय सचिवालय, दिल्ली में एक शिष्टाचार भेंट की ।

पीठ की ओर से मुख्यमंत्री जी को एक निवेदन मांग पत्र दिया गया । इस पत्र में निम्नलिखित चार प्रमुख मांगे रखी गई :-

1 :-जहांगीरपुरी मेट्रो स्टेशन का नाम श्री गुरु रविदास पुरी मेट्रो स्टेशन रखा जाए ।

भारतीय व्यापारी नेताओं ने तुर्की और अजरबैजान के साथ व्यापार बहिष्कार का बड़ा निर्णय लिया

आज दिल्ली में कैट द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में लिया गया निर्णय

आज राजधानी दिल्ली में कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (उअक्ळ) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन में देशभर से आए 125 से अधिक शीर्ष व्यापारिक नेताओं ने सर्वसम्मति से यह संकल्प लिया कि भारत का व्यापारिक समुदाय तुर्की और अजरबैजान के साथ हर प्रकार के व्यापार एवं व्यावसायिक संबंधों का पूर्ण बहिष्कार करेगा, जिसमें यात्रा और पर्यटन भी शामिल है।

व्यापारिक समुदाय ने भारतीय फिल्म उद्योग से भी अपील की है कि वे तुर्की और अजरबैजान में किसी भी प्रकार की फिल्म की शूटिंग न करें, और यदि कोई फिल्म वहाँ शूट होती है, तो व्यापार जगत और आम जनता ऐसे फिल्मों का बहिष्कार करेगी। सम्मेलन में यह भी निर्णय लिया गया कि कोई भी कॉरपोरेट हाउस तुर्की और अजरबैजान में अपने उत्पादों के प्रमोशन की शूटिंग नहीं करेगा। इस सम्मेलन में देश के 24 राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए उन सभी ताकतों का सख्ती से विरोध करने का संकल्प लिया जो भारत के खिलाफ खड़ी हैं।

यह प्रस्ताव तुर्की और अजरबैजान द्वारा हाल ही में पाकिस्तान के पक्ष में खुले समर्थन के संदर्भ में पारित किया गया है, विशेष रूप से उस मानवीय एवं कूटनीतिक सहायता को देखते हुए जो भारत, और विशेषकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, ने संकट के समय इन देशों को प्रदान की थी। सभा को संबोधित करते हुए उअक्ळ के महासचिव एवं सांसद श्री प्रवीण खंडेलवाल ने कहाः

ह्लयह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि तुर्की और अजरबैजान, जिन्होंने भारत की सद्भावना, सहायता और रणनीतिक समर्थन का लाभ उठाया, आज पाकिस्तान का साथ दे रहे हैं झ्र जो विश्व स्तर पर आतंकवाद के समर्थन के लिए जाना जाता है। उनका यह रुख भारत की संप्रभुता और राष्ट्रीय हितों पर आघात है और साथ ही 140 करोड़ भारतीयों की भावनाओं का भी अपमान है।

सम्मेलन में यह भी कहा गया कि तुर्की द्वारा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बार-बार भारत विरोधी बयान देना और पाकिस्तान की बात का समर्थन करना अस्वीकार्य है, जबकि अजरबैजान का तुर्की के साथ खड़ा होना और पाकिस्तान के पक्ष में सार्वजनिक बयान देना भारत की दोस्ती और सहयोग के प्रति अनादर दशार्ता है। उअक्ळ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बी. सी. भरतिया ने कहा कि व्यापारिक समुदाय ने दोनों देशों के प्रति अपनी तीव्र नाराजगी और असंतोष व्यक्त किया है और उनकी नीतियों को ह्लअकृतज्ञ और भारत विरोधीह्व बताया। सम्मेलन में सर्वसम्मति से यह तय किया गया कि ऐसे देशों को भारत से किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग या व्यापारिक लाभ नहीं मिलना चाहिए।

व्यापारियों ने भारत सरकार द्वारा तुर्की की कंपनी की सुरक्षा मंजूरी रद्द करने के निर्णय का स्वागत किया, जो भारत के नौ प्रमुख हवाई अड्डों पर सेवाएं प्रदान कर रही थी। यह निर्णय राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में लिया गया है।

मुख्य निर्णयः

1. तुर्की और अजरबैजान के उत्पादों का देशव्यापी बहिष्कारः
भारत के व्यापारी अब तुर्की और अजरबैजान से आयात-निर्यात बंद करेंगे।

2. व्यापारिक संबंधों पर पूर्ण विरामः
भारतीय निर्यातकों, आयातकों और व्यापारिक प्रतिनिधिमंडलों को इन देशों की कंपनियों या संस्थानों के साथ किसी भी प्रकार की व्यावसायिक साझेदारी से रोका जाएगा।

प्राथमिक विद्यालय के कायाकल्प के लिए 22 लाख रुपए हुआ आवंटित

ऊर्जांचल संवाददाता मु० हफीज फुलील/ दैनिक समाज जागरण

अनपरा/ सोनभद्र। नगर पंचायत अनपरा के वार्ड नं 08 बल्लभभाई नगर मोहल्ला मुडिसेमर में स्थित प्राथमिक विद्यालय पूरी तरह से जर्जर हो चुकी हैं। जर्जर स्थिति को सुधारने के लिए नपं महत्वकांक्षी योजना की ओर से तकरीबन 22 लाख रुपये आवंटित किया गया है। स्कूल के कमरे की छत जर्जर होने की वजह से विद्यार्थियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। जर्जर क्लास रूम में बच्चे पढ़ने को मजबूर थे। प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य ने एक लिखित पत्र जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को देकर बताया कि विद्यालय की दोनों कमरा पूरी तरह से जर्जर हैं। यह भवन किसी भी समय गिर सकता हैं। बड़ी दुर्घटना होने की आशंका हैं। भवन और चारदीवारी के निर्माण कराने की मांग किया था। पत्र पर शिक्षा विभाग की टीम ने मौके पर जांच किया विद्यालय की दोनों कमरा जर्जर अवस्था मे मिला। इस प्राथमिक विद्यालय का भवन, शौचालय और चारदीवारी निर्माण की आवश्यकता है। जो भवन जर्जर हो चुकी हो उस भवन का कायाकल्प की क्या जरूरत हैं यह खेल समझ के परे हैं। नगर पंचायत द्वारा कायाकल्प किया जा रहा हैं। विद्यालय के नव निर्माण की आवश्यकता हैं। नपं द्वारा 22 लाख रुपये आवंटित किये गये हैं आवंटित की गयी राशि में विद्यालय की चारदीवारी और शौचालय का भी निर्माण किया जायेगा। नगर वासियों के मुताबिक नगर पंचायत विद्यालय की कायाकल्प का निविदा निकाल कर सरकारी धनो का बंदर बाट किया जा रहा हैं।और सरकार की छवि को धूमिल किया जा रहा हैं।

वार्डों में लगा कूड़ों का अम्बार, जिंदगी जीना हुआ दुश्वार।

ऊर्जांचल संवाददाता मु० हफीज फुलील/ दैनिक समाज जागरण

अनपरा/ सोनभद्र। प्रदेश की सबसे बड़ी नपं अनपरा के वार्डों में कचरा का ढ़ेर लगा है। नगर वासियों के मुताबिक वार्ड 2 भगतसिंह नगर मोहल्ला डिबुलगंज और वार्ड 8 बल्लभभाई नगर व वार्ड 12 में तकरीबन एक माह से कचरा वाहन नहीं आ रही हैं, जिससे प्रतिदिन घरों से निकलने वाला कचरा डस्टबिन में भर गया हैं और बदबू आ रही हैं। एक तरफ जहां केंद्र सरकार की पहल पर जगह-जगह स्वच्छ भारत अभियान चलाकर जागरूक कर रही हैं। लेकिन इसके बाद भी नगर के गली-मोहल्लों के पास कचरे के ढ़ेर देखने को मिल रहे हैं। नपं में साफ-सफाई का बहुत बुरा हाल है। नगर पंचायत तमाम दावे वादे करता हैं कि नगर स्वच्छ हैं। जमीनी हकीकत कुछ अलग बया कर रही हैं।नपं के कई वार्डों में कचरे का ढेर लगा हुआ है। जिससे मच्छरों का प्रकोप बढ़ रहा है। साथ ही गंभीर बीमारियों के फैलने की आशंका बनी हुई है। नगर पंचायत द्वारा नगर की सफाई व्यवस्था पर हर महीने करोड़ों रुपये खर्च किए जा रहे हैं, लेकिन इसके बाद भी नगर पंचायत के वार्डो में सफाई की व्यवस्था चरमरा गई है।नगर पंचायत के अधिकारियों द्वारा इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं करने से चारों ओर गंदगी का आलम है। साथ ही नालियों से कचरा नहीं निकालने से मोहल्ले में खुलकर सांस लेना भी दुभर हो गया है। भगतसिंह नगर वार्ड 2 एवं वार्ड के सभासद प्रतिनिधि ने बताया कि करीब एक महीने से कचरा वाहन नहीं आ रही से जिसके कारण वार्डो से कचरा नहीं उठाया जा रहा हैं जिसकी लिखित शिकायत अधिशासी अधिकारी को दिया गया हैं वार्ड 8 बल्लभभाई नगर के सभासद अनिल भारती ने बताया कि कचरे वाहन का टायर फट जाने से नजदीकी एजेंसी में वाहन खड़ी हैं। ईओ से बात हुई हैं बजट नहीं होने की दशा में कचरे वाहन का टायर नहीं बदली जा रही हैं।इस पूरे मामले पर जब ईओ अनपरा से बात करने का प्रयास किया तो उनका सीयूजी नंबर इनकमिंग की व्यवस्था उपलब्ध नहीं बताया न0पं0 अध्यक्ष विश्राम प्रसाद ने फोन रिसीव नहीं किया।

थाना कोन पुलिस ने 02 पशु तस्कर को किया गिरफ्तार, कुल 08 राशि गोवंश को किया बरामद।

दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) व क्षेत्राधिकारी ओबरा के पर्यवेक्षण में अपराध एवं अपराधियों व गौ-तस्करी पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत दिनांक-15.05.2025 को थाना कोन पुलिस द्वारा थाना क्षेत्र के समइलवा पहाड़ी व जंगलों के रास्ते से होते हुए झारखण्ड व पश्चिम बंगाल गोवंश को बेचने हेतु ले जा रहे 08 राशि गोवंश के साथ 02 नफर अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया । उपरोक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बन्ध में थाना कोन पर मु0अ0सं0-117/2025 धारा 3/5ए/8 गोवध निवारण अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया है। अग्रेतर विधिक कार्यवाही की जा रही है।

गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-
1.सकेन्द्र चौधरी पुत्र मंदकेश्वर चौधरी निवासी ग्राम करके, थाना डंडई, जनपद गढ़वा, झारखण्ड।
2.मुन्नी यादव विदेशी यादव निवासी ग्राम करके, थाना डंडई, जनपद गढ़वा, झारखण्ड।

गिरफ्तारी करने वाली टीम का विवरण- 1.प्रभारी निरीक्षक गोपाल जी गुप्ता, 2.उ0नि0 वंशनारायण राय, चौकी प्रभारी बागेसोती, 3.उ0नि0 धर्मदेव यादव, 4.हे0का0 विद्या यादव, का0 आकाश यादव, का0 अभय कुमार, का0 अविनाश कुमार, थाना कोन, जनपद सोनभद्र।

तेज रफ्तार ऑटो अनियंत्रित होकर पलटने से मां बेटे की हुई मौत, आठ घायल

दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। पन्नूगंज थाना क्षेत्र के बैलौड़ी गांव के पास शुक्रवार को एक तेज रफ्तार ऑटो अनियंत्रित होकर पलट गया हादसे में मां बेटे की मौके पर ही मौत हो गई जबकि आठ लोग गंभीर रूप से घायल हो गए बताया जा रहा है कि ऑटो राबर्ट्सगंज से सवारियां लेकर रामगढ़ जा रहा था जैसे ही वह बैलौड़ी गांव के पास पहुंचा अचानक असंतुलित होकर पलट गया जिससे अफरा तफरी मच गई। ऑटो में दो छात्राएं भी सवार थी । छात्राएं जिला मुख्यालय से समाज कल्याण विभाग द्वारा समाज कल्याण मंत्री के हाथों से मिली साइकिल भी आती से लेकर आ रही थी। दोनों छात्राओं की साइकिल टूट गई। हालांकि इस दुर्घटना में एक छात्रा को मामूली चोट आई है । वही इस हादसे में शाहपुर निवासी विश्वनाथ 60 वर्ष पुत्र स्वर्गीय रामसनेही और उनकी मां सम्पत देवी 80 वर्ष पत्नी स्वर्गीय रामसनेही की मौके पर ही मौत हो गई जबकि ऑटो में सवार पारस 60 वर्ष पुत्र किशुन निवासी सरयी कुमार 40 वर्ष पुत्र छोटू निवासी करवनिया कमलाकांत 60 वर्ष पुत्र कांता निवासी सरयी रामआधार 50 वर्ष पुत्र बुधीराम निवासी शाहपुर कमला 50 वर्ष पुत्र बहादुर निवासी बिजवार थाना रायपुर किरण 8 वर्ष पुत्री कमला निवासी बिजवार मंजू 25 वर्ष पत्नी बाबूलाल निवासी शिवगढ़ घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पन्नूगंज पुलिस ने सभी घायलों को एम्बुलेंस की मदद से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तियरा चतरा भिजवाया जहां डॉक्टरों ने विश्वनाथ और सम्पत देवी को मृत घोषित कर दिया बाकी घायलों का प्राथमिक उपचार जारी है पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और आगे की कार्रवाई की जा रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि ऑटो में क्षमता से अधिक सवारियां थीं जिससे वह असंतुलित होकर पलट गया फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

आदित्य बिड़ला पब्लिक स्कूल की साधना सिंह 98.4% अंक अर्जित कर 10 वीं कक्षा में स्कूल टॉपर बनीं

ऊर्जांचल संवाददाता मु० हफीज फुलील/ दैनिक समाज जागरण

अनपरा/ सोनभद्र। सीबीएसई बोर्ड द्वारा घोषित परीक्षाफल में हिंडालको रेनुसागर के आवासीय परिसर में स्थित आदित्य बिड़ला पब्लिक स्कूल रेनुसागर का 10 वीं कक्षा का परिणाम शत प्रतिशत रहा। विद्यालय की छात्रा साधना सिंह ने 98.4% अंक अर्जित कर 10वीं में टॉप किया, तो यशश्वी थर्ड एवं तनिष्का वर्मा ने 97.8% अंक प्राप्त करके संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान पर कब्जा किया, वहीं श्रीनिधि बाजपेई ने 95.8% के साथ तृतीय स्थान हासिल किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुनील कुमार सिंह ने सभी उत्तीर्ण छात्रों, अभिभावकों तथा शिक्षकों को बधाई दी। प्रथम तीन स्थान हासिल करने वाले छात्रों के अभिभावकों ने बच्चों को मिठाई खिलाकर प्रसन्नता जाहिर करते हुए उनकी सफलता का श्रेय प्रधानाचार्य व शिक्षकों के साथ बच्चों की लगन को दिया ।विद्यालय के 44 छात्रों में से कुल 6 छात्रों ने 95% से अधिक अंक प्राप्त करके विद्यालय को गौरवान्वित किया। वही 12 छात्र 90% से अधिक अंक प्राप्त किये। इस अवसर पर विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष आर पी सिंह एवं प्रबन्धक शैलेश विक्रम सिंह ने संयुक्त रूप से बच्चों शिक्षकों एवं अभिभावकों को बधाई दी।

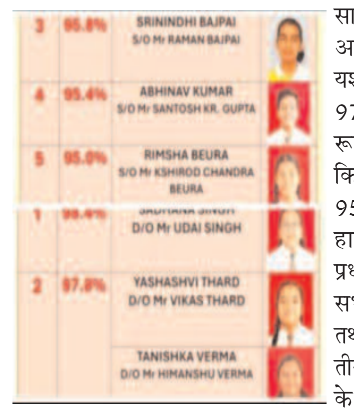

रास पहाड़ी की पत्थर खदानें बन गई है मौत की कुंआ, तय मानक नियमों की जबरदस्त अनदेखी

ब्यूरो चीफ सोनभद्र/ दैनिक समाज जागरण।

सोनभद्र। ओबरा क्षेत्र के रास पहाड़ी इलाके में मे.साई बाबा स्टोन वर्कस द्वारा संचालित पत्थर खदान से जुड़ी समस्याएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। पहले से ही जानलेवा रास्तों, नियमों के उल्लंघन और ब्लास्टिंग के धुएं से त्रस्त स्थानीय लोगों के लिए आज फिर एक नई चिंता सामने आई है। यह ताजा घटना प्रशासन और खनन विभाग की लगातार अनदेखी का नतीजा है। खदान में सुरक्षा मानकों का पालन नहीं किया जा रहा है और खतरनाक रास्तों पर भारी वाहनों का संचालन जारी हैं ।उनका कहना है कि जब तक प्रशासन इस अवैध और खतरनाक खनन पर लगाम नहीं लगाता, तब तक इस तरह की जानलेवा घटनाएं होती रहेंगी। उन्होंने एक बार फिर जिला प्रशासन और खनन विभाग से तत्काल हस्तक्षेप करने और खदान में सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है, ताकि भविष्य में किसी भी अप्रिय घटना को टाला जा सके ।इस ताजा घटनाक्रम ने रासपहाड़ी क्षेत्र में चल रहे सुरक्षा मानकों के उल्लंघन के मुद्दे को एक बार फिर सुर्खियों में ला दिया है। अब यह देखना होगा कि प्रशासन इस पर क्या कार्रवाई करता है और कब तक इस "मौत के कुएं" में काम करने वाले मजदूरों और आसपास रहने वाले लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है ।मे.साई बाबा स्टोन वर्कस द्वारा संचालित पत्थर खदान लगातार गंभीर आरोपों और विवादों के केंद्र में बनी हुई है। अंजू राय, जिनके पति धीरज राय हैं, के स्वामित्व वाली यह खदान आराजी संख्या 5414 में 3.43 एकड़ क्षेत्र में फैली है, जिसकी लीज 31 मार्च 2016 से 30 मार्च 2026 तक है। सूत्रों के माने तो यह खदान अब एक "मौत का कुआं" बन चुकी है, जहां खनन नियमों का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा है और इस खतरनाक माहौल में काम करने वाले मजदूरों के साथ-साथ आसपास रहने वाले निर्दोष नागरिकों की जान भी लगातार खतरे में डाली जा रही है। खदान तक पहुंचने और निकलने का एकमात्र रास्ता लगभग 12 फीट की सीधी और अत्यंत खतरनाक चढ़ाई वाला है। विश्वसनीय सूत्रों की मानें तो इस दुर्गम रास्ते पर चढ़ते समय भारी वाहनों के इंजन बंद हो जाने या या ब्रेक फेल हो जाना उनमें किसी भी प्रकार की तकनीकी खराबी आने की प्रबल आशंका बनी रहती है। स्थानीय लोगों का यह दृढ़ विश्वास है कि इस मौत के कुएं से निकलते हुए इस खड़ी चढ़ाई पर कभी भी कोई बड़ा और जानलेवा हादसा हो सकता है। उनका यह सवाल पूरी तरह से जायज है कि जब जिम्मेदार

और उच्च पदस्थ अधिकारी इस तरह के जानलेवा खनन कार्य को संचालित करने की अनुमति दे रहे हैं, तो क्षेत्र में लगातार हो रहे दुर्घटनाओं का सिलसिला आखिर कब और कैसे थमेगा। खनन माफिया द्वारा किए जा रहे बेलगाम और अंधाधुंध खनन के कारण क्षेत्र में पहले ही जलस्तर काफी नीचे चला गया है, जिससे इलाके में पानी की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। अब इस जानलेवा और खतरनाक चढ़ाई ने मजदूर लोगों की मुश्किलें और भी कई गुना बढ़ा दी हैं ।सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वायरल हो रहे वीडियो में इस खड़ी चढ़ाई की भयावहता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जिसे ऊपर से देखने मात्र से ही आम लोगों को चक्कर आने लगते हैं। खदान संचालक ऐसे जानलेवा और अत्यधिक जोखिम भरे माहौल में काम करने वाले गरीब मजदूरों और ड्राइवरों का जमकर शोषण कर रहे हैं। चंद रुपयों की मामूली बख्शीश के लालच में ये ड्राइवर भी अपनी जान जोखिम में डालकर इन खतरनाक रास्तों पर भारी-भरकम वाहन चलाने के लिए मजबूर हैं। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि इस गंभीर और चिंताजनक स्थिति पर तमाम जिम्मेदार अधिकारी रहस्यमय चुप्पी साधे हुए हैं, जो कई संदेहों को जन्म देती है। अंदर की खबरों के अनुसार, इस खदान में बिना किसी सुरक्षा मानक आने जाने का एक ही रास्ता और बेंच बनाए ही अंधाधुंध तरीके से खनन कार्य लगातार जारी है, जिससे यह खड़ी चढ़ाई और भी ज्यादा खतरनाक हो गई है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय लोगों ने इस खदान में ब्लास्टिंग के नियमों के घोर उल्लंघन का भी एक और गंभीर आरोप लगाया है। विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार, खनन क्षेत्र में ब्लास्टिंग करने का निर्धारित और आधिकारिक समय दोपहर 1:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे के बीच तय किया गया है। खदान संचालक तमाम नियमों और कानूनों को ताक पर रखकर दोपहर 2:00 बजे के बाद भी ब्लास्टिंग करते हैं। इस अनियमित और पूरी तरह से गैरकानूनी ब्लास्टिंग के कारण आसमान में कई किलोमीटर तक जहरीले धुएं का गुबार फैल जाता है, जिससे आसपास रहने वाले स्थानीय निवासी पर्यावरण को सांस लेने में तकलीफ, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उनका कहना है कि उन्होंने अपनी खून-पसीने की गाढ़ी कमाई का एक-एक रुपया जोड़कर ओबरा में अपने छोटे-छोटे घर बनाए थे ताकि वे शांति और सुकून की जिंदगी जी सकें, लेकिन यहां लगातार हो रही अंधाधुंध ब्लास्टिंग के कारण उनके घरों में गहरी दरारें आ रही हैं और उन्हें भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। इतना ही नहीं, ब्लास्टिंग के कारण उड़ने वाली धूल की मोटी परत उनके घरों की छतों पर और आसपास हर जगह जमी हुई देखी जा सकती है, जिससे उनका सामान्य जीवन जीना भी दूभर हो गया है। उनका यह बिल्कुल जायज सवाल है कि इस भारी नुकसान की भरपाई आखिर कौन करेगा। सरकार तो राजस्व ले ले रहा है खदान मालिक खदान सब फोल्डर निकाल कर अपना पैसा निकाल ले रहा है। आखिर कब तक ले यह सिलसिला चलेगा सबसे बड़ा और गंभीर सवाल यह है कि इस मौत के कुएं जैसी खतरनाक खदान को चलाने की अनुमति आखिर कौन दे रहा है और इसके पीछे किसका शक्तिशाली संरक्षण है। इस गंभीर और चिंताजनक स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए बताया कि बार-बार संबंधित विभागों में शिकायत करने के बावजूद इस पर कोई भी ठोस और प्रभावी कार्रवाई नहीं की जा रही है। उन्होंने स्थानीय प्रशासन से पुरजोर मांग की है कि इस जानलेवा खनन और ब्लास्टिंग पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाई जाए और खनन नियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाए, ताकि खदान में काम करने वाले गरीब मजदूरों, ड्राइवरों और क्षेत्र में रहने वाले निर्दोष नागरिकों की बहुमूल्य जान और स्वास्थ्य की रक्षा की जा सके। अब यह देखना बेहद महत्वपूर्ण होगा कि जिला प्रशासन और संबंधित विभाग इस गंभीर मामले पर कब जागते हैं और कब तक इस "मौत के कुएं" और नियमों के खुलेआम उल्लंघन पर प्रभावी लगाम लगाते हैं। स्थानीय लोगों का यह भी आरोप है कि इस खदान में अंधाधुंध ब्लास्टिंग करके सीमा से कहीं ज्यादा बोल्डर निकाले जा चुके हैं, फिर भी मिली-जुली सरकार में कुछ प्रभावशाली लोगों के संरक्षण के कारण खतरनाक और डेंजर जोन एरिया में भी जबरन घुसकर लोडिंग का काम किया जा रहा है।

अल्ट्राटेक फैक्ट्री में स्टॉक कचरे से फैलने वाली बदबू से, नगर में तरह तरह बीमारी फैलने की आशंका

दैनिक समाज जागरण।

डाला/ सोनभद्र। अल्ट्राटेक सीमेंट यूनिट डाला में फैक्ट्री चलाने के लिए बाहर से मंगाई जा रहे हैं कूड़ा करकट से होने वाली बदबू द्वारा नगरवासी परेशान है जिससे निकालने वाली बदबू से तरह-तरह की बीमारी फैलने का खतरा बढ़ गई है ऐसे में नगर वासियों ने जिला प्रशासन को संज्ञान में लेने के लिए पत्रक भी दिया लेकिन कोई कार्रवाई न होने से नगर में सरकार के क्रियाकलापों पर उंगली उठने लगी। आज कई वर्षों से अल्ट्राटेक सीमेंट यूनिट द्वारा फैक्ट्री चलाने के लिए बाहर से मंगाए जाने वाले कूड़ा करकट को जलाया जा रहा है जिससे जलने के कारण मीथेन गैस व अन्य रासायनिक गैस निकलने की वजह से क्षेत्र में स्वास की बीमारी, शुगर , बीपी की बीमारियां घर करने लगे हैं ऐसे में देखा जाए तो नगर वासियों के विरोध को देखते हुए नगर पंचायत अध्यक्ष ने भी अपर जिला अधिकारी सोनभद्र को पत्रक के माध्यम से समस्त सभासदों के मौजूदगी में आवेदन दिया लेकिन अभी तक कार्रवाई न होने से नगर वासियों ने अपने घर की दीवारों पर अल्ट्राटेक कंपनी का विरोध करते हुए लिखवाना शुरू कर दिया कि हम सभी नगरवासी अल्ट्राटेक द्वारा हो रहे कूड़े की बदबू व प्रदूषण से परेशान है इसका जल्द से जल्द निजात नही मिलने पर स्थानियों ने बताया कि बहुत ही जल्द प्रदर्शन भी किया जाएगा।

सदर क्षेत्राधिकारी ने पैदल गश्त करते हुए मोडिफाई साइलेंसर गाड़ियों पर कसे शिकंजा

दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में शासन की मंशा के अनुरूप कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने लाइन ऑर्डर बेहतर बनाने के लिए क्षेत्राधिकारी सदर जनता की समस्याओं का निजात दिलाने के लिए हमेशा क्षेत्र में मौजूद रह कर जनता व व्यापारियों से रूबरू हो रहे हैं रोज की भांति स्वयं कस्बे में पैदल ग्रस्त करते हुए सुरक्षा का भरोसा दिलाते हुए गलत तरीके से चल रहे गाड़ियों पर लगातार शिकंजा कस रहे हैं सदर क्षेत्राधिकारी रणधीर कुमार मिश्रा पन्नूगंज प्रभारी निरीक्षक दिनेश प्रकाश पांडेय पूरी तरह एक्शन में आ गए सदर क्षेत्राधिकारी रणधीर कुमार मिश्रा व पन्नूगंज थाना प्रभारी निरीक्षक दिनेश प्रकाश पांडेय के द्वारा रामगढ़ कस्बे में पैदल ग्रस्त करते हुए आमजन को सुरक्षा का भरोसा दिलाते हुए गाड़ियों का चेकिंग अभियान चलाया गया जिसमें पैदल ग्रस्त के दौरान बुलेट में मॉडिफाई साइलेंसर लगाकर जनता में दबाव बनाने वाले व भौकाल जमाने वाले गाड़ियों का बैक रबर निकलवाते हुए हिदायत दी गई दोबारा पकड़े जाने पर कार्रवाई की जाएगी वहीं पैदल ग्रस्त करते हुए व्यापारियों को चेतावनी दी गई कि किसी भी व्यापारियों के द्वारा रामगढ़ कस्बे में रोड पर अतिक्रमण न किया जाए अगर कोई अतिक्रमण करता है तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी पैदल ग्रस्त अभियान पन्नूगंज थाना से होते हुए रामगढ़ पचोखर रोड नहर से किसान सेवा केंद्र पेट्रोल पंप रामगढ़ तक पैदल गश्त किए पटरियों के दोनों तरफ अतिक्रमण करने वालों पर हिदायत दी गई रामगढ़ के व्यवसायियों को निर्देशित किए की दोबारा रोड के पटरी पर अतिक्रमण ना हो अगर किसी के द्वारा रोड पर अतिक्रमण किया जाता है तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी इस मौके पर मौजूद सदर क्षेत्राधिकारी रणधीर कुमार मिश्रा पन्नूगंज प्रभारी निरीक्षक दिनेश प्रकाश पांडेय पुलिस बल के साथ मौजूद रहे।

जनपद के चारों तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन आज

दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने अवगत कराया है कि शासन की मंशा के अनुरूप मई महीने के तृतीय शनिवार को जनपद के सभी तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन 17 मई ,2025 को किया जायेगा। जिलाधिकारी की अध्यक्षत में तहसील घोरावल में आयोजित सम्पूर्ण समाधान दिवस के मौके पर स्वास्थ्य विभाग द्वारा दिव्यांग प्रमाण-पत्र, आयुष्मान कार्ड, जिला प्रोबेशन विभाग, जिला समाज कल्याण विभाग, दिव्यांगजन शक्तिकरण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं से सम्बन्धित कैम्प/शिविर भी लगाया जायेगा, जिसमें नया पेंशन आनलाईन कराने के कराने के साथ ही पेंशन हेतु के0वाई0सी0 का भी कार्य कराया जायेगा। आयोजित कैम्प के माध्यम से केन्द्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से सम्बन्धित विभाग से जुड़े पात्र लाभार्थी आधार कार्ड, राशन कार्ड, मोबाइल नम्बर (ओ0टी0पी0 हेतु) के साथ स्वयं उपस्थित होकर योजनाओं के लाभ हेतु नया आवेदन, के0वाई0सी0 आदि कार्य करा सकते हैं। जिलाधिकारी ने बताया कि कैम्प में स्वास्थ्य विभाग द्वारा दिव्यांग प्रमाण-पत्र जारी जारी किया जायेगा, जिसके लिए आधार कार्ड, ओ0टी0पी0 के लिए मोबाईल का होना अनिवार्य होगा। इसी प्रकार से दिव्यांगत बोर्ड द्वारा दिव्यांगजनों का नवीन दिव्यांग प्रमाण-पत्र जारी किया जायेगा, जिस हेतु प्रमाण-पत्र बनवाने के लिए आनलाइन आवेदन किये गये फार्म की प्रति, आधार कार्ड की छायाप्रति व दिव्यांगता दशार्ते हुए चार फोटो की आवश्यकता होगी।

दिव्यांगजन जिनका दिव्यांग प्रमाण-पत्र अभी तक नहीं बन पाया है विभाग के वेबसाइट salamban.gov.in पर आनलाइन कराकर तहसील रावटसगंज में उपस्थित होकर दिव्यांग प्रमाण-पत्र प्राप्त कर सकते हैं, जिससे वंचित दिव्यांगजनों को विभाग की योजनाओं का लाभ मिल सकें। जिला प्रोबेशन विभाग द्वारा संचालित योजना पति की मृत्यु उपरान्त निराश्रित महिला पेंशन का लाभ उठा सकते हैं, इस योजना के लाभ हेतु ऐसी महिलाएं जिनके पति की मृत्यु हो चुकी हो तथा उन्हें आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है, को मासिक पेंशन के रूप में 1 हजार रुपए प्रदान की जाती है। मुख्यमंत्री कनया सुमंगला योजना के तहत समान लिंगानुपात स्थापित करने, कन्या भ्रुण हत्या को रोकने, बालिकाओं के स्वास्थ्य व शिक्षा को सुदृढ़ करने, बालिकाओं के परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान करने तथा बालिकाओं के जन्म के प्रति आम जन में सकारात्मक सोच विकसित करने पर लाभ दिये जाने का प्राविधान है। इस योजना के लिए जनपद के निवासी, पारिवारिक वार्षिक आय अधिकतम 3 लाख रुपए तथा परिवार में अधिकतम दो बच्चे हों, को पात्र माना जायेगा, जिसके लाभ हेतु बच्चे और आवेदक का फोटो, बैंक खाते का विवरण, निवास प्रमाण-पत्र, श्रेणीवार आवश्यक जन्म प्रमाण-पत्र, टीकाकरण कार्ड, विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश का प्रमाण तथा आवेदक का आधार कार्ड लाना अनिवार्य होगा। इसी प्रकार से जिला समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित वृद्धावस्था योजना के तहत ऐसे व्यक्ति जो ग्रामीण क्षेत्र हेतु आय 46 हजार 60 रुपए तथा नगरीय क्षेत्र हेतु वार्षिक आयु 56 हजार 460 रुपए से अधिक नहीं होनी चाहिए, ऑनलाइन आवेदन कर लाभ उठा सकते हैं। इसके लाभ हेतु उम्र 60 वर्ष पूर्ण हो, आधार कार्ड, बैंक पासबुक, मोबाइल नम्बर ओ0टी0पी0 हेतु एवं एक पासपोर्ट साइस का फोटो के साथ वेबसाइड Nfbs.upsdc.gov.inपर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजनान्तर्गत राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजनान्तर्गत परिवार के मुख्य कमाऊ व्यक्ति (महिला/पुरुष) जिसकी उम्र 18 वर्ष से अधिक व 60 वर्ष से कम हो, की मृत्यु होने पर 30 हजार की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। ऑनलाइन आवेदन करने हेतु पासपोर्ट साइज का फोटो, आय प्रमाण पत्र ग्रामीण हेतु 46080 व शहरी क्षेत्र में 56460 वार्षिक आय से अधिक न हो, आधार कार्ड, आधार लिंक बैंक पासबुक, पारिवार रजिस्टर की नकल, मृतक के आनलाईन मृत्यु प्रमाण पत्र के साथ मृत्यु तिथि से 1 वर्ष के अन्दर तक विभाग के बेवसाइट Nfbs.upsdc.gov.inपर आवेदन किया जा सकता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक में शासन की परिवर्तनकारी यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा भारत के लिए यह सबसे अच्छा समय है

केंद्रीय मंत्री ने लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी में आईएएस प्रशिक्षुओं, सिविल सेवकों को संबोधित किया ऑपरेशन सिंदूर के प्रौद्योगिकी संचालित युद्ध में "संपूर्ण सरकार" और "संपूर्ण राष्ट्र" का दृष्टिकोण परिलक्षित हुआ, यह क्षमता केवल पिछले 10 वर्षों में हासिल हुई है: डॉ. जितेंद्र सिंह "समानता लाने में प्रौद्योगिकी प्रभावी: डॉ. जितेंद्र सिंह ने सिविल सेवा चयन में समावेशी बदलाव को रेखांकित किया" केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने मसूरी स्थित लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (एलबीएसएनएए) में भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षुओं और सिविल सेवकों को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले एक दशक में शासन में आए परिवर्तनकारी प्रगति का उल्लेख किया। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सेवा प्रदान करने में जनतांत्रिकरण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 से पहले औपनिवेशिक अवशिष्ट मानसिकता प्रशासनिक भूमिकाएं तय कर रही थी लेकिन अब ब्रिटिश काल के कलेक्टर की भूमिका राजा के लिए

बरेली में दिखा देशभक्ति का रंग: ''ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता पर निकली गौरवशाली तिरंगा यात्रा

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। आतंक के खिलाफ भारतीय सेना की बड़ी जीत ह्यऑपरेशन सिंदूरह्ण की सफलता का जश्न पूरे देश की तरह बरेली में भी जोश और गर्व के साथ मनाया गया। इस मौके पर गुरुवार को शहर में भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई, जिसने जनमानस में देशभक्ति की नई ऊर्जा भर दी। डीडी पुरम चौराहे

से शुरू होकर शहीद पंकज अरोड़ा चौक तक पहुंची इस यात्रा में हजारों की संख्या में लोग उमड़ पड़े।

जनसैलाब में तब्दील हुई यात्रा, गूंजे राष्ट्रभक्ति के नारे

हाथों में तिरंगा थामे युवा, बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं जब सड़कों पर निकले, तो पूरा माहौल ह्लभारत माता की जयह्व, ह्लवंदे मातरमह्व और ह्लजय हिंदह्व जैसे नारों से गूंज उठा। देशभक्ति गीतों की धुन पर कदमताल करते लोगों ने वीर जवानों को सम्मानपूर्वक नमन किया। यात्रा का हर पल सेना के शौर्य और बलिदान को समर्पित रहा।

नेता, समाजसेवी और पूर्व सैनिकों ने दी उपस्थिति

इस आयोजन में जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों ने भाग लिया। बरेली सांसद छत्रपाल सिंह गंगवार, कैंट विधायक संजीव अग्रवाल, मेयर डॉ. उमेश गौतम और भाजपा महानगर अध्यक्ष अधीर सक्सेना समेत कई गणमान्य लोगों ने तिरंगे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर यात्रा में भाग लिया। व्यापारी, डॉक्टर, शिक्षक और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि भी इसमें बड़ी संख्या में शामिल हुए।

भारत शौर्य तिरंगा यात्रा नवाबगंज विधानसभा में बड़ी भव्यता व बहुत बड़ी संख्या में निकाली गयी

भारत शौर्य तिरंगा यात्रा नवाबगंज विधानसभा में बड़ी भव्यता व बहुत बड़ी संख्या में निकाली गयी।

भारत शौर्य तिरंगा यात्रा श्री कृष्णा इंटर कॉलेज से प्रारंभ करते हुए बाजार से होते हुए पटेल चौक पर समापन हुआ। हजारों की संख्या में एकत्र हुए लोगों ने हाथों में तिरंगा लेकर हिंदुस्तान जिंदाबाद, भारत माता की जय, भारतीय सेना की जय के नारे लगाए। यात्रा में पूर्व सैनिक, एनसीसी के लोग,सिविल सोसाइटी के लोग, प्रबुद्ध वर्ग, व्यापारी, विभिन्न कॉलेजो के छात्र-छात्रायें, शिक्षकगण, अधिवक्ता, सामाजिक संस्था व बड़ी संख्या में महिलायें व क्षेत्र की जनता ने भारत शौर्य तिरंगा यात्रा में भाग लिया।

यात्रा में सम्मिलित भाजपा जिला अध्यक्ष सोमपाल शर्मा ने कहा की भारत के आन बान शान व शौर्य और पराक्रम का प्रतीक है यह तिरंगा। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदुर की सफलता पर हर भारतीय को गर्व है। भारतीय सेना ने पाकिस्तान के आतंकवादी ठिकानों को जड़ से खत्म करने का काम किया है। हमारी भारतीय सेना का शौर्य पूरी दुनिया देख चुकी है। भारत माता के वीर सपूतों के रहते देश की सरहद को कोई आंख नहीं दिखा सकता। जिन बेटियों का सिंदूर आतंकवादियों ने छीना था हमारी सेना ने उसका बदला ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को अंजाम देकर लिया।

यात्रा में सम्मिलित एमएलसी डॉ जयपाल सिंह व्यस्त ने कहां कि यह भारत शौर्य तिरंगा यात्रा भारतीय वीर सपूतों व भारतीय सेना के शौर्य को सलाम करने के लिए निकाली गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मजबूत नेतृत्व में भारत आज आतंकवाद और उसको पालन पोषण करने वाले पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दे रहा है।

भारत शौर्य तिरंगा यात्रा में प्रमुख रूप से एमएलसी डॉ जयपाल सिंह व्यस्त, जिला अध्यक्ष सोमपाल शर्मा, विधायक डॉ एमपी आर्य, एमएलसी बहोरन लाल मौर्य, जिला पंचायत अध्यक्ष रश्मि पटेल, पवन शर्मा, रविन्द्र सिंह राठौर, राजकुमार शर्मा, पूरण लाल लोधी, विमला शुक्ला, श्रुति गंगवार, नीरेंद्र सिंह राठौर, वीरपाल गंगवार, मेघनाथ सिंह कठेरिया, पूर्व सैनिक जमुना प्रसाद, वीर सिंह, मेवाराम, हरपाल, हरिशंकर गंगवार, चंचल गंगवार, अजय सक्सेना, अंकित माहेश्वरी, राहुल साहू, अभय चौहान, ब्लॉक प्रमुख डॉ आशुतोष गंगवार, रविशंकर गंगवार, भूपेंद्र कुर्मी, अमरेंद्र सिंह गोल्डी, नेहा कन्नौजिया, मीनाक्षी गंगवार, मुकेश राजपूत, सुरजीत यादव, केशव गुप्ता, रिंकू अवस्थी, राजा हिंदुस्तानी, विनोद गुप्ता, देवेंद्र सक्सेना, नीतीश उपाध्याय व एनसीसी, कॉलेज के छात्र छात्राएं, सामाजिक संस्था, शिक्षकगण, अधिवक्ता, व्यापारिक वर्ग के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सपा के राष्ट्रीय महासचिव सलीम इकबाल शेरवानी का बरेली दौरा: बीजेपी पर बोला तीखा हमला, कार्यकर्ताओं में भरा जोश

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय महासचिव और पूर्व केंद्रीय मंत्री सलीम इकबाल शेरवानी ने आज बरेली का एक दिवसीय दौरा किया। इस दौरान उन्होंने आईएमए हॉल में आयोजित पी.डी.ऐ पंचायत में भाग लिया, जिसका आयोजन ई. अनीस अहमद के तत्वाधान में किया गया था।

इस कार्यक्रम में अनेक प्रमुख नेताओं की उपस्थिति रही, जिनमें अति विशिष्ट अतिथि नीरज मौर्य और आदित्य यादव, तथा विशिष्ट अतिथि आबिद राजा, योगेंद्र सिंह तोमर लोधी, राजेश राजपूत और खालिद शेरवानी,मयंक शुक्ला शामिल रहे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शेरवानी ने भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा, देश में महंगाई, बेरोजगारी और सामाजिक असमानता चरम पर है, लेकिन केंद्र सरकार केवल अपने पूंजीपति मित्रों को फायदा पहुँचाने में लगी है। आम जनता की समस्याओं से उनका कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने बीजेपी पर जुमलों की राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा कि पिछले 10 वर्षों में कोई ठोस विकास नहीं हुआ। 2014 में किए गए वादे आज भी अधूरे हैं। किसान, मजदूर, युवा और छोटे व्यापारी सभी परेशान हैं, उन्होंने कहा।

पूर्व मंत्री ने यह भी कहा कि लोकतंत्र की जड़ें कमजोर की जा रही हैं और विपक्ष की आवाज दबाई जा रही है। उन्होंने चेताया कि यह समय सभी लोकतांत्रिक शक्तियों को एकजुट होकर तानाशाही प्रवृत्तियों के खिलाफ खड़ा होने का है।

समाजवादी पार्टी की रणनीति और संगठन को लेकर मार्गदर्शन

शेरवानी ने सपा कार्यकताओं से संवाद करते हुए कहा कि पार्टी जनता के मुद्दों पर लड़ रही है और बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत किया जा रहा है। उन्होंने कार्यकताओं से आह्वान किया कि वे घर-घर जाकर समाजवादी नीतियों को पहुंचाएं और पार्टी की उपलब्धियों को उजागर करें।

बरेली की तहजीब की सराहना

उन्होंने बरेली की गंगा-जमुनी तहजीब की सराहना करते हुए कहा कि यह शहर हमेशा अमन और भाईचारे का प्रतीक रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बेहद कम हैं, जिसे सपा की नीतियों के जरिए दूर किया जा सकता है।

समापन: मिशन मोड में समाजवादी पार्टी

शेरवानी का यह दौरा संकेत देता है कि समाजवादी पार्टी अब चुनाव मोड में आ चुकी है और बीजेपी को सीधी चुनौती देने के लिए तैयार है। उनका दौरा कार्यकताओं को संगठित और प्रेरित करने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है।

सिविल डिफेंस ने खराब सायरनों को ठीक कराने का उठाया बीड़ा : प्रमोद डागर

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। सिविल डिफेंस के उपनियंत्रक राकेश मिश्रा के निदेर्शानुसार डिप्टी चीफ वार्डन रंजीत बशिष्ठ व सहायक उपनियंत्रक प्रमोद डागर के संयुक्त नेतृत्व में बरेली शहर चौकी गढ़ी, चौकी कोहाडाप़ीर, थाना कोतवाली व सिटी पोस्ट आफिस से सायरन उतारने के कार्य में प्रेम पाल, प्रशांत, नेमचंद, व डिवीजन अलखनाथ के डिविजनल वार्डन अन्जय कुमार अग्रवाल अपने प्रखण्ड की टीम के साथ उपस्थित रहे साथ में डिप्टी डिवीजन वार्डन आरक्षित कवलजीत सिंह स्टाफ ऑफिसर फायर हरीश भल्ला पोस्ट वार्डन विशाल सक्सेना, डिप्टी पोस्ट

वार्डन सर्वेश मौर्य, सेक्टर वार्डन सत्प्रीत सिंह, अंकुर अग्रवाल संजय वर्मा, कुमार दीपांशु, नितिन शर्मा, राजीव रस्तोगी व जितेन्द्र कुमार उपस्थित रहे। सबसे बड़ी बात है कि उक्त वार्डनों ने बड़ी ही शीघ्रता से अपने आने की सहमति दी व सम्पूर्ण मनोयोग से कार्य के निष्पादन में सहयोग किया प्रखण्ड की ऐसी वार्डन शक्ति का बहुत बहुत धन्यवाद जो एक आवाज पर अपनी सेवाएं देने को तत्पर रहते हैं। डिविजनल वार्डन अन्जय कुमार अग्रवाल ने सभी को धन्यवाद दिया।

बांसुरी वादिका आहना सचदेव को भारत सरकार की राष्ट्रीय छात्रवृत्ति अवार्ड

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली / हल्द्वानी। बाल्यवस्था से स्वर संगम संगीत संस्थान में बांसुरी वादन की कला सीख रही कु. आहना सचदेव को सीसीआरटी भारत सरकार की राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है। स्वर संगम के आचार्य हरीशचंद्र पंत की सबसे कनिष्ठ शिष्या राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अनेक अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर श्रेष्ठ स्थान अर्जित कर पुरस्कृत हो चुकी है। क्लैसिकल वाईस आफ इंडिया लखनऊ, निधि स्मृति संगीत प्रतियोगिता व उत्तराखंड धात संस्था की प्रतियोगिता में श्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त आहना को सतत लगन व प्रतिभा के बल पर ही इस वर्ष भारत सरकार की राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त हुई है। देश के प्रसिद्ध बांसुरी वादक पं. राजेन्द्र प्रसन्ना द्वारा भी स्वर संगम हल्द्वानी की बाल कलाकार बांसुरी वादिका आहना को अपना दुर्लभ संरक्षण प्रदान किया गया है। आहना को अभिभावक सुमित सचदेव का पूर्ण सहयोग प्राप्त है। स्वर संगम के आचार्यगणों व नगर के कलाकारों ने कु.आहना को बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित की है।

वार्ड नं-71 चक महमूद के क्षेत्रवासी टूटी सड़क और गंदगी जल भराव से परेशान

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। आज वार्ड नंबर 71 नई बस्ती की समस्या लेकर नगर निगम महापौर उमेश गौतम से मिलने पहुंचे। राष्ट्रीय पसमांदा मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के प्रदेश महासचिव शारिक अब्बासी ने बताया की वार्ड नंबर 71 नई बस्ती निकट हरिया की चक्की के पास की गली व चक महमूद अब्बास नगर कामा खान की दुकान से लेकर मोहम्मद हसीब के घर से भूरा के घर तक सड़क और नाली बने ना होने के कारण बरसात में पानी भर जाता है गंदगी फैल जाती है । प्रार्थी व उसकी पत्नी फि जा अली

2023 में पार्षद पद का चुनाव भारतीय जनता पार्टी से लड़े थे चुनाव रैली के दौरान हमने उक्त इलाके को देखा तो वहां पर जल भराव टूटी सड़के हैं वर्ष 2023 के बाद से अब तक कई बार अवगत करा चुके हैं परंतु कोई कार्रवाई नहीं हुई ना मौके पर कोई अधिकारी पहुंचा वार्ड के लोग कई बार शिकायत कर चुके हैं। हसीब मोहम्मद सरफराज राजू समीर जाफर मोहम्मद रेहान आशु फैजान मोनीश नफीस वसीम अनस शमीम नदीम फैज खान फुरकान आदि लोग उपस्थित रहे।

राजश्री कालेज में दो दिवसीय रूरल इंडस्ट्रीलाईजेशन नेशनल सेमीनार का हुआ आयोजन

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

रिठौरा।राजश्री इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी में शुक्रवार को रूरल इंडस्ट्रीलाईजेशन पर दो दिवसीय ऑल इंडिया सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार का शुभारंभ मां सरस्वती का दीप प्रज्ज्वलित कर माल्यार्पण कर किया गया। संस्थान के चेयरमैन राजेन्द्र कुमार अग्रवाल ने बताया कि भारतवर्ष गांवों का देश है अर्थव्यवस्था को ट्रिलियन इकोनॉमी बनाने का स्वप्न ग्रामीण औद्योगिकीकरण एवं विकास के द्वारा संभव है। मुख्य अतिथि प्रीमियर एग्री. फूड्स प्रा॰लि॰ बरेली के महाप्रबन्धक नीरज अग्रवाल ने बताया कि बरेली जिले के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थापित उद्योग-धंधों से सम्पूर्ण उत्तर भारत में विशिष्ट पहचान प्राप्त है। गांवों में

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन को बढावा देते हुए देश के औद्योगिक नेटवर्क से जोड़कर अर्थव्यवस्था को और सुद्दढ़ किया जा सकता है। द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स इंडिया के चेयरमैन प्रो0 पंकज कुमार शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा भारत का अधिकांश भू-भाग गांवों में स्थित है। जिसमें वेशुमार स्थानीय संसाधन, कच्चे माल की उपलब्धता और सस्ता श्रम कृषि के साथ साथ गैर कृषि गतिविधियों को बढ़ाने में सहायक है। जिससे रोजगार और आय सृजित कर तीव्र आर्थिक विकास सम्भव है। सेमीनार में प्रतिभागियों में को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। सेमीनार के आयोजक मंडल में डीन एकेडमिक प्रो॰ साकेत अग्रवाल, निदेशक प्रो॰ अनिल कुमार, डॉ॰ सी.पी. गंगवार, डॉ॰ राम गोपाल, डॉ॰ हितेन्द्र एवं अनुज वर्मा मुख्य भूमिका में रहे।

अरुणाचल प्रदेश नामसाई जिले में ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर तिरंगा यात्रा का आयोजन।

दैनिक समाज जागरण गोरखनाथ गुप्ता।

अरुणाचल प्रदेश के नामसाई जिला प्रशासन ने ह्लऑपरेशन सिंदूरह्व में सामरिक बलों की उल्लेखनीय सफलता के लिए भारतीय सशस्त्र बलों और अर्धसैनिक बलों के प्रति अटूट एकजुटता और आभार व्यक्त करने के लिए गर्व के साथ ह्लतिरंगा यात्राह्व का आयोजन किया, जिसके कारण पाकिस्तान के खिलाफ निर्णायक जीत मिली। इस देशभक्तिपूर्ण कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्र की रक्षा और इसकी संप्रभुता को बनाए रखने में हमारे बलों द्वारा दिखाई गई बहादुरी, समर्पण और रणनीतिक उत्कृष्टता का सम्मान करना था। यात्रा में 186 बीएन सीआरपीएफ के कर्मियों, जनप्रतिनिधियों, स्कूल और कॉलेज के छात्रों और नागरिक समाज के सदस्यों सहित सभी विभागों की उत्साह पुर्वक भागीदारी देखी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अरुणाचल प्रदेश के उपमुख्यमंत्री चौना मीन उपस्थित थे, जिन्होंने सभा को संबोधित किया और राष्ट्रीय एकता के महत्व और शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने में सशस्त्र और अर्धसैनिक बलों की बेजोड़ भूमिका पर प्रकाश डाला।अरुणाचल प्रदेश के उपमुख्यमंत्री चौना मीन के अलावा आईएएस, सेवानिवृत्त कमिश्नर तापे बागरा,नामसाई के जिला उपायुक्त सी.आर. खम्पा,सीआरपीएफ के 186 बटालियन के कमांडेंट डी के सिंह , नामसाई के पुलिस अधीक्षक सांगेय थिनले , सीआरपीएफ के अधिकारी और नामसाई जिले के अधिकारी तथा नागरिक इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

खण्डेलवाल कॉलेज के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों ने धूम-धाम से मनाया गया विदाई समारोह

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

रिठौरा ।खण्डेलवाल कॉलेज में शुक्रवार को अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन बड़े ही उत्साह और हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस अवसर पर कॉलेज के प्राचार्य, सभी विभागाध्यक्ष, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। समारोह की शुरूआत सरस्वती वंदना और दीप प्रज्वलन से हुई। इसके बाद प्राचार्य ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को ये उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। और उनके योगदान की सराहना की। शिक्षकों ने भी अपने विद्यार्थियों के साथ बिताए पलों को साझा करते हुए उन्हें जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। छात्रों ने भी कॉलेज के अनुभव, दोस्ती और शिक्षकों से मिली सीख को याद करते हुए भावुक भाषण दिए। समारोह में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे नृत्य, गीत और नाटक की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। अंत में अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए और मिठाई वितरण के साथ समारोह का समापन हुआ। यह आयोजन सभी के लिए भावनाओं और यादों से भरा रहा, जिसने कॉलेज जीवन की मीठी यादों को और भी खास बना दिया। कार्यक्रम में बायोटैक डिपार्टमेंट से विनर मिस्टर फेयरवैल -रोहन, मिस फयेरवैल समन रहे तथा मिस गौरजियर अलीना व मिस्टर हैंडसम -आर्यन तथा मिस चार्मिंग दीक्षा रही, माईकोबायोलॉजी उपार्टमेंट से विनर मिस्टर फेयरवैल गोविन्द, मित्त फयेरवैल ईशा रही. कार्यकम में बायोटेक डिपार्टमेंट से विनर मिस्टर फेयरवैल रोहन, मिस फयेरवैल समन रहे। मिस दिया ओली तथा श्रुभा त्रिवेदी कार्यक्रम में जजेस के रूप में सहभागिता की। कार्यक्रम में प्रबंधक निदेशक डाक्टर विनय खण्डेलवाल, महानिदेशक डाक्टर अमरेश कुमार, प्राचार्य डाक्टर आर0 के0 सिंह ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। इस मौके निशा दिनकर, डाक्टर फहीम खान, डाक्टर हुमैरा रानी, मिस अनिता पाठक और अर्शिमा खान सहित अन्य प्रवक्तागण मौजूद रहे।

पाकिस्तान से संबंधित कोई भी सोशल मीडिया सामग्री और पोस्ट को शेयर ना करें मुस्लिम नौजवान:दरगाह प्रमुख

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। देश में इस समय जो हालात हैं उन्हे लेकर मरकजे अहल-ए-सुन्नत दरगाह आला हजरत स्थित जामिआ रजविया मंजरे इस्लाम के उलमा और मुफ्ती ए इकराम की एक खुसूसी बैठक हुई। इस संबंध में दरगाह आला हजरत से जुड़े नासिर कुरैशी ने बताया कि मदरसा मंजरे इस्लाम के उलेमा ने बैठक के बाद अपने संयुक्त ब्यान में दरगाह प्रमुख हजरत मौलाना सुब्हान रजा खान(सुब्हानी मियॉ) और सज्जादानशीन हजरत मुफ्ती अहसन मियॉ का पैगाम के हवाले से बताया कि पिछले कुछ समय से भारत व पाकिस्तान के बीच जंग के हालात हैं जो आम हालात से भिन्न होते हैं। जंग के माहौल में बहुत कुछ बदल जाता है। जिस मुल्क के आप नागरिक हैं अगर उस मुल्क पर किसी दूसरे देश ने हमला किया है या उस से जंग के हालात बन जाएँ तो इन तमाम हालात में वहह्व दुश्मन देशह्व की श्रेणी में आता है और ऐसे समय मे उस दुश्मन देश की हिमायत करना उस की तारीफ करना उसकी बातों और उस के पैगाम का आदान प्रदान करना या एक दूसरे को भेजना यह सब जंगी जुर्म के दायरे में आता है जिस से संबन्धित कानून की बहुत सी संगीन धाराएं हैं कि जिनके तहत ऐसे शख्स के खिलाफ मुकदमे दर्ज होते हैं। ये लोग खुद तो कानूनी जाल में फंसते ही है साथ ही अपने परिवार वालों के लिए मुश्किल खड़ी करते है। इसलिए हमारी मुस्लिम नौजवानों से अपील है कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल इस समय बहुत खतरनाक है और अपने आप को हलाकत व परेशानी में डालना है। इस वक्त सोशल मीडिया पर कुछ भी शेयर करने से परहेज करें या फिर कोई चीज शेयर भी करें तो खूब अच्छी तरह देख लें कि उस में कोई गैर कानूनी बात तो नही या देश के दुश्मन मुल्क की उस में हिमायत या तारीफ तो नही।

मुफ्ती मोहम्मद सलीम बरेलवी ने कहा कि मुल्क से मुहब्बत व वफादारी हमारी मजहबी और संवैधानिक जिम्मेदारी है। इस समय वैसे भी मजहब, शरीयत,इस्लामी पोस्ट और ईमानी बातों के नाम पर बहुत सारे पाकिस्तानी मौलवी सोशल मीडिया प्लेटफार्म से गुमराही और फितने फैला रहे हैं। यह लोग कभी हमारे मुकददस सहाबा के ताल्लुक से अवाम के जहन में बदगुमानियॉ पैदा करते हैं तो कभी अहले बैत,अल्लाह के वलियों,सुफियाए किराम और दरगाहों की शान में गुस्ताखियां करते हैं। इसी तरह बहुत सारे आजाद ख्याल पाकिस्तानी मौलवी हमारे मुस्लिम नौजवानों को ऐसी रस्मों और एसी आदतों का आदी बना रहे हैं कि जो आला हजरत, हुज्जातुल इस्लाम, मुफ्ती ए आजमे हिन्द,जीलानी मियॉ, रेहाने मिल्लत,ताजुश्शरीआ और हमारे दीगर बुजुर्गो के फतवे के खिलाफ हैं।

अलवर में आस्था,आध्यात्म अद्रितीय व अदभुत है राम मंदिर भक्ति, सौंदर्य का अद्रितीय व अनोखा संगम राम मंदिर

विनोद तकियावाला ,स्वतंत्र पत्रकार

राजा व राजवाड़ों का शहर राजस्थान है,जिसकी संस्कृति व सभ्यता की चर्चा भारत ही नही वरन विश्व के कोने -कोने में होता है ।आज हम दिल्ली व एनसीआर के कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित राजस्थान के ऐतिहासिक शहर अलवर की चर्चा कर रहे है ।जी हाँ इतिहास आस्था व अनोखा संगम का शहर अलवर,जहाँ त्रेहान ग्रुप द्वारा नव निर्मित भव्य व दिव्य राम मंदिर, जो स्थानीय लोगों में चर्चा का केन्द्र बना हुआ। जहाँ भक्ति,भारतीय संस्कृति और स्थापत्य कला का जीवंत प्रतीक बन चुका है। सर्व विदित रहे कि 6 अप्रैल 25 को राम नवमी के पवित्र पावन अवसर पर राम मंदिर का विधिवत रूप से उद्घाटित किया गया था ।अल्प समय में ही अलवर क्षेत्र का एक प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र बन गया है। आप को बता दे कि मंदिर के गर्भगृह में विराजमान श्री राम लल्ला की प्रतिमा अत्यंत ही मनोहारी है ।जिस में कलाकारों नें अत्यंत बारीकी और श्रद्धा से तराशी गई यह प्रतिमा प्रभु श्रीराम की करुणा,शक्ति और दिव्यता का जीवंत रूप है, जो हर श्रद्धालु के मन में शांति और आस्था का संचार करती है।

वास्तुकला की दृष्टि से मंदिर पारंपरिक भारतीय

शिल्पकला से प्रेरित है,जिसमें सुंदर नक्काशीदार स्तंभ,भव्य गुंबद और ऊंचा शिखर इसकी भव्यता को दशार्ते हैं। मंदिर परिसर के चारों ओर हरियाली से आच्छादित शांत वातावरण इसे और भी पवित्र एवं रमणीय बनाता है। इस संदर्भ में त्रेहान ग्रुप के चेंयरमैन हर्ष त्रेहन ने कहा राम मंदिर हमारे मूल्यों और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह स्थान न केवल भक्ति का केंद्र है, बल्कि शांति,एकता और समाजिक समरसता का भी प्रतीक है।

राम मंदिर के माध्यम से त्रेहन ग्रुप न केवल आवासीय परियोजनाएं विकसित कर रहा है,बल्कि ऐसी सामुदायिक संरचनाएं भी रच रहा है जो जीवन में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संतुलन लाती हैं।

गेंहू खरीद के साथ डिलीवरी भी करायें सुनिश्चित :अवधेश सिंह

वाराणसी। सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक जौनपुर अमितकुमारपांडेय के निर्देश पर गेंहू क्रय केन्द्र लगधरपुर का निरीक्षण एडीओ रामपुर अवधेश सिंह द्वारा किया गया।

मौके पर 29 किसानो से 530 कुंटल खरीद पाई गई। केन्द्र प्रभारी विपिन पांडेय ने बताया कि अभी केवल 250 कुंटल डिलीवरी हुई है।

निरीक्षण के दौरान एक कृषक अनिल सिंह के लगभग दस कुंटल गेहू की तौल हो रही थी।

मौके पर गेंहू भरा होने से खरीद अवरुद्ध होने की संभावना के दृष्टिगत केन्द्र प्रभारी को निर्देशित किया गया कि परिवहन ठेकेदार से बात करके तत्काल डिलीवरी सुनिश्चित करायें।

बैलेसशीट, उर्वरक, गेंहू खरीद व पीडीएमपी पोर्टल में प्रगति सुनिश्चित करें: अमित कुमार पांडेय

विभागीय उर्वरक समीक्षा समिति की बैठक संपन्न

दैनिक समाज जागरण

वाराणसी। शुक्रवार को विभागीय उर्वरक समीक्षा समिति की बैठक सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक जौनपुर अमित कुमार पांडेय की अध्यक्षता मे हुई ।

बैठक मे खरीफ अभियान हेतु उर्वरको की डिमांड और प्रेषण की रणनीति पर विचार हुआ ।सहायक आयुक्त ने समितियो से डिमांड मंगाने के निर्देश दिए।

2024-25 के संतुलनपत्र को तत्काल तैयार कर के 31 मई तक दो प्रति मे जनपदीय कार्यालय मे उपलब्ध कराने तथा पीडीएमपी पोर्टल की त्रुटियो को सुधार कर सूचनाओ को पूर्ण कराने के भी निर्देश दिए गए।

सहायक आयुक्त ने सभी समितियो से कैशकैरी ऋणसीमा तैयार करा कर जनपद कार्यालय भिजवाने के लिए संबंधित अधिकारियो को निर्देश दिये तथा पीसीएफ तथा पीसीयू के गेहू क्रय केन्द्रो पर गुरूवार को शून्य खरीद के दृष्टिगत शिथिल केन्द्र प्रभारियो को नोटिस जारी करके उनके प्रभार हटाने की कार्रवाई प्रारंभ करने के भी निर्देश दिए।

बैठक मे एडीसीओ सदर सतीश मौर्य,एडीसीओ मड़ियाहूँ बद्रीप्रसाद वर्मा ,एडीसीओ लालजी, एडीसीओ विजयकुमार , एडीओ सरकोनी अजय सिंह के अलावा जिलासहकारीबैंक, पीसीएफ और इफको के अधिकारी उपस्थित रहे।

परछी में सोए वृद्ध को धारदार हथियार से उतारा मौत के घाट

सीसीटीवी फुटेज और डॉग स्क्वाई की भी ली जा रही मदद

दैनिक समाज जागरण लालजी तिवारी

उमरिया।कोतवाली थाना के बिलासपुर चौकी अंतर्गत ग्राम झाँपी के बिरसिंहपुर गांव में बीती रात 65 वर्षीय स्थानीय वृद्ध की निर्ममता से हत्या कर दी गई है।इस जघन्य हत्याकांड के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने जरूरी कार्यवाही कर घटना स्थल से आवश्यक साक्ष्य एकत्रित किये है,एवम सीसीटीवी फुटेज भी एकत्रित कर खंगाले जा रहे है।इसके अलावा उच्च अधिकारियों के निर्देश पर पुलिस ने घटना स्थल पर डॉग स्क्वार्ड आदि की मदद भी ली है,हालांकि आरोपियों के सुराग में डॉग स्क्वार्ड से कितनी मदद मिल सकेगी,फिलहाल कुछ कहना जल्दबाजी होगी।खबर है कि घटना के बाद गांव में ही चिकित्सकों की मदद से पीएम आदि की कार्यवाही पूर्ण कर अंतिम संस्कार के लिए शव परिजनों को सौंप दिया गया है,खबर है कि शव के अंतिम संस्कार के लिए परिजन पैतृक मकान कटनी जिले के ढीमरखेड़ा लेकर पीएम उपरांत निकल गए है।सूत्रों की माने तो 65 वर्षीय मृतक चंद्रप्रकाश पिता रामरुद्र तिवारी मूल रूप से कटनी जिले के थे,अभी हाल के वर्षों में घटना स्थल यानी ग्राम झाँपी के बिरसिंहपुर गांव में छोटी सी जमीन लेकर मकान बनाया था,और किसी तरह गुजारा कर रहा थे।इस परिस्थिति में कौन लोग बूढ़े चंद्रप्रकाश की जान के दुश्मन थे,किन लोगों को इनकी मौत से फायदा था,किसने इतनी निर्ममता से वृद्ध की हत्या कर दी,बड़ा सवाल है।आपको बता दे अभी कुछ माह पूर्व मृतक की पत्नी का भी किन्ही कारणों से देहांत हो गया था। घटना के बाद जबलपुर में छोटी सी दुकान कर परिवार का पालन पोषण कर रहा मृतक का बेटा आशीष तिवारी भी गांव पहुंच गया है।आपको बता दे मृतक के पुत्र आशीष का विवाह घटना स्थल से 10 किमी दूर ताला बड़खेरा में हाल के वर्षों में हुआ है,संजोग से इस हादसे के दौरान पुत्र आशीष की पत्नी मायके में ही थी,इस हादसे ने पूरे परिवार को झकझोर कर रख दिया है,देखना होगा पुलिस कब तक इस अंधी हत्या का खुलासा कर पाती है।

भारत की दोनों सैन्य अधिकारी बेटियों ने पाकिस्तान के अंदर घुसकर भारत का परचम लहराया :--अमिता चपरा

सेना के सम्मान में शहर के नागरिकों द्वारा नगर में निकली जाएगी भव्य बाइक तिरंगा यात्रा

दैनिक समाज जागरण जितेंद्र शर्मा

शहडोल। तिरंगा यात्रा को लेकर अटल निलय जिला भाजपा कार्यालय में भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती अमिता चपरा के नेतृत्व में नगर में निकली जाने वाली तिरंगा यात्रा के संबंध में बैठक का आयोजन किया गया बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती अमिता चपरा ने बताया कि 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के शिकार 26 लोगों को पाकिस्तान आतंकवादियों ने निर्दोष जाति पूछ कर हिंदुओं की हत्या कर दी थी जिनको न्याय दिलाने के लिए लॉन्च किया गया ऑपरेशन सिंदूर की कार्रवाई में भारतीय सेना द्वारा आतंकी ठिकानों को टारगेट किया गया और उन्हें बर्बाद किया गया जिसकी जिम्मेदारी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारी करनाल सोफिया कुरैशी एवं कमांडर योमिका सिंह जी को, जिम्मेदारी सौंपी गई थी जिन्होंने अपनी बहादुरी और पराकाष्ठा के साथ पाकिस्तान के अंदर घुसकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर आतंकी ठिकानों को पूर्ण रूप से ध्वस्त किया। यह भारत की बेटियों ने अपनी सैन्य शक्ति का परचम लहराया है। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी विनय केवट ने जानकारी देते हुए शुक्रवार को बताया कि सेना के सम्मान में निकल जाने वाली तिरंगा यात्रा के संयोजक पूर्व जिला अध्यक्ष श्री कमल प्रताप सिंह जी को बनाया गया है बैठक को संबोधित करते हुए कमल प्रताप सिंह जी ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा प्रदेश नेतृत्व के निर्धारित कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिकों द्वारा शहर में निकली जाएगी भव्य बाइक तिरंगा यात्रा उन्होंने बताया कि 17 मई दिन शनिवार को शाम 4:30 बजे यात्रा जय स्तंभ चौक से प्रारंभ होगी नगर का भ्रमण करते हुए बुढ़ार चौक में यात्रा का समापन किया जाएगा बैठक में पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष प्रकाश जगवनी जिला महामंत्री दीपक शर्मा राजेश्वर उदानियां सेना के पूर्व सैनिक मंचासीन रहे कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिक मंच से अपील करता भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती अमिता चपरा, कार्यक्रम के संयोजक कमल प्रताप सिंह, विधायक मनीषा सिंह, विधायक जयसिंह मरावी, विधायक शरद कोल जी ने शहर के गणमान्य नागरिकों, पूर्व सैनिक, एनसीसी कैडेट, स्कूल कॉलेज के छात्र-छात्राओं व्यापारी बंधुओ पार्टी के सभी कार्यकर्ता पदाधिकारी से अपील की है कि सेना के सम्मान में इस तिरंगा यात्रा में शामिल होकर इस गौरवपूर्ण यात्रा का हिस्सा बनें और राष्ट्रभक्ति की भावना को और प्रबल करें। आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

विमला ग्लोबल स्कूल ने एक बार फिर लहराया सफलता का परचम..!

शत प्रतिशत रहा परीक्षा परिणाम

समाज जागरण ब्यौहारी

सी. बी. एस. सी. कक्षा दसवीं का परीक्षा परिणाम घोषित हुआ जिसमें पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी विमला ग्लोबल स्कूल के कक्षा दसवीं का वार्षिक परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा,36 में से 30 छात्र-छात्राओं ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर ब्यौहारी एवं शहडोल का मान बढ़ाया। जिनमे क्रमशः अभिराम द्विवेदी 93%,अभिषेक तिवारी 89% ओमकार गुप्ता 88%,अर्पिता तिवारी 87%,अरमान तिवारी 87% , अलख गुप्ता 86%,स्नेहा द्विवेदी 84%,अंजली गौतम 82%,देवेश तिवारी 82%,अयान ताम्रकार 80% प्रतिशत हासिल कर संस्था के साथ साथ नगर एवं संभाग का नाम रोशन किया, ज्ञात हो कि विमला ग्लोबल स्कूल गुणात्मक शिक्षा के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। बच्चों के इस सफलता का पूरा श्रेय छात्र-छात्राओं शिक्षकों के साथ साथ विमला ग्लोबल स्कूल के कुसल प्रबंधन को जाता है, स्कूल प्रबंधन बेहतर शैक्षणिक माहौल बनाये रखने के लिए सदैव तत्पर रहता है। बच्चों की इस सफलता पर स्कूल के चेयरमैन वीरेश सिंह"रिंकू", डायरेक्टर गुंजन सिंह, सेक्रेटरी प्रभात सिंह, मैनेजर आलोक श्रीवास्तव, एवं प्राचार्य नेहा त्रिपाठी ने प्रसन्नता ब्यक्त की और बच्चों के घर जाकर मिठाई के साथ बधाई दिया।

सोन का अस्तित्व खतरे में....रेत माफिया खुलेआम कर रहे रेत का अवैध खनन व परिवहन....नेताओं का माइनिंग विभाग पर दबाव या फिर माइनिंग का सहयोग

समाज जागरण जितेंद्र शर्मा

शहडोल। जगह जगह जिले में रेत चोरों के द्वारा सारे नियम कानून को ताक में रखकर सारी व्यवस्थाओं को ठेंगा दिखाते हुए बेखौफ,खुलेआम धड़ल्ले से अवैध उत्खनन किया जा रहा है एवं परिवहन खदान स्वीकृत हो न हो इससे कोई मतलब नहीं जहां अच्छी रेत दिखाई दे निकाल लो कोई कुछ नहीं बोलेगा सब सेट हैं बस अलग अलग रेट हैं नदियों में भी यदि पानी के चलते रेत उत्खनन एवं परिवहन में दिक्कत हो तो सैकड़ों ट्राली बोल्डर मुरम डालकर मैदान बना दो लेकिन रेत निकालने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए मर जाएं लाखों जल जीव बदल जाए नदियों का स्वरूप चिंता करने की कोई जरूरत नहीं हम अर्थ उपार्जन करने आए हैं वो अच्छे से होना चाहिए अपने साथ हैं हर जगह वहीं के चंद वजनदार लालची तत्व जो अपने दायित्व,फर्ज से विमुख होकर चंद रुपयों की लालच में आकर हर परिस्थिति में समझौता कर अपना सहयोग करेंगे और ताजुब की बात ये अपने उद्देश्य में बहुत हद तक सफल भी हैं इनके खुलेआम,बेखौफ कहीं से भी अवैध रूप से रेत उत्खनन एवं परिवहन के तरीके से ऐसा प्रतीत होता है वास्तव में इन पर किसी का कोई नियंत्रण नहीं है इस विषय पर संबंधित जवाबदारों का अपने कर्तव्य,फर्ज से विमुख होकर चुप्पी साधना अवगत कराने के बाद भी मौका स्थल का निरीक्षण न करना कोई कार्यवाही न करने से इनके हौसले और बुलंद होते जा रहे हैं और ये खुलकर अपने अवैध कार्य को युद्ध स्तर में गति देने में सफलता प्राप्त कर रहे हैं जो बहुत ही चिंतनीय विषय है संबंधित जवाबदारों की उदासीनता व सामंजस्य का प्रतीक है जय सिंह नगर व्यवहारी बुढ़वा जनकपुर,जो वर्तमान में रेत चोरों का प्रमुख अड्डा है कहीं से भी जहां से लगभग सभी घाटों से युद्धस्तर पर स्वीकृति न होने के बावजूद धड़ल्ले से रेत का उत्खनन एवं परिवहन किया जा रहा है संबंधित जवाबदारों की जानकारी में भी उक्त विषय होने के बाद भी कोई कार्यवाही न होना चिंतनीय विषय है।

जिला मजिस्ट्रेट ने 05 गुण्डों को किया जिला बदर एवं 02 व्यक्तियों के शस्त्र लाइसेंस को किया निरस्त

दैनिक समाज जागरण

विश्व नाथ त्रिपाठी प्रतापगढ़। जनपद प्रतापगढ़ के जिन व्यक्तियों के आस-पास के क्षेत्रों में आतंक व भय व्याप्त है और उनके विरूद्ध कोई भी व्यक्ति कुछ बोलने अथवा साक्ष्य देने का साहस नहीं करता है ऐसे 05 व्यक्तियों को जिला मजिस्ट्रेट शिव सहाय अवस्थी ने गुण्डा नियंत्रण अधिनियम की धारा-3(3) के तहत जनपद की सीमा से 06 माह के लिये निष्कासित कर दिया है। उन्होने थाना देल्हूपुर ग्राम तौकलपुर के 03 गुण्डों क्रमशः गुफरान पुत्र आसिर उर्फ असीर उर्फ यासिर, सलमान पुत्र आसिर उर्फ असीर उर्फ यासिर व इमरान पुत्र आसिर उर्फ असीर उर्फ यासिर, थाना नवाबगंज ग्राम आलापुर के यश सोनकर उर्फ यश छाबड़ा पुत्र विजय सोनकर तथा थाना कोहड़ौर ग्राम उसका के कृष्ण चन्द्र वर्मा उर्फ कृष्णा पटेल पुत्र दूधनाथ पटेल को जनपद की सीमा से 06 माह के लिये निष्कासित कर दिया है। इसके अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट ने जनपद प्रतापगढ़ के शस्त्र लाइसेंसी जो आपराधिक क्रिया-कलाप में लिप्त होने एवं शस्त्र अनुज्ञा-पत्र की शर्तो का उल्लंघन करने के दोषी पाये गये 02 व्यक्तियों के शस्त्र लाइसेंस को निरस्त कर दिया है। जिला मजिस्ट्रेट ने थाना कोतवाली पट्टी/टीजीएस के वर्तमान पता-17 होस्टिंग रोड अशोक नगर थाना कैण्ट प्रयागराज के अम्बुज शुक्ल पुत्र डीपी शुक्ला के शस्त्र एनपी बोर राइफल तथा थाना अन्तू ग्राम उमरी के बृजेश कुमार शुक्ला पुत्र लालता प्रसाद के शस्त्र एसबीबीएल को निरस्त कर दिया है।

मालती इण्टर कालेज में रोजगार मेले का आयोजन 20 मई को

दैनिक समाज जागरण विश्व नाथ त्रिपाठी

प्रतापगढ़। जिला सेवायोजन अधिकारी अनुभव त्रिपाठी ने बताया है कि जिला सेवायोजन कार्यालय प्रतापगढ़ के द्वारा दिनांक 20 मई 2025 को पूर्वान्ह 10 बजे से मालती इण्टर कालेज निकट रेनू वर्मा नर्सिंग होम कटरा रोड में रोजगार मेले का आयोजन किया गया है जिसमें निजी क्षेत्र की 06 कम्पनियों द्वारा वर्कमैन ट्रेनी, ट्रेनी आपरेटर व ट्रेनी के विभिन्न पदों पर बेरोजगार अभ्यर्थियों का चयन किया जायेगा। इच्छुक अभ्यर्थी मेले में अपने साथ पंजीयन प्रपत्र, मूल शैक्षिक प्रमाण पत्र, सीवी एवं पासपोर्ट साइज फोटो के साथ सम्मिलित हो सकते है। रोजगार मेले में प्रतिभाग करने के लिये सर्वप्रथम अभ्यर्थियों को रोजगार संगम पोर्टल पर आनलाइन पंजीयन कराना अनिवार्य होगा। आनलाइन पंजीयन के लिये सबसे पहले रोजगार संगम पोर्टल को अपने ब्राउजर में खोले। इसके बाद साइन अप/लागिन मेन्यू में जाकर जॉबसीकर आप्शन का चयन करें। जॉब सीकर आप्शन पर क्लिक करने के उपरान्त साइन अप पेज दिखाई देगा। इस पेज पर समस्त वांछित सूचनायें भरनी है। रजिस्टर फॉर में दो ऑपशंस मिलेगें, पहला कैम्पस स्टूडेन्ट और दूसरा जनरल जॉब सीकर का है, अगर वर्तमान समय में किसी कैम्पस, इन्स्टीट्यूट या यूनिवर्सिटी के अंतिम वर्ष के छात्र है तो कैम्पस स्टूडेन्ट ऑप्शन सेलेक्ट करना है। यदि पास आउट है तो जनरल जॉब सीकर आप्शन सेलेक्ट करना है। यहां से अपनी समस्त सूचनायें जैसे पर्सनल डिटेल, परमानेन्ट एड्रेस, फिजिकल डीटेल्स, करियर प्रोफाइल, एजुकेशनल क्वालीफिकेशन, एक्सपीरियंस, लैंग्वेज और स्किल आदि भरेगें। एक्सपीरियंस भरने के लिये न्यू एक्सपीरियंस बटन पर क्लिक करना होगा। समस्त डॉक्यूमेन्ट अपलोड करने है। प्रिन्ट रजिस्ट्रेशन कार्ड बटन पर क्लिक करके आप अपना जॉब कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं अभ्यर्थियों को रोजगार संगम पोर्टल पर रिज्यूम बनाने की सुविधा भी दी गई है। अभ्यर्थियों को रोजगार संगम पोर्टल rojgaarsangam.up.gov.in पर आनलाइन पंजीयन कराना अनिवार्य है।

डीएफओ के लगातार बैठक में अनुपस्थित मिलने पर विभागीय कार्यवाही हेतु पत्र प्रेषित किया जाये-डीएम

दैनिक समाज जागरण विश्व नाथ त्रिपाठी

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी की अध्यक्षता में कैम्प कार्यालय के सभागार में राजस्व प्रशासन एवं कर-करेत्तर राजस्व संग्रह की समीक्षा की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने खनन, आबकारी, परिवहन विभाग, स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन, वाणिज्य कर सहित अन्य विभागों के राजस्व वसूली की समीक्षा की गयी जिसमें प्रगति ठीक पायी गयी। बैठक में प्रभागीय निदेशक सामाजिक वानिकी अनुपस्थित मिले, उनके द्वारा अपने अधीनस्थ को भेजा गया था जिस पर डीएम ने कड़ी नाराजगी जताते हुये और अधीनस्थ को बैठक से बाहर जाने को कहा और निर्देशित किया गया कि डीएफओ के पूर्व की बैठको में न आने और कार्यो में लापरवाही बरतने पर जितनी भी नोटिस जारी की गयी है उन सबका उल्लेख करते हुये विभागीय कार्यवाही के लिये पत्र प्रेषित किया जाये। बैठक में मण्डी सचिव के अनुपस्थित मिले जिस पर उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये गये। जिलाधिकारी ने समस्त उपजिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि 10 बड़े बकायेदारों से वसूली की जाये और 5 लाख से ऊपर के बड़े बकायेदारों से तहसीलदार द्वारा वसूली की जाये। बड़े बकायेदारों से वसूली के लिये एनाउन्समेन्ट कराया जाये, बैनर-पोस्टर आदि के माध्यम से प्रचार-प्रसार कराया जाये जिससे बड़े बकायेदार धनराशि जमा कर सके। इसी प्रकार डीएम ने आर0सी0 वसूली, आवास आवंटन, कुम्हारी कला आवंटन, एन्टी भूमाफिया, दैवीय आपदा, कोर्ट केश आदि के सम्बन्ध में जानकारी ली और उपजिलाधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त होने वाली शिकायतों के सम्बन्ध में उपजिलाधिकारियों को निर्देशित किया गया कि जो भी शिकायतें आये तत्काल सम्बन्धित अधिकारियों को भेजा जाये जिससे समय रहते ज्यादा से ज्यादा शिकायतों का निस्तारण किया जा सके। उन्होने कहा कि स्थानान्तरण नीति जारी हो गयी है निमयानुसार पटल सहायकों का स्थानान्तरण किया जाये। प्रशासनिक और शिकायत तथा कार्यो में लापरवाही बरतने वाले पटल सहायकों का स्थानान्तरण किया जाये। अन्त में जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारियों, तहसीलदारों, नायब तहसीलदारों को निर्देशित किया कि अपने-अपने कार्यो एवं दायित्वों का सम्यक निर्वहन करें, लापरवाही कदापि न बरते, अन्यथा की स्थिति में आवश्यक कार्रवाई की जायेगी। बैठक में मुख्य राजस्व अधिकारी अजय कुमार तिवारी, समस्त उपजिलाधिकारी सहित सम्बन्धित जिला स्तरीय अधिकारी, तहसीलदार व नायब तहसीलदार उपस्थित रहे।

दिव्यांशी मरावी ने सीबीएसई बोर्ड परीक्षा 95 प्रतिशत अंको के साथ की उत्तीर्ण

समाज जागरण विजय तिवारी

शहडोल। संभागीय मुख्यलाय शहडोल के गुड शेपर्ड कन्वेंट में अध्यनरत छात्रा दिव्यांशी मरावी ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10 वीं की परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करते हुए 95.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। दिव्यांशी की इस उपलब्धि से विद्यालय, परिवार में हर्ष की लहर है। उनकी इस सफलता का श्रेय वह नियमित अध्ययन, आत्मविश्वास, माता-पिता के आशीर्वाद तथा शिक्षकों के मार्गदर्शन को देती हैं। दिव्यांशी मरावी ने कहा कि मै आईएएस बनना चाहती हूं जिसके लिए अभी से तैयारी भी शुरू कर दी हूं। विद्यालय के प्राचार्य ने दिव्यांशी को बधाई देते हुए कहा कि वह अन्य छात्रों के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। दिव्यांशी के पिता अशोक मरावी ने बेटी की इस उपलब्धि पर गर्व जताते हुए कहा कि यह उसकी कठिन मेहनत और अनुशासन का परिणाम है। दिव्यांशी की इस उपलब्धि से यह सिद्ध होता है कि समर्पण और लगन से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। समाज में बेटियों की यह सफलता एक सकारात्मक संदेश देती है। ज्ञात हो कि दिव्यांशी मरावी के पिता अशोक मरावी जनपद पंचायत जयसिंहनगर में एसडीओ के पद पर पदस्थ है।

डीईपीडब्ल्यूडी ने आज नई दिल्ली में वैश्विक सुगम्यता जागरूकता दिवस पर समावेशी भारत शिखर सम्मेलन का आयोजन किया

शिखर सम्मेलन में देश में दिव्यांगजनों के लिए समावेशी विकास और डिजिटल सुगम्यता को बढ़ावा दिया गया, डीईपीडब्ल्यूडी और पीडब्ल्यूडी के सशक्तिकरण के लिए काम करने वाले अन्य संगठनों के बीच 3 एमओयू भी हुए पहुंच और समावेश सुनिश्चित करते हुए दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाना पूरे समाज का सामूहिक कर्तव्य है: सचिव (डीईपीडब्ल्यूडी) 15 मई, 2025 को वैश्विक सुगम्यता जागरूकता दिवस (जीएएडी) के अवसर पर, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में समावेशी भारत शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (डीईपीडब्ल्यूडी), केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय, एसबीआई फाउंडेशन और नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड (एनएबी), दिल्ली के सहयोग से तथा दिव्यांगजन एसोसिएशन (एपीडी) और मिशन एक्सेसिबिलिटी (धनंजय संजोगता फाउंडेशन) के समर्थन से हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि, सचिव (डीईपीडब्ल्यूडी) श्री राजेश अग्रवाल ने इस बात पर जोर दिया कि दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में सुगमता और समावेश सुनिश्चित करना केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक कर्तव्य है। जीवन के तीन प्रमुख पहलुओं-जीवन, शिक्षा और आजीविका पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक दिव्यांगजन को सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार है। उन्होंने उनके दैनिक जीवन को आसान बनाने में प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी भूमिका को रेखांकित किया और इसे और भी अधिक सुलभ बनाने का आह्वान किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है और हमें एक समावेशी बुनियादी ढांचा विकसित करना चाहिए जो दिव्यांग बच्चों को बिना किसी भेदभाव के मुख्यधारा की शिक्षा हासिल करने में सक्षम बनाए। जहां विशेष विद्यालय महत्वपूर्ण हैं, वहीं, समावेशी विद्यालयों की प्रासंगिकता आज और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। आजीविका पर बोलते हुए, श्री अग्रवाल ने दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाने के महत्व पर जोर दिया। कई दिव्यांग युवक-युवतियां विभिन्न क्षेत्रों में सफलता की मिसाल कायम कर रहे हैं। उन्होंने दिव्यांग बच्चों के माता-पिता से उन पर विश्वास करने और उन्हें अवसर देने का आग्रह किया। उन्होंने दिव्यांग युवाओं को रोजगार प्रदान करके समावेशी समाज के निर्माण में योगदान देने के लिए कॉर्पोरेट क्षेत्र की भी सराहना की। कार्यक्रम के दौरान, दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग ने विभिन्न संगठनों के साथ तीन समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए: 1. आई फॉर मैनिटी फाउंडेशन - इस एमओयू का उद्देश्य एक सुलभ निर्मित वातावरण और परिवहन प्रणाली विकसित करना है। इसमें सार्वजनिक भवनों में अनुपालन की जांच और प्रमाणन के लिए एक चेकलिस्ट, टूलकिट और एक 'एक्सेसिबिलिटी इंडेक्स' तैयार करना भी शामिल है। 2. निपमैन फाउंडेशन और यंग लीडर्स फॉर एक्टिव सिटिजनशिप (वाईएलएसी) - यह समझौता ज्ञापन दिव्यांगों के अधिकारों के बारे में नवाचार और जागरूकता को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इस साझेदारी के तहत समावेशी तौर-तरीकों को मान्यता देने के लिए हैकथॉन, राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं और इक्वल अपॉर्च्युनिटी (समान अवसर) पुरस्कार आयोजित किए जाएंगे। 3. रैम्प माई सिटी फाउंडेशन - यह साझेदारी स्वास्थ्य सेवा केंद्रों, पर्यटन स्थलों और सरकारी भवनों सहित बाधा-मुक्त सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के निर्माण पर केंद्रित है। शिखर सम्मेलन में वॉयस और व्हाट्सएप आधारित एआई-सक्षम चैटबॉट का प्रदर्शन भी किया गया, जो वर्तमान में सर्वम एआई के सहयोग से विकसित किया जा रहा है। चैटबॉट को दिव्यांगजनों के लिए विकलांगता से संबंधित योजनाओं और पहलों के बारे में जानकारी तक पहुंच को बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। इस अवसर पर, अतिरिक्त सचिव (डीईपीडब्ल्यूडी) सुश्री मनमीत कौर नंदा ने कहा कि सुगम्यता एक अकेला प्रयास नहीं है, बल्कि एक सामूहिक पहल है। उन्होंने एक प्रभावी प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया जिससे एक समावेशी समाज में दिव्यांग समुदाय की बेहतर भागीदारी सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा कि सुगम्यता किसी भी दिव्यांगजन के लिए

आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई अब राष्ट्रीय सुरक्षा सिद्धांत का हिस्सा है, हम आतंकवाद के हर स्वरूप को जड़ से खत्म कर देंगे: भुज एयरफोर्स स्टेशन पर रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह

श्री राजनाथ सिंह ने आईएमएफ से पाकिस्तान को वित्तीय सहायता देने पर पुनर्विचार करने का आह्वान किया क्योंकि उसने फिर से अपने आतंकी बुनियादी ढांचे का पुनर्निर्माण शुरू कर दिया है

श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है; हमारे कार्य सिर्फ एक ट्रेलर थे, अगर जरूरत पड़ी तो हम पूरी तस्वीर दिखाएंगे

"वर्तमान युद्धविराम का अर्थ है कि भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई उसके व्यवहार के आधार पर स्थगित की है"

"भारतीय वायु सेना ने आतंकवाद के खिलाफ इस अभियान का नेतृत्व किया; वह न केवल दुश्मन पर हावी रही, बल्कि ऑपरेशन के दौरान उन्हें अधिक नुकसान पहुंचाया"

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने 16 मई, 2025 को गुजरात के भुज एयरफोर्स स्टेशन पर वायुसैनिकों को संबोधित करते हुए कहा, "आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई सिर्फ सुरक्षा का मामला नहीं है, यह अब राष्ट्रीय सुरक्षा सिद्धांत का हिस्सा बन गया है और हम आतंकवाद के हर स्वरूप को जड़ से खत्म कर देंगे।" उन्होंने कहा कि मौजूदा युद्धविराम का मतलब है कि भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई उसके व्यवहार के आधार पर स्थगित की है। उन्होंने कहा कि अगर उसके व्यवहार में सुधार होता है तो अच्छी बात है; लेकिन अगर कोई गड़बड़ी होती है तो कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। रक्षा मंत्री ने स्पष्ट किया कि ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है। उन्होंने कहा, "हमारी कार्रवाई तो बस एक ट्रेलर थी, अगर जरूरत पड़ी तो हम पूरी तस्वीर दिखाएंगे। 'आतंकवाद पर हमला करना और उसे खत्म करना' नए भारत की नई सामान्य बात है।"श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत द्वारा नष्ट किए गए आतंकी ढांचे का पाकिस्तन ने फिर से निर्माण शुरू कर दिया है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) से इसे दी जाने वाली एक अरब डॉलर की सहायता पर पुनर्विचार करने और भविष्य में भी कोई सहायता न देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, पाकिस्तान अपने नागरिकों से एकत्र किए गए कर को जैश-ए-मोहम्मद आतंकवादी संगठन के प्रमुख मसूद अजहर को लगभग 14 करोड़ रुपये देने में खर्च करेगा, जिसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा आतंकवादी नामित किया है। पाकिस्तान सरकार ने मुरीदके और बहावलपुर में स्थित लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए वित्तीय सहायता की भी घोषणा की है। आईएमएफ की एक अरब डॉलर की सहायता का एक बड़ा हिस्सा आतंकी ढांचे के वित्तपोषण के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। क्या इसे एक अंतरराष्ट्रीय संगठन आईएमएफ द्वारा अप्रत्यक्ष वित्तपोषण नहीं माना जाएगा? पाकिस्तान को दी जाने वाली कोई भी वित्तीय सहायता आतंकी वित्तपोषण से कम नहीं है। भारत द्वारा आईएमएफ को दी जाने वाली धनराशि का उपयोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान या किसी अन्य देश में आतंकी ढांचा बनाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। रक्षा मंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय वायु सेना (आईएएफ) की प्रभावी भूमिका की सराहना की। पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतंकी शिविरों को सिर्फ 23 मिनट में खत्म करने के लिए वायु सेना के जांबाजों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, "जब दुश्मन के इलाके में मिसाइलें गिराई गईं, तो दुनिया ने भारत की वीरता और पराक्रम की गूंज सुनी।" उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ इस अभियान का नेतृत्व भारतीय वायुसेना ने किया और ऑपरेशन के दौरान इसने सिर्फ दुश्मनों पर हावी होकर उन्हें खत्म कर दिया। श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत के लड़ाकू विमान सीमा पार किए बिना पाकिस्तान के हर कोने पर हमला करने में सक्षम हैं। उन्होंने कहा, "दुनिया ने देखा है कि कैसे भारतीय वायुसेना ने आतंकी शिविरों और बाद में पाकिस्तान के एयरबेसों को नष्ट कर दिया। भारतीय वायुसेना ने इस बात का प्रमाण दिया कि भारत की युद्ध नीति और तकनीक बदल गई है। उन्होंने नए भारत का संदेश दिया कि हम सिर्फ विदेश से आयात किए गए हथियारों और प्लेटफार्मों पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि भारत में निर्मित उपकरण हमारी सैन्य शक्ति का हिस्सा बन गए हैं। भारत में निर्मित हथियार अभेद्य भी हैं।" रक्षा मंत्री ने कहा कि पाकिस्तान ने खुद ही 'ब्रह्मोस' मिसाइल की ताकत को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कहा कि भारत में बनी इस मिसाइल ने पाकिस्तान को रात के अंधेरे में दिन की रोशनी दिखाई। उन्होंने भारत की वायु रक्षा प्रणाली की भी सराहना की, जिसमें डीआरडीओ द्वारा बनाए गए आकाश और अन्य रडार सिस्टम ने जबरदस्त भूमिका निभाई है। उन्होंने कल श्रीनगर के बादामी बाग कैंट में भारतीय सेना के जवानों से संवाद किया था आज भुज में वायु सेना के जवानों से बातचीत करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि उन्हें एक बार फिर यकीन हो गया है कि भारत की सीमाएं पूरी तरह सुरक्षित हैं। उन्होंने कहा, "मैंने दोनों मोर्चों पर सैनिकों में जोश और देशभक्ति का उच्चतम स्तर देखा है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमारे सुरक्षा बलों ने जो किया, वह पूरे देश के लिए गर्व की बात है।" रक्षा मंत्री ने कहा कि भुज 1965, 1971 और अब पाकिस्तान पर भारत की जीत का गवाह रहा है। उन्होंने भुज को देशभक्ति की भूमि बताया, जहां सैनिक राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए अडिग संकल्प के साथ खड़े रहते हैं। उन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए वायु सेना और सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के अन्य बहादुर सैनिकों के प्रति आभार व्यक्त किया। श्री राजनाथ सिंह ने सशस्त्र बलों को नवीनतम हथियारों/प्लेटफॉर्मों और आधुनिक बुनियादी ढांचे से लगातार लैस करने की सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि एक मजबूत राष्ट्र अपनी सेना का सम्मान करता है और उसे संसाधन, तकनीक तथा हर तरह का सहयोग प्रदान करता है। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि पहले भारत आयात पर बहुत अधिक निर्भर था

सहायक आयुक्त एवं सहायक निबन्धक सहकारिता ने गेहूॅ खरीद के 08 केन्द्रों को कड़ी चेतावनी जारी की

दैनिक समाज जागरण विश्व नाथ त्रिपाठी

प्रतापगढ़। सहायक आयुक्त एवं सहायक निबन्धक सहकारिता देवेन्द्र बर्मनद्वारा वीडीओ कान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से गेहूॅ खरीद की समीक्षा की गयी जिसमें समस्त गेहूॅ क्रय केन्द्र प्रभारी, समस्त एडीओ/एडीसीओ/नोडल अधिकारी एवं जिला प्रबन्धक पीसीएफ तथा पीसीयू द्वारा प्रतिभाग किया गया। समीक्षा में दिनांक 08 मई को जिला खरीद अधिकारी/अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) तथा दिनांक 13 मई को आयुक्त खाद्य एवं रसद द्वारा की गयी समीक्षा को आधार बनाते हुये जनपद के औसत से कम खरीद करने वाले 08 केन्द्रों क्रमशः उतरास, अकारीपुर, परसदतारडीह, महदहा, खूझीकला, औराइन, भटनी एवं सराय नाहरराय के केन्द्र प्रभारियों को कड़ी चेतावनी देते हुये निर्देशित किया गया कि यदि आगामी तीन दिवस के अन्दर गेहूॅ खरीद में अपेक्षित प्रगति नहीं हुई तो सम्बन्धित क्रय केन्द्रों को आगामी वर्षो में क्रय केन्द्र के रूप में चयन पर विचार नहीं किया जायेगा। सम्बन्धित नोडल अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि उपरोक्त समितियों द्वारा गेहूॅ खरीद हेतु किये गये व्यक्तिगत प्रयासों के सम्बन्ध में अपनी स्पष्ट आख्या कार्यालय को उपलब्ध करायें तथा सम्बन्धित केन्द्र प्रभारियों के विरूद्ध कार्यवाही करते हुये अवगत करायें।

कानपुर में बाइक चलाने की जिद ने ली युवती की जान ,नहर में गिरे पति को लोगों ने बचाया

दैनिक समाज जागरण सुनील बाजपेई

कानपुर। बाइक चलाने की जितने एक युवती की जान ले ली। वह कन्नौज से अपने पति के साथ मोटर साइकिल से लौट रही थी। इसी दौरान उसने पद से मोटरसाइकिल चलाने की जीत की पत्नी उसकी बात मान ली जिसके बाद बाइक अनियंत्रित हो गई और वह पद के साथ नहर में जा गिरी। स्थानीय लोगों ने तुरंत पति को बचा लिया। पत्नी को एक घंटे की खोज के बाद गोताखोरों ने बाहर निकाला और गंभीर हालत में उपचार के लिए बिल्हौर सीएचसी भेजा गया। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद महिला को मृत घोषित कर दिया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के मुताबिक यह

घटना बिल्हौर के ककवन में हुई। घटना के समय बछना गांव के आसिफ अपनी पत्नी सोनम को ससुराल से लेकर लौट रहा था। सोनम ने बाइक चलाने की इच्छा जताई। पति ने उसकी बात मान ली। इसी दौरान मकनपुर बिषधन मार्ग पर खरपतपुर झाल की तरफ नहर पट्टी पर बाइक बेकाबू हो गई और तेज रफ्तार बाइक नहर में जा गिरी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया है। वहीं घटना से परिवार में कोहराम भी मचा है।

संदिग्ध परिस्थितियों में जनरल स्टोर में लगी आग

समाज जागरण रंजीत तिवारी रामेश्वर वाराणसी।।

जंसा थाना क्षेत्र के स्थानीय कस्बे वाराणसीझभदोही मार्ग स्थित एक जनरल स्टोर की दुकान में संदिग्ध परिस्थितियों में आग लग गई घटना में दुकानदार को लाखों की क्षति हुई है। बताया जाता है कि जनरल स्टोर संचालक गुड्डू केसरी प्रतिदिन की भांति दुकान बंद कर गुरुवार की रात घर चला गया वही शुक्रवार

अल सुबह जनरल स्टोर के आसपास के लोगों ने दुकानदार को मोबाइल फोन के माध्यम से सूचना दिया कि आपके दुकान से धुआं निकल रहा है। जिसकी सूचना पर पहुंचे दुकानदार ने आनन झफानन में आसपास के लोगों के साथ आग बुझाने का प्रयास किया तब तक दुकानदार के अनुसार तीन लाख रुपए के स्टेशनरी के समान सहित अन्य सामान भी जलकर राख हो चुके थे।वही इस मामले में दुकानदार द्वारा अज्ञात लोगों के खिलाफ तहरीर दिया गया है। पुलिस तहरीर के आधार पर मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है।

शिक्षण क्षेत्र में टैबलेट का उपयोग कर शिक्षार्थी जीवन में ऊंचाइयां हासिल करें। बी0पी0 वर्मा

समाज जागरण अनिल कुमार

हरहुआ वाराणसी । शिक्षण क्षेत्र में टैबलेट का उपयोग कर शिक्षार्थी जीवन में ऊंचाइयां हासिल करें। उक्त बातें विकास खंड हरहुआ अंतर्गत राजपति शुक्ला निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र में आईटीआई के छात्रों में खंड विकास अधिकारी हरहुआ बद्री प्रसाद वर्मा द्वारा टेबलेट वितरण के पश्चात अपने

सम्बोधन में व्यक्त किया। बीडीओ श्री वर्मा ने बताया कि राजपति शुक्ला निजी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र गणेशपुर तरना वाराणसी पर आईटीआई के छात्रों को स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत निशुल्क टेबलेट वितरण हेतु नोडल अधिकारी नामित किया गया था जिसके तहत उन्होंने इस आईटीआई विद्यालय के राजेश कुमार पटेल, बृजेंद्र लाल, राहुल पटेल, विराट सिंह सहित 22 छात्रों को टेबलेट वितरण किया गया।

बगीचे में संदिग्ध परिस्थितियों में लगी आग दर्जनों पेड़ जले

समाज जागरण आशीष कुमार गुप्ता

बाबतपुर,वाराणसी । फूलपुर थाना क्षेत्र के करखियाव में एक बगीचे में शुक्रवार को दिन में संदिग्ध परिस्थितियों में आग लगने पर पुलिस और अग्निशमन विभाग द्वारा काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। बताते है कि करखियाव निवासी एडवोकेट जगदम्बा मिश्रा के फलदार बगीचे में सुबह साढ़े 10 बजे अचानक तेज लपट के साथ धुंआ उठने लगा। जबकि इसकी जानकारी बाग मालिक व ग्रामीणों को हुई तो बुझाने का प्रयास करने लगे लेकिन सफलता नही मिली। जिसपर इसकी सूचना करखियाव चौकी इंचार्ज के साथ अग्निशमन विभाग को दी गई। मौके पर पहुचे अग्निशमन के कर्मियों ने आग पर किसी तरफ काबू पाया। वही आगजनी से दर्जनों बड़े व छोटे पेड़ जल गए । बाग मालिक ने आगजनी की घटना को लेकर किसी की करतूत बताई और पुलिस से जांच कर कार्रवाई करने की मांग की।

ट्रेन से कट कर जान देने वाले युवक की हुई शिनाख्त

समाज जागरण रंजीत तिवारी रामेश्वर वाराणसी।।

जंसा थाना क्षेत्र के सजोई गांव के कब्रिस्तान के समीप ट्रेन के सामने कूदकर जान देने वाले युवक की शुक्रवार को शिनाख्त हो गई हो गई बताते चले कि गुरुवार सुबह वाराणसी से भदोही की तरफ जा रही ट्रेन के सामने लगभग 30वर्षीय एक युवक कूद गया था जिसकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई थी। मृतक चार दिन पूर्व अपने घर बड़ौरा से अपने मामा के घर सजोई गया हुआ था। जहां से वह आत्मघाती कदम उठा लिया था जिसकी पहचान बगल पड़े साइकिल से उसके मामा के घर वालों ने की हिमांशु पटेल पुत्र अदालत पटेल निवासी बड़ौरा के रूप में की है फिलहाल घटना का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है।

भारतीय नस्ल के गोवंश किसानों के स्वास्थ्य समृद्धि का साधन

समाज जागरण रंजीत तिवारी वाराणसी।।

पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त किसान चंद्रशेखर सिंह के गौशाला पर भारतीय किसान संघ का काशी प्रांत के संगठन मंत्री रामचेला ने ने किसानों से संवाद किया। उन्होंने यहां पर किसानों से कहा कि गोवंश पशु किसानों के स्वास्थ्य एवं समृद्धि का महत्वपूर्ण साधन है उन्होंने कहा कि भारतीय गाय से प्राप्त दूध और घी स्वस्थ शरीर के लिए बहुत ही फायदेमंद है। कहां की इनका विकल्प पूरी दुनिया में किसी प्रजाति के पशु में नहीं है। किसानों का आह्वान किया कि वह भारतीय नस्ल की गाय को पुनः अपनायें। कहा कि मृदा संरचना के लिए भी गाय के गोबर और मूत्र बेहद फायदेमंद है। मिट्टी की उर्वरा शक्ति बनी रहती है तथा कृषि उत्पाद भी स्वास्थ्य के लिए अच्छे होते हैं। इस दौरान चंद्रशेखर सिंह ने अपने नंदिनी ग्राम में पाले गए गीर तथा साहीवाल गौशाला का अवलोकन कराया। चंद्रशेखर सिंह ने गाय पालन की आर्थिक लाभ को विस्तार से बताया। इस दौरान क्षेत्रीय किसान भी उपस्थित रहे।

मेधावी छात्रा उज्जैनी का हुआ अभिनंदन

समाज जागरण रंजीत तिवारी वाराणसी।।

द आर्यन इंटरनेशनल स्कूल की कक्षा 12 की छात्रा उज्जैनी का अभिनंदन

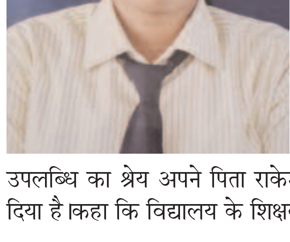

विद्यालय की ओर से तथा काशी सेवा शोध समिति की ओर से किया गया। उज्जैनी सिंह ने इंटर की परीक्षा में 93.5% अंक प्राप्त करके परीक्षा उत्तीर्ण की है।वह बहुमुखी प्रतिभा से परिपूर्ण है। छात्रा को बधाई देने वाले में आर्यन इंटरनेशनल स्कूल के अध्यक्ष विनीत चोपड़ा,डायरेक्टर सबीना चोपड़ा, शिक्षक अशोक,शांतनु काशी समिति के अनिल सिंह, डा हर्षिता राय,वंदना सिंह ने शुभकामनाएं दी है। उज्जैनी ने अपनी उपलब्धि का श्रेय अपने पिता राकेश कुमार सिंह और माँ सुषमा सिंह को दिया है।कहा कि विद्यालय के शिक्षकों का प्रेरणा उसके काम आया।

पुलिस चौकी पहुंचे वृद्ध की मौत, पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद स्पष्ट होगा मौत का कारण

समाज जागरण ओंकार दानगंज वाराणसी

चोलापुर थाना क्षेत्र के दानगंज पुलिस चौकी पर गुरुवार की देर रात एक वृद्ध की मौत हो गई। पड़ोसियों से विवाद की शिकायत लेकर पुलिस चौकी पहुंचे वृद्ध को अचानक दिल का दौरा पड़ गया। चौकी के बाहर अचानक दर्द के बीच बेसुध होकर गिर पड़े। वृद्ध के साथ गए लोग अचेतावस्था उन्हें अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। सूचना पाकर गांव से परिजन और चोलापुर पुलिस अस्पताल पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया। परिजनों की तहरीर के बाद शव का पंचनामा भरकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। प्रभारी निरीक्षक चोलापुर राकेश कुमार ने बताया कि जरियारी गांव निवासी मोती राजभर (62 वर्ष) का पड़ोसियों से नाली का पानी निकालने को लेकर विवाद हो गया था। इस विवाद में दोनों के बीच कहासुनी के बाद मारपीट हो गई। मोती का आरोप था कि पड़ोसियों ने उसे पीटा है। मामले में देर शाम मोती राजभर स्थानीय एक नेता रमेश राजभर के साथ पुलिस चौकी पहुंचे और वहां से थाने आ रहे थे। इसी दौरान मोती राजभर को सीने में दर्द होने लगा और हार्टअटैक का गया। दर्द के बीच उनकी तबियत बिगड़ गई और सड़क पर गिर पड़े। आनन फानन में चोलापुर स्थित अस्पताल लाया गया जहां जांच के बाद चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया और पुलिस-परिजनों को मौत की सूचना दी। हालांकि परिजनों ने अभी तक पुलिस पर कोई आरोप नहीं लगाया है। उनका कहना है कि चौकी परिसर में मौत नहीं हुई है, शिकायत के बाद चोलापुर थाने आते समय हार्ट अटैक से मौत हुई है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा जा रहा है, इसके बाद पूरी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

पीएचसी हरहुआ पर डेंगू दिवस गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न

समाज जागरण अनिल कुमार

हरहुआ वाराणसी पीएचसी हरहुआ आज डेंगू दिवस पर प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डॉ0 सन्तोष कुमार ने बताया कि डेंगू का लक्षण सबसे पहले उल्टी होने, सर दर्द, थकान, कमजोरी आदि जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं, ऐसे में कभी-कभी तेज बुखार से भी शुरूआत हो सकता है, इसके लिए आशा कार्यकर्ता द्वारा घर-घर जाकर लोगों को डेंगू से बचाव और रोकथाम के लिए जागरूक किया जाएगा और रैली के माध्यम से स्कूल के बच्चों को भी मच्छर से डेंगू के बचाओ अभियान चलाया जाएगा। स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी सतीश कुमार गुप्ता ने बताया की विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े के मुताबिक पिछले एक साल में दुनिया भर में डेंगू के सात

लाख के आसपास मामले देखे जा चुके हैं। डेंगू की गंभीरता को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे ग्रेड थ्री इमरजेंसी घोषित किया था। डेंगू दिवस 2025 में डेंगू की रोकथाम के लिए हमें जल्दी रिएक्ट करना चाहिए साथ ही वातावरण को साफ रखना होगा ताकि डेंगू को कम किया जा सकें। इस अवसर पर एआओ श्री नाथ यादव, ब्लाक कार्यक्रम प्रबंधक बसंत लाल श्रीवास्तव, रकेश कुमार फार्मासिस्ट, स्वास्थ्य पर्यवेक्षक राकेश कुमार, संदीप भारती,संतोष सिंह मनीष गुप्ता कार्यालय सहायक पंकज सिंह सहित अन्य कर्मचारी उपस्थित रहें।

अपहरण के 12 घण्टे के अंदर युवक गिरफ्तार, अपहृता बरामद

समाज जागरण धनंजय मोदनवाल पिंडरा।

सिंधोरा पुलिस ने 12 घंटे के भीतर अपहरण के मामले में आरोपी को गिरफ्तार कर कब्जे से नाबालिक अपहता को बरामद किया। थानाध्यक्ष ज्ञानेंद्र त्रिपाठी बताया कि सिंधोरा थाना क्षेत्र के एक गांव की नाबालिक को बहला फुसलाकर कर भगा ले जाने युवक के मंगारी ओवरब्रिज के पास नाबालिक के साथ खड़े होने की सूचना मिली। जिसपर पुलिस ने मुकदमा दर्ज होने के 12 घंटे के भीतर अपहरण के संबंध में दर्ज धारा 87/137(2) बीएनएस में वांछित अभियुक्त मंजीत पटेल निवासी खपड़हवा, थाना बड़ागांव को

गिरफ्तार कर अपहता को भी उसके पास से बरामद किया । गिरफ्तार अभियुक्त ने बताया कि वह लड़की (पीड़िता) से प्रेम करता था और 14 मई को वह लड़की के गाँव में बारात में आया था वहाँ से उसने लड़की से शादी करने की बात कहकर उसे अपने साथ ले आया था, और बंबई जाने के लिए ट्रेन पकड़ने के लिए रेलवे स्टेशन बाबतपुर के पास स्थित मंगारी ओवरब्रिज के नीचे खड़े थे, तभी पुलिस ने पकड़ लिया।

अलग अलग सड़क दुर्घटना में दो घायल, रेफर

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

राजगढ़ मीरजापुर/ राजगढ़ थाना क्षेत्र के अलग-अलग स्थानों पर हुई सड़क दुर्घटना में दो लोग जख्मी हो गए। जिसमें एक घायल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजगढ़ जबकि दूसरे को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया।जहा दोनों की हालत गंभीर देख अन्यत्र रेफर कर दिया गया। थाना क्षेत्र के सोन कम्हरिया गांव निवासी 50 वर्षीय राज कुमार अपने घर से बाइक से सोनबरसा बाजार गए थे। मिजार्पुर- सोनभद्र मार्ग पर अनियंत्रित कार चालक ने बाइक सवार राजकुमार को टक्कर मार दिया। जिससे बाइक सवार अधेड़ सड़क पर गिर कर गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से निजी अस्पताल पहुंचाया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद हालत गम्भीर देख ट्रामा सेंटर वाराणसी रेफर कर दिया गया। बाइक में टक्कर मारने के बाद कार अनियंत्रित होकर सड़क से नीचे खाई में गिर गई। दूसरी घटना में बिहार प्रदेश के चैनपुर भभुआ के लोहरा गांव निवासी 30 वर्षीय उदय वीर मानसिक रूप से बीमार है।परिवार के लोग उदयवीर को लेकर इलाज कराने के लिए करकोली स्थित दुर्गा मंदिर पर तांत्रिक के पास गए थे। इसी दौरान उदयवीर परिवार वालों को चकमा देकर भागा और धनसिरिया गांव के सतौहा मोड़ पर पहुचा, तभी तेज गर्मी के कारण गस्त खाकर सड़क पर गिरने से जख्मी ही गया। सूचना पर पहुंची पुलिस उसे सीएचसी राजगढ़ में भर्ती कराई। जहा हालत गम्भीर देख चिकित्सक ने जिला अस्पताल सोनभद्र रेफर कर दिया।

राजगढ़ के तीन गांव में फैला डायरिया एक दर्जन मरीज भर्ती एक रेफर

समाज जागरण राजगढ़ मीरजापुर/

राजगढ़ स्वास्थ्य केंद्र के अंतर्गत तीन गांव में दूषित भोजन करने के कारण एक दर्जन लोग डायरिया से पीड़ित होकर राजगढ़ स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती होकर इलाज कर रहे थे इसमें से 6 लोगों को इलाज के बाद घर जाने के लिए छोड़ दिया गया एक बालिका की स्थिति गंभीर होने पर उसे जिला अस्पताल भेज दिया गया। राजगढ़ क्षेत्र के भीटी नदिहार दरवान धंनसिरिया गांव में दूषित भोजन करने के कारण राजगढ़ गांव निवासी जीरा देवी पत्नी जगदीश 50 वर्ष पियारी देवी पत्नी बच्चू यादव 35 वर्ष निवासी रैकरी भीटी गांव निवासी लक्ष्मी देवी पत्नी अमीर चंद 35 वर्ष

वंदना 19 वर्ष पुत्री श्री प्रकाश दरवान गांव निवासी सभ्यता सिंह 40 वर्ष नदिहार गांव निवासी आरती 16 वर्ष पुत्री सुरेश कुमार धंनसिरिया गांव निवासी संदीप पुत्र प्रदीप 6 वर्ष के अलावा रामचंद्र 45 वर्ष सुमित्रा देवी 40 वर्ष मल्टी 36 वर्ष ग्राम बैडाण थाना कर्मा सोनभद्र बृहस्पतिवार को उल्टी-दस्त पेट दर्द की शिकायत होने पर सभी लोग राजगढ़ अस्पताल में भर्ती हुए डॉक्टर ने सभी का इलाज करना शुरू किया जिसमें से वंदना रामचंद्र संदीप आरती सभ्यता का इलाज जारी है आरती की स्थिति ज्यादा खराब होने पर डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल के लिए भेज दिया।

शिवरामपुर मे कोटे के दुकान के लिए खुली बैठक स्थगित

*कोरम के अभाव के कारण स्थगित करनी पड़ी बैठक।

समाज जागरण अनिल कुमार हरहुआ वाराणसी।

स्थानीय विकास खंड अंतर्गत ग्रामपंचायत शिवरामपुर मे शुक्रवार को उचित दर विक्रेता के चयन के लिए बुलाई गई बैठक कोरम के अभाव के कारण आज स्थगित कर दी गई। ग्राम पंचायत अधिकारी संजय यादव ने इसकी घोषणा करते हुए कहा कि ग्रामवासियो की उपस्थिति कम होने तथा कोरम पूरा न होने के कारण बैठक स्थगित करने का निर्णय लिया गया है। बैठक स्थगित करने के निर्णय पर प्रधान प्रतिनिधि विपिन कुमार ने आपत्ति जताई। पूर्व

क्षेत्र पंचायत सदस्य रामखेलावन पटेल ने कहा कि बैठक टालने के कारण ग्रामीणो मे भारी आक्रोश है तथा गरीब जनता को खाद्यान्न पाने मे विगत कई महीनों से परेशानी हो रही है । ग्रामीणो की शिकायत पर बीडीओ हरहुआ बद्री प्रसाद वर्मा ने बताया कि शिकायत मेरे संज्ञान मे है तथा प्रकरण की जांच कराकर जल्द से जल्द कोटेदार का चयन सुनिश्चित कराया जाएगा। बैठक मे ग्रामप्रधान मंजुला देवी, सचिव संजय , रोजगार सेवक प्रेमचंद, रामखेलावन समेत ग्रामीण उपस्थित रहे।

पूर्व प्रधान की मनाई गई 26वीं पुण्यतिथि

समाज जागरण धनंजय मोदनवाल पिंडरा।

स्थानीय विकास खण्ड के सिंधोरा के 7 बार प्रधान रह चुके स्व० भैयालाल मौर्य की शुक्रवार को 26 वीं पुण्यतिथि सराय शेखलार्ड स्थित उनके स्मारक स्थल पर मनाई गई। इस दौरान स्मारक स्थल को भव्य ढंग से फूलों को सजाया गया। स्मारक स्थल पर सुबह ही क्षेत्र के दर्जनों जनप्रतिनिधियों व गणमान्य लोगो के साथ उनके परिजन पहुचे और पुष्प अर्पित करते हुए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी और उनके कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। बताते चलें कि 16 मई सन 1999 को ग्राम प्रधान भईयालाल मौर्य की एक पंचायत में जाते वक्त बदमाशो ने सराय शेखलार्ड में गोली

मार कर हत्या कर दी थी, जिसके बाद उसी स्थल के किसानों ने अपनी जमीन देकर उनके स्मारक का निर्माण कराया, उसी समय से उक्त स्थल पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर उन्हें याद करते हुए उनके पुण्यतिथि पर पुष्प अर्पित करते हैं। शुक्रवार को आयोजित पुण्यतिथि पर भैया राम मौर्य, सुरजीत कुमार मौर्य, संजय साहू, रामबाबू सेठ, सतनारायण जायसवाल, राजकुमार बाबा, दीनदयाल गुप्ता, गुड्डू मौर्य, निजामुद्दीन,निसार अंसारी, फिरोज, जलालुद्दीन, दीपक विश्वकर्मा, धनंजय यादव, सोनू मोदनवाल, अजय जायसवाल समेत अनेक जनप्रतिनिधियों के अलावा गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

साइकिल वितरण कार्यक्रम में बच्चों की बेहतरी के बजाय प्रशासन ने दिखाई लापरवाही

दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। 43 डिग्री सेल्सियस की भीषण गर्मी में, डायट परिसर में आज शुक्रवार को आयोजित साइकिल वितरण कार्यक्रम ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। समाज कल्याण विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे राज्य मंत्री संजीव कुमार गौड़ ने 1914 छात्रों को साइकिल वितरित की। हालांकि, बढ़ती गर्मी और खराब आयोजन के चलते कई छात्र चिड़चिड़ेपन का शिकार होते दिखे।कार्यक्रम के दौरान, कई छात्रों को सुबह 9 बजे से ही मैदान में बैठाया गया, बच्चे कई किलोमीटर दूर से खुले पिकअप में पहुंचे थे, ताकि वे इस वितरण कार्यक्रम में भाग ले सकें। लेकिन लू और गरमी के कारण, छात्रों की स्वास्थ्य के प्रति प्रशासन की लापरवाही साफ नजर आ रही थी। मौसम विभाग द्वारा जारी चेतावनी के बावजूद, जिला प्रशासन कोई सख्त कदम उठाता नजर नहीं आया।समाज कल्याण मंत्री पर सवालों की बौछार साइकिल वितरण कार्यक्रम में देरी से पहुंचने पर समाज कल्याण राज्य मंत्री संजीव कुमार गौड़ पर सवाल उठाए गए। उन्होंने कहा कि जनपद के दूरस्थ और आदिवासी क्षेत्र की बच्चियों के लिए 1914 साइकिल का वितरण किया गया है। मंत्री ने बताया कि साइकिल

वितरण का लक्ष्य पूरा किया जाएगा और भविष्य में बचे हुए बच्चों को भी साइकिल दी जाएगी। बकौल मंत्री, हमारे क्षेत्र में शादी-विवाह का सीजन होने के कारण थोड़ा देरी हुई है। उन्होंने साथ ही बताया कि उनके आवास पर सुबह से जनता की भीड़ लगी रहती है और उनकी समस्याओं को देखने में थोड़ी समय लग गई। लाभार्थियों की खुशी कार्यक्रम में उपस्थित एक लाभार्थी, पूर्वी सोनकर ने खुशी जताते हुए कहा, "साइकिल मिलने से हमें विद्यालय जाने में काफी आसानी होगी। पहले हमें ऑटो से जाना होता था, जिससे हमें 20 रुपये प्रतिदिन खर्च करना पड़ता था। अब साइकिल मिलने से पैसे की बचत होगी। आयोजित कार्यक्रमों में सुविधाओं की कमी समाज कल्याण विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में सुविधाओं की कमी का मुद्दा पहले भी उठता रहा है। कई लोगों का आरोप है कि विभाग सरकारी धन का बंटवारा सही तरीके से नहीं करता। चुटकी लेते हुए कुछ स्थानीय लोगों ने कहा कि समाज कल्याण विभाग के आयोजनों में हमेशा सुविधाओं की कमी रहती है, चाहे वह सामूहिक विवाह हो या साइकिल वितरण कार्यक्रम। स्वास्थ्य सुरक्षा का वादा मंत्री गौड़ ने यह भी कहा कि अगर छात्रों में स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या हुई है, तो उन्हें स्वास्थ्य सेवाएं दी जाएंगी और उन्हें घर तक पहुंचाया जाएगा। साइकिल वितरण कार्यक्रम में प्रशासनिक लापरवाही ने छात्रों को मुश्किल में डाल दिया। भविष्य में ऐसे आयोजनों को उचित समय और स्थान पर आयोजित करना चाहिए, ताकि बच्चों की स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने डब्ल्यूएमएफआई और टीसीएस फाउंडेशन के सहयोग से राजों की बावली के संरक्षण कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया

भारत की सांस्कृतिक और पर्यावरणीय धरोहर की सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने वर्ल्ड मोनूमेंट्स फंड इंडिया और टीसीएस फाउंडेशन के सहयोग से नई दिल्ली स्थित महरौली पुरातत्व उद्यान में 16वीं शताब्दी की राजों की बावली का संरक्षण कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। यह परियोजना डब्ल्यूएमएफआई की ह्यभारत की ऐतिहासिक जल प्रणालियों नामक पहल का हिस्सा थी, जिसे टीसीएस फाउंडेशन द्वारा वित्त पोषित किया गया था, जो वर्ल्ड मोनूमेंट्स फंड की जलवायु विरासत पहल के अनुरूप है। यह जलवायु परिवर्तन के सामने जल प्रबंधन के लिए स्थायी समाधान के रूप में पारंपरिक जल प्रणालियों को बहाल करने के महत्व पर प्रकाश डालता है। एएसआई की देखरेख में सफाई, गाद हटाने, संरचनात्मक मरम्मत और जल गुणवत्ता सुधार जैसे कार्य पारंपरिक सामग्रियों और तकनीकों के उपयोग से किए गए। बावली की साफ की गई, गाद निकाली गई और उचित जल निकासी व्यवस्था से जोड़ा गया। जल की गुणवत्ता बनाए रखने में मदद के लिए मछलियां डाली गईं। संरचना के मूल स्वरूप को बनाए रखने के लिए चूने के प्लास्टर और मोर्टार जैसी पारंपरिक सामग्रियों का उपयोग किया गया। स्थल की लोदी-युग की प्रामाणिकता को बनाए रखने के लिए बहाली ऐतिहासिक अभिलेखों द्वारा निर्देशित थी। बहाली के अलावा, एएसआई और उसके सहयोगियों ने बावली के सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर काम किया।

आधार प्रमाणीकरण 150 बिलियन लेनदेन को पार कर गया, जिससे भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था और कल्याणकारी सेवाओं को बल मिला

अप्रैल 2025 में ई-केवाईसी लेनदेन में लगभग 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिससे सभी क्षेत्रों में ग्राहक अनुभव और व्यवसाय करने में आसानी देखी गई यूआईडीएआई के एआई-संचालित चेहरा सत्यापन (फेस ऑथेंटिकेशन) से 14 करोड़ लेनदेन होने से निर्बाध सेवा वितरण संभव हो रहा है

आधार प्रमाणीकरण लेनदेन की कुल संख्या 150 बिलियन (15,011.82 करोड़) के आंकड़े को पार कर गई है, जो भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) और व्यापक आधार प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह उपलब्धि आधार के व्यापक उपयोग और उपयोगिता तथा देश में डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास को दर्शाती है। यह कुल संख्या इसकी शुरूआत से अप्रैल 2025 के अंत तक के आंकड़ों को मिलकार प्राप्त की गई है। आधार आधारित प्रमाणीकरण जीवन को आसान बनाने, प्रभावी कल्याणकारी वितरण और सेवा प्रदाताओं द्वारा दी जाने वाली विभिन्न सेवाओं का स्वैच्छिक रूप से लाभ उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अप्रैल माह में लगभग 210 करोड़ आधार प्रमाणीकरण लेनदेन किए गए, जो 2024 में इसी महीने की तुलना में लगभग 8 प्रतिशत अधिक है।

ई-केवाईसी से ग्राहक अनुभव बेहतर हुआ

आधार ई-केवाईसी सेवा बैंकिंग और गैर-बैंकिंग वित्तीय सेवाओं सहित अन्य क्षेत्रों में ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने और व्यापार को आसान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अप्रैल 2025 के दौरान किए गए ई-केवाईसी लेनदेन (37.3 करोड़) की कुल संख्या पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 39.7 प्रतिशत अधिक है। 30 अप्रैल 2025 तक ई-केवाईसी लेनदेन की कुल संख्या 2393 करोड़ को पार कर गई है।

यूआईडीएआई आधारित चेहरा सत्यापन बढ़ रहा है

यूआईडीएआई द्वारा विकसित एआई/एमएल आधारित आधार चेहरा सत्यापन (फेस ऑथेंटिकेशन) समाधान लगातार लोकप्रिय हो रहे हैं। अप्रैल में लगभग 14 करोड़ ऐसे लेन-देन हुए, जो इस प्रमाणीकरण पद्धति को अपनाने और आधार संख्या धारकों को इससे सहज लाभ मिलने का संकेत है। सरकारी और निजी क्षेत्र दोनों में 100 से अधिक संस्थाएँ लाभ और सेवाओं के सुचारू वितरण के लिए चेहरा सत्यापन तकनीक का उपयोग कर रही हैं।

कुबेर विद्यापीठ इण्टर में विश्व डेंगू दिवस का कार्यक्रम हुआ !

दैनिक समाज जागरण – रिपोर्ट विपिन राठौर

फिरोजाबाद ! शुक्रवार को विश्व डेंगू दिवस के अवसर पर कंज्यूमर लिमिटेड फैमिली हैल्थ इंडिया के सहयोग से संचालित एम्बेड एंव स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से कुबेर विद्यापीठ इण्टर कॉलेज के द्वारा संचारी रोग अभियान

चलाया गया। जिसके अन्तर्गत डेंगू, मलेरिया जैसी जानलेवा बीमारियों के लक्षण एवं बचाव जागरूकता के बारे में जागरूक किया गया जिसमें सभी ने प्रतिभाग लिया। कार्यक्रम में फिरोजाबाद के यूथ कोऑर्डिनेटर मोहित शर्मा, यूथ चैंपियन संजना, मनिषा डाटा कोऑर्डिनेटर हर्ष पचौरी, यूथ वॉलन्टियर (लिश झा, रुचिका, राजकुमारी मौजूद रहें।

सयुस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का किया गया स्वागत

दैनिक समाज जागरण

जसराना। समाजवादी युवजन सभा के राष्टीय उपाध्यक्ष के नगर आगमन पर उनका जोरदार स्वागत एवं सम्मान किया गया। इस दौरान भाजपा की नीतियों

का आलोचना करने के साथ ही सपा की नीतियों को घर-घर तक पहुंचाने का संकल्प लिया।

समाजवादी पार्टी द्वारा आशुतोष यादव आशु को समाजवादी युवजन सभा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है। बुधवार की सायं वह नगर पहुंचे तो कार्यकताओं ने उनका जोरदार स्वागत एवं सम्मान किया। इस दौरान आशुतोष यादव ने कहा पार्टी ने जो भी सम्मान दिया है उस पर वो खरा उतरेंगे। इस दौरान कार्यकताओं ने कहा भाजपा सरकार ने देश को शर्मसार करने का कार्य किया है। कहा कि सपा की पीडीए नीति को घर-घर पहुंचाने का कार्य किया जाएगा। इस दौरान केपी सिंह यादव, प्रदीप यादव, अशोक यादव, सुग्रीव सिंह, सलीम राईन, हिमांशू, विनय दिवाकर, वीनेश, प्रेमवीर सिंह आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

वेतन ना मिलने से नाराज सफाई कर्मचारियों ने किया प्रदर्शन

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : नगर निगम सफाई मजदूर संघ के जिला अध्यक्ष प्रदीप टुंडा ने कहा कि सुखमा कंपनी कर्मचारियों का उत्पीड़न कर रही है। दो-दो महीने की सैलरी ना देकर कर्मचारियों के साथ अन्याय किया जा रहा है। नगर निगम सफाई मजदूर संघ के जिला अध्यक्ष महामंत्री और प्रदेश महामंत्री बिल्लू चौहान के नेतृत्व में सुखमा संस के सफाई कर्मचारियों और निगम के कर्मियों ने आगरा रोड केपी इंटर कॉलेज के सामने बीच सड़क पर बैठ गए। नगर निगम और सुखमा कंपनी के खिलाफ नारेबाजी करते हुए वेतन की मांग करने लगे।

जिलाध्यक्ष प्रदीप टुंडा ने कहा कि सुखमा कंपनी कर्मचारियों का उत्पीड़न कर रही है। दो-दो महीने की सैलरी ना देकर कर्मचारियों के साथ अन्याय किया जा रहा है। महामंत्री ने कहा कि खुद कंपनी तीन करोड रुपए से अधिक रुपए सफाई के नाम पर नगर निगम से वसूल रही है मगर कर्मचारियों को सैलरी नहीं दे रही है। प्रदेश महामंत्री बिल्लू चौहान ने कहा कि सफाई कर्मचारियों के लिए जो भी करना पड़े संगठन करेगा।

किसानों की जमीन पर बगैर अनुमति एवं उचित मुआवजा दिये पोल लगाए तो होगा आंदोलन -- कृष्णा ठाकुर

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : भारतीय किसान यूनियन भानु के युवा जिलाध्यक्ष कृष्णा ठाकुर के नेतृत्व में नीमराणा-बरेली पावर ग्रिड लिमिटेड के द्वारा किसानों की जमीन पर बिना अनुमति टॉवर (पोल) लगाए जाने के विरोध में भारतीय किसान यूनियन (भानू) के पदाधिकारियों के साथ सैकड़ों क्षेत्रीय किसान नारेबाजी करते हुए उपजिलाधिकारी कार्यालय गभाना पहुंचे। उपजिलाधिकारी से मिलकर आक्रोश जताते हुए कम्पनी के अधिकारी पर किसानों के उत्पीड़न का आरोप लगाया मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सम्बोधित एक ज्ञापन उपजिलाधिकारी गभाना को सौंपा। ज्ञापन में संगठन ने पावर ग्रिड कंपनी पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि किसानों की जमीन पर जबरन कब्जा कर टॉवर लगाए जा रहे हैं किसानों को डराया धमकाया जा रहा है और पुलिस तथा राजस्व विभाग के कुछ अधिकारी

भी इस उत्पीड़न में कंपनी का साथ दे रहे हैं । भाकियू (भानू) ने मांग की कि किसानों की अनुमति एवं उचित मुआवजा दिये बगैर किसानों की भूमि पर टॉवर (पोल) न लगाए जाएं , प्रभावित किसानों को हरियाणा सरकार की तर्ज पर उचित मुआवजा दिया जाए , किसानों को धमकाने वाले और जबरन पोल लगाने वाले अधिकारियों पर कानूनी कार्रवाई की जाए , प्रशासनिक और पुलिसकर्मियों की मिलीभगत की जांच कर उनके विरुद्ध भी विधिक कार्यवाही सुनिश्चित की जाए , किसान अगर सहमति देते हैं तो उन्हें पहले भूमि का मुआवजा अलग से और फसल की क्षतिपूर्ति का ड्1 लाख प्रति हेक्टेयर की दर से मुआवजा दिया जाए , जमीन पर लगे पोलो से फसलो के ऊपर जा रही लाईन का भी जांच कर मुआवजा दिया जाये ।

भारतीय किसान यूनियन (भानू) ने चेतावनी दी कि अगर उनकी मांगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो वह प्रदेशव्यापी आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे । ज्ञापन सौंपने के दौरान प्रदेश मीडिया प्रभारी सुमित ठाकुर, युवा जिलाध्यक्ष प्रतिनिधि डॉ. शिवम जादौन, जिला उपाध्यक्ष सौरभ ठाकुर, हिमांशु पंडित , जिला उपाध्यक्ष व्यापार प्रकोष्ठ पवन कुमार दक्ष, पीयूष कुमार सिंह, मानेन्द्र चौधरी, सुरेन्द्र चौधरी, ओम ठाकुर, गोपाल सिंह, भुवनेश सिंह (मोहित) भूपेंद्र सिंह, ललित सूर्यवंशी, दीपाशू माहेश्वरी, ओमवीर सिंह, सचिन मोदी, कुलदीप सिंह, योगेन्द्र सिंह, प्रवीन कुमार, श्यौराज सिंह, राजवीर सिंह, मुनेश कुमार, जितेन्द्र सिंह एडवोकेट, विनेश सिंह एडवोकेट, सूरज, गुड्डू सिंह, राजेन्द्र पुजारी, योगेश सिंह, पिंकू , ओमपाल सिंह, पुष्पेन्द्र सिंह, रामकिशन, मोंटू , पवन कुमार, आदि किसान भारी संख्या में उपस्थित रहे।

विद्युत विभाग ने बकायेदारों पर कसी नकेल, 10 कनेक्शन काटे, 3 पर विद्युत चोरी का मुकदमा

दैनिक समाज जागरण

जसराना। विद्युत विभाग ने शुक्रवार को एका में बकाया बिलों की वसूली और बिजली चोरी के खिलाफ सख्त अभियान चलाया। इस दौरान मुख्य बाजार, वार्ष्णेय मोहल्ला, वाल्मीकि मोहल्ला और रामपुर रोड पर चेकिंग अभियान के तहत 10 बकायेदारों के बिजली कनेक्शन काट दिए गए।

अभियान के दौरान दो घरेलू कनेक्शन की कैटेगरी में अनियमितता पाई गई, जिन्हें तुरंत कमर्शियल में बदला गया। वहीं, तीन व्यक्तियों पर विद्युत चोरी का मामला सामने आने पर उनके खिलाफ संबंधित थाने में

एफआईआर दर्ज कराई गई है।

चेकिंग अभियान का नेतृत्व उपखंड अधिकारी उपेंद्र यादव ने किया। उनके साथ अवर अभियंता अजय यादव, बलराम सिंह, संजीव कुमार, लाइनमैन अंकित दीक्षित, हेमंत, योगेश, विनय और निहाल सिंह मौजूद रहे।

जिला समन्वयक अश्वनी जैन ने विद्यार्थियों को बताए हीट वेव से बचाव के उपाय

दैनिक समाज जागरण

सिरसागंज ! विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश के अंतर्गत जिला विज्ञान क्लब, फिरोजाबाद के तत्वाधान में श्री एम डी जैन इंटर कॉलेज, सिरसागंज में विद्यालय के प्रधानाचार्य नीरज कुमार जैन के निर्देशन एवं विद्यालय के प्रवक्ता, जिला विज्ञान क्लब, फिरोजाबाद के जिला समन्वयक अश्वनी कुमार जैन के संयोजन में विद्यार्थियों को हीट वेव की जानकारी एवं बचाव की जानकारी प्रदान की गई।

अश्वनी कुमार जैन ने विद्यार्थियों को बताया कि बढ़ते तापमान एवं हीट वेव से बचने के लिए शरीर को ढककर रखें। धूप में बाहर जाते समय हल्के रंग के, ढीले और हवादार सूती कपड़े पहनें। धूप के चश्मे, छाता, टोपी या चप्पल का

प्रयोग करें। यदि आप खुले में कार्य करते हैं, तो सिर, चेहरा, हाथ पैरों को गीले कपड़ों से ढके रहें। उचित वायु संचरण वाले शीतल स्थानों पर रहें। इस गर्म मौसम में हाइड्रेटेड रहने के लिए पर्याप्त पानी पीते रहें। भले ही आपको प्यास न लगी हो, परन्तु जितना संभव हो, पानी अवश्य पीते रहें। आर. एस . का घोल या घर में बने जैसे लस्सी, नीबू पानी, आम का पना आदि पीकर स्वंय को तरो ताजा रखें।

इस अवसर पर कु आयशा, लक्ष्मी, मोहिनी, रागिनी, रीता कुमारी, शैली, स्वाती कुमारी, अल्शिफा, मोनिका, पूनम कुमारी, रोशनी, रजनी, शिखा, संध्या कुमारी, तनवी, खुशी, ज्योति, कुलसुम, सिमरन, डॉली, साक्षी, विशाल, देवेन्द्र कुमार, शुभम प्रताप सिंह आदि विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विद्युत अधिकारियों को निर्वाध विद्युत आपूर्ति के दिए निर्देश

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ऊर्जा क्षेत्र में प्रस्तावित आगामी सुधारों को ध्यान में रखते हुए जिलाधिकारी संजीव रंजन ने शुक्रवार को कार्यालय कक्ष में विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में सुचारू विद्युत आपूर्ति, उपभोक्ताओं की संतुष्टि एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने पर विशेष बल दिया गया।

जिला मजिस्ट्रेट संजीव रंजन ने कहा कि ऊर्जा सुधारों के दौरान आम जनता को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए एक प्रभावी कार्ययोजना बनाई जाए। उन्होंने विद्युत विभाग को निर्देशित किया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए और किसी भी संभावित विरोध या जनाक्रोश की स्थिति में तत्काल नियंत्रण के लिए स्थानीय प्रशासन के साथ समन्वय बनाए रखें। उन्होंने विद्युत अधिकारियों को निर्देशित किया कि संभावित विरोध के उपरांत भी निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए, इसके लिए सभी प्रकार के वैकल्पिक उपाय ससमय कर लिए जाएं। एसई पी0ए0 मोगा ने बताया कि तीन एजेंसियों के माध्यम से मैनपावर उपलब्ध कराया जा रहा है। उपभोक्ताओं को किसी भी आपात स्थिति में सुविधा नहीं होने दी जाएगी।

डीएम ने सभी उपजिलाधिकारियों एवं पुलिस क्षेत्राधिकारियों को निर्देशित किया कि विद्युत विभाग के कार्यों में सहयोग प्रदान करें एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए निरंतर निगरानी रखें। इसके अलावा उन्होंने आम जनता को ऊर्जा सुधारों के विषय में स्पष्ट व सटीक जानकारी देने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार करने के भी निर्देश दिए। मुख्य महाप्रबंधक हरदुआगंज विद्युत तापीय परियोजना अतुल कुमार ने बताया कि विद्युत उत्पादन में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी जाएगी। बैठक में अपर जिलाधिकारी नगर अमित कुमार भट्ट, पुलिस अधीक्षक अपराध ममता कुरील, पुलिस अधीक्षक यातायात मुकेश उत्तम, अधीक्षण अभियंता शहरी एवं ग्रामीण सहित अधिशासी अभियंता (विद्युत) अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मंगलायतन विश्वविद्यालय में नर्सिंग विद्यार्थियों ने मानव सेवा की शपथ ली

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : मंगलायतन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल साइंसेज में दीप प्रज्वलन एवं शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नर्सिंग विद्यार्थियों को उनके पेशे की मयार्दा, सेवा भावना और कर्तव्यों से अवगत कराना था। कार्यक्रम में आधुनिक नर्सिंग की जननी फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जीवन और उनके योगदान पर प्रकाश डालते हुए नर्सिंग को मानव सेवा का सर्वोच्च उदाहरण बताया। विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कुलपति प्रो. पीके दशोरा ने कहा कि नर्सिंग केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि यह समाज सेवा का ऐसा माध्यम है जिसमें करुणा, सहानुभूति और निष्ठा का समावेश होता है। उन्होंने कहा कि एक आदर्श नर्स को अनुशासित, संवेदनशील और निस्वार्थ सेवा भाव रखने वाला होना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वह सेवा के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाएं। मुख्य अतिथि एएमयू के नर्सिंग विभाग की प्रिंसिपल डा. फराह आजमी ने फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जीवन और उनके योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज भी उनके सिद्धांत और जीवन मूल्य नर्सिंग पेशे के लिए मार्गदर्शक हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को नर्सिंग की शपथ दिलाते हुए सेवा, सच्चाई और ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा दी। विद्यार्थियों ने भी सेवा व समर्पण के पथ पर चलने का संकल्प लिया।

डीन एकेडमिक प्रो. राजीव शर्मा ने कहा कि नर्सिंग के क्षेत्र में सेवा का भाव सर्वोपरि है। एक नर्स जाति, धर्म, भाषा से ऊपर उठकर मानवता की सेवा करती है। विशिष्ट अतिथि एएमयू की प्रो. परमिला ने कहा कि नर्सिंग को सिर्फ पेशे के रूप में नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक शैली के रूप में अपनाना चाहिए। डायरेक्टर प्रो. आरके शर्मा ने भी नर्सिंग शिक्षा की गुणवत्ता और विद्यार्थियों की भूमिका पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि नर्सिंग एक ऐसा पेशा है, जो दूसरों की जिंदगी को छूता है और उसमें बदलाव लाने की क्षमता रखता है। आभार प्रिंसिपल प्रो. शिवराज त्यागी ने व्यक्त किया। संचालन प्रो. गजेंद्र पाराशर ने किया। इस अवसर पर प्रो. अशोक पुरोहित, डा. जितेंद्र यादव, मीनाक्षी बिष्ट, अंकिता लाल आदि थे। मेधावी विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

चाहे बना लो बंदी, नहीं होने देंगे चकबंदी, विभाग का पुतला फूंका

- उखरेंड के 85 प्रतिशत किसान चकबंदी के विरोध में हुए लामबंद
- चकबंदी अधिकारियों और पुलिस को दिखाए काले झंडे, नारेबाजी

दैनिक समाज जागरण

शिकोहाबाद। सिरसागंज के राजस्व गांव उखरेंड में चकबंदी की प्रक्रिया विगत लंबे समय से चल रही है। पूर्व में ग्रामीणों के विरोध के बाद इस प्रक्रिया को स्थगित कर दिया गया था। गुरुवार को सुबह चकबंदी अधिकारी पुलिस फोर्स के साथ गांव पहुंचे और जमीन की नापतौल शुरू करते इससे पहले ही ग्रामीणों ने विरोध शुरू कर दिया। चकबंदी विभाग का पुतला फूंका और जमकर नारेबाजी की। हूटिंग के बाद चकबंदी अधिकारी वापस चले गये। चकबंदी विभाग की इस कार्यवाही से ग्रामीणों में तीव्र आक्रोश व्याप्त है।

22 -6-22 प्रक्रिया माह अगस्त 2024 में पूर्ण कर ली गई थी। जिसमें 781 चकबंदी ना चाहने वाले

व 200 चकबंदी चाहने वाले मंतव्य प्राप्त हुए थे। इसके बाद बंदोवस्त अधिकारी ने आश्वासन दिया था कि हम चकबंदी निरस्त प्रस्ताव शासन को भेज देंगे। लेकिन आठ माह बीतने के बाद चकबंदी निरस्त प्रस्तवा को शासन को नहीं भेजा गया। जिसके बाद गुरुवार को चकबंदी की टीम चकबंदी अधिकारी पुलिस फोर्स को लेकर गांव पहुंच गई। चकबंदी अधिकारियों और फोर्स को देख कर ग्रामीण भी एकत्रित हो गए। उन्होंने चकबंदी अधिकारियों के विरोध में जुलूस निकाला और चकबंदी अधिकारियों के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की। ग्रामीणों के भारी विरोद के बाद गुरुवार को भी चकबंदी के एसीओ मोहित दुबे, कानून गो अशोक उपाध्याय, लेखपाल रवी यादव, प्रभात यादव, सौरभ यादव, संजीव आदि बिना नापतौल किये वापस लौट गए। इसके बाद ग्रामीणों ने भी एक बैठक की और इस मामले के विरोध में धरना प्रदर्शन की रणनीति बनाई। चेतावनी दी अगर चकबंदी अधिकारियों ने अपनी हठधर्मिता नहीं छोड़ी तो ग्रामीण आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। विरोध करने वालों में प्रधान विनीता, प्रधान पति वीनेश, सुरेंद्र, अनिल सक्सेना, ठाकुर छक्कन, मुन्नालाल आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

सभी चिकित्सालयों में डेंगू की जांच सुनिश्चित कराने के दिए निर्देश

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में कलैक्ट्रेट सभागार में डेंगू बुखार की रोकथाम, नियंत्रण एवं प्रभावी कार्यवाही के लिए अंतर्विभागीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने प्रतिभाग किया एवं अपने-अपने विभाग की तैयारियों और आगामी कार्ययोजना की जानकारी दी। डीएम ने कहा कि इस वर्ष ‟देखें, साफ करें, ढ़केंरू डेंगू को हराने के उपाय करें‟ थीम पर आयोजित होने वाले 10 वें राष्ट्रीय डेंगू दिवस के अवसर पर सभी विभाग अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का पूर्ण निष्ठा एवं संवेदनशीलता से निर्वहन करें। जिलाधिकारी ने कहा कि डेंगू जैसी मौसमी बीमारी पर नियंत्रण के लिए सभी संबंधित विभागों को सामूहिक एवं समन्वित रूप से कार्य करना होगा। प्रत्येक विभाग को अपनी भूमिका के प्रति सजग रहना होगा। नगर स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा बताया गया कि शहर में नियमित सफाई अभियान चलाया जा रहा है। नालियों की सफाई, जलभराव की समस्या का समाधान एवं कीटनाशक दवाओं का छिड़काव किया जा रहा है। फॉगिंग मशीनों की संख्या बढ़ाकर सघन फॉगिंग कराई जा रही है। डीएम ने जिला मलेरिया अधिकारी के साथ ज्वाइंट माइक्रो प्लान तैयार कर कार्य करने के निर्देश दिए।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 नीरज त्यागी ने बताया कि सभी प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर डेंगू की जांच व उपचार की व्यवस्था की गई है। बुखार के मरीजों की स्क्रीनिंग कर उन्हें आवश्यकतानुसार एलाइजा टेस्ट के लिए भेजा जा रहा है। इसके अलावा ब्लड बैंक में प्लेटलेट्स की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। सीएमओ ने बताया कि सामूहिक रूप से स्कूलों, कॉलेजों एवं सार्वजनिक स्थलों पर जन जागरूकता अभियान चलाने की भी योजना बनाई गई है। नुक्कड़ नाटक, पंपलेट, होर्डिंग्स एवं सोशल मीडिया के माध्यम से आमजन को डेंगू से बचाव की जानकारी दी जा रही है। विकास विभाग एवं पंचायती राज विभाग को निर्देशित किया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी जलभराव की समस्या न होने दें। ग्राम प्रधानों व आशा कार्यकताओं को सक्रिय कर डेंगू के लार्वा नष्ट करने के लिए अभियान चलाएं। शिक्षा विभाग को निर्देशित किया गया कि सभी शिक्षण संस्थानों में प्रत्येक सप्ताह ‟ड्राई डे‟ मनाया जाए, जिसमें सभी जल स्रोतों की सफाई की जाए एवं लार्वा न पनपने दिया जाए।

जिला मलेरिया अधिकारी ने बताया कि डेंगू का मच्छर साफ पानी में पनपता है। कूलर, बाल्टी, फ्लावर पॉट, फ्रिज बकेट एवं अन्य जगहों पर पानी एकत्रित न होने दें। डेंगू के मच्छर दिन में काटते हैं, ऐसे में बच्चों को फुल बांह की कमीज पहनाएं। बैठक के अंत में डेंगू को भगाने के लिए शपथ भी दिलाई गई। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि डेंगू के विरुद्ध जारी इस अभियान को गंभीरता से लें एवं जनता को इससे सुरक्षित रखने के लिए हर संभव प्रयास करें। सभी विभाग अपने स्तर पर सतर्कता बनाए रखें एवं आपसी समन्वय से कार्य करें।

विजय शाह पर राष्ट्रद्रोह की धाराओं में मुकदमा चलाया जाए: विवेक बंसल

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : गत माह सीमा पार से आये आतंकवादियों ने पहलहाम मे 26 पर्यटकों की हत्या करदी थी इस नरसिंघार से पूरे देश मे आतंकवाद के खिलाफ कठोर कार्यवाही किये जाने की मांग उठ रही थी। इसी क्रम मे भारतीय सेनाओं ने इस माह के प्रारम्भ में आतंकवादियों के खिलाफ ऑपरेशन सिन्दूर अभियान चलाया जिसमे आतंकवादियों के नौ प्रमुख ठिकाने ध्वस्त कर दिये गये। ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान एक जांबाज योद्धा के रूप मे उभरी महिला सैन्य अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी के विरुद्ध भाजपा की मध्य प्रदेश सरकार के जनजातीय कल्याण मंत्री विजय शाह ने कर्नल सोफिया कुरैशी के प्रति काफी निम्नस्तर की भाषा का प्रयोग करते हुए ब्यान दिया था।

विजय शाह द्वारा दिये गये ब्यान के विरोध में पूरे देश मे गुस्से की लहर है अपने रोष को व्यक्त करने के उद्देश से पूर्व विधायक विवेक बंसल के नेतृत्व में जिलाध्यक्ष व महानगर अध्यक्ष के साथ कांग्रेसजनों ने एक भारी विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारी रेलवे रोड स्थित कांग्रेस कार्यालय से हाथों मे तिरंगे झंडे लेकर जुलुस के रूप मे मालगोदाम होते हुए कलेक्ट्रेट की और चले प्रदर्शनकारी भाजपा सरकार व भाजपा विरोधी नारेबाजी करते हुए चल रहे थे। ये जुलुस जब पुलिस अधीक्षक नगर कार्यालय समक्ष पहुंचा तो वहॉ पुलिस बल ने उन्हें रोक लिया वहां विवेक बंसल ने पुलिस अधीक्षक नगर व एसीएम द्वितीय से वार्ता की जिसके फलस्वरूप विवेक बंसल ने कार्यक्रम वहीं समाप्त कर दिया। इसके बाद वहॉ राष्ट्रपति को सम्बोधित एक ज्ञापन एसीएम द्वितीय अनिल कटियार को दिया। ज्ञापन के द्वारा मांग की गई कि मंत्री विजय शाह को तत्काल बर्खास्त किया जाए और उसके खिलाफ राष्ट्रद्रोह की धाराओं में मुकदमा चलाया जाए। इस अवसर पर विवेक बंसल ने कहा कि सेना हमारी सुरक्षा का कवच्छ है कोई भी अपमान और कोई भी निंदनीय ब्यान जो भी इस देश और सेना से प्यार करता है वो इसको कदापि बर्दाश्त नहीं करेगा। विरोध प्रदर्शन में वरिष्ठ कांग्रेसी श्रीमती रूही जुबैरी, इं विश्वंभर सिंह, पूर्व अध्यक्ष हाजी नौशाद कुरैशी, पूरनचंद देशमुख, गया प्रसाद गिर्राज, अखिलेश शर्मा, पूर्व अध्यक्ष तल्हा अबरार, सलाउद्दीन वसी, मोहम्मद जियाउद्दीन राही, सय्यद शहजाद हुसैन, राजू सोल्जर, कफील अहमद खा, पार्षद बिजेंद्र सिंह बघेल, उजैर दिलशाद, लक्ष्मी नारायण, अमजद हुसैन, बाबुद्दीन अब्बासी, गोपाल निश्रा, ओम प्रकाश जी, शाहिद खान, एम जमाल खान, शाहिद कुरेशी, सरदार अजीत सिंह, अयाज कुरैशी, आमिर मुंतजिर, इरशाद फरीदी, आनंद बघेल, जितेंद्र कुमार तोशी आदि के साथ भारी संख्या मे कांग्रेसजन मौजूद थे।

दोस्ती, लगाव या आकर्षण में कोई गलत कदम न उठायें

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : शुक्रवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संजीव सुमन के निर्देशन में ऑपरेशन जागृति अभियान के क्रम में थाना प्रभारियों, महिला पुलिसकार्मिकों द्वारा महिला एवं बालिकाओं को ऑपरेशन जागृति-4 के उद्देश्यों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्रदान की जा रही है और अभियान का जन-जन तक प्रचार प्रसार करने की अपील की गई। श्रीमती अनुपम कुलश्रेष्ठ महोदया अपर पुलिस महानिदेशक आगरा जोन आगरा द्वारा जोन स्तर पर महिलाओं व बालिकाओं की सुरक्षा, सशक्तिकरण, संवाद व परामर्श एवं विभिन्न प्रकार के अपराधों के बारे में जागरूकता पैदा करने हेतु जोन स्तर पर ऑपरेशन जागृति

अभियान की शुरूआत की गयी थी। ऑपरेशन जागृति अंतर्गत महिलाओं के प्रति होने वाले अपराध की रोकथाम, उनकी सुरक्षा, समानता व अधिकार पर चर्चा, महिलाओं को मोहरा बनाकर झूठे केस दायर करना, किशोरावस्था में प्रेम प्रसंगों के कारण घर से पलायन, साइबर हिंसा व सुरक्षा, नशे के दुष्परिणामों से बचाव व पारिवारिक विघटन के मामलों पर चर्चा शामिल है।

प्रशिक्षित बीट पुलिस अधिकारी, थाना प्रभारी व बीट इंचार्ज द्वारा अपने द अपने क्षेत्रों के ग्राम पंचायत स्तर पर गाँवों मौहल्ले में महिलाओं एवं किशोरियों के साथ समन्वय करते हुए विभिन्न कार्यक्रम, नुक्कड़ सभा आयोजित कर जागृति के उद्देश्यों के प्रति जागरुक किया जा रहा है। बीट पुलिस अधिकारी द्वारा ग्राम पंचायत व विद्यालयों में भ्रमण कर छात्राओं को जागरुक किया जा रहा है। ऑपरेशन जागृति अभियान की सहायता से महिलाओं व बालिकाओं के प्रति अपराधों में कमी आयेगी, गलत सूचनाएं दर्ज करने मे भी कमी आयेगी, कांउसलिंग और रिपोर्टिंग सिस्टम मजबूत होगा, पलायन सम्बन्धी मामलों में भी कमी आयेगी। इन सभी परिस्थितियों में सामाजिक जागरूकता, संवाद शिक्षा और परामर्श की बेहद आवश्यकता है ताकि महिलायें एवं बालिकायें इस प्रकार के षडयंत्रों का शिकार न बने, भावनाओं में बहकर अपना जीवन बर्वाद न करें और उन्हें मोहरा न बनाया जाए, यदि वास्तव में उनके साथ किसी प्रकार का अपराध घटित होता है तो वह सच बोलने की हिम्मत रख पाये और विधिक कार्यवाही के साथ-साथ उनकोcounselling@support मिल सके।

पटना एयरपोर्ट पर यात्री के बैग से जिंदा कारतूस बरामद

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ जय प्रकाश नारायण अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर शुक्रवार को हैदराबाद जाने वाले एक यात्री के बैग से दो जिंदा कारतूस बरामद किए गए। जिससे एयरपोर्ट पर अफरा तफरी मच गया। जानकारी के अनुसार यह मामला इंडिगो की फ्लाइट संख्या 6ए 6127 से जुड़ा है, जो पटना से हैदराबाद के लिए रवाना होने वाली थी। आरोपी यात्री की पहचान मोहम्मद राशिद अख्तर के रूप में हुई है, जो हैदराबाद होते हुए मस्कट जाने वाला था। सूत्रों के अनुसार, सुरक्षा जांच के दौरान जब मोहम्मद राशिद का बैग स्कैनर से गुजारा गया तो स्क्रीन पर संदिग्ध वस्तु दिखाई दी। इसके बाद इंडिगो एयरलाइंस के सुरक्षा अधिकारियों ने तत्काल सतर्कता बरतते हुए बैग को अलग किया और गहन तलाशी ली। तलाशी में बैग से दो जिंदा कारतूस बरामद हुए। इस घटना के बाद एयरपोर्ट पर तैनात सुरक्षा एजेंसियों में हड़कंप मच गया। इंडिगो एयरलाइंस के सुरक्षा असिस्टेंट मैनेजर धीरज कुमार ने तुरंत पटना एयरपोर्ट थाना को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर आरोपी को हिरासत में ले लिया। पुलिस पूछताछ में मोहम्मद राशिद कारतूस के संबंध में संतोषजनक जवाब नहीं दे सका। उसने कोई वैध हथियार लाइसेंस भी प्रस्तुत नहीं किया और यह भी स्पष्ट नहीं कर पाया कि कारतूस उसके बैग में कैसे पहुंचे। पुलिस ने प्राथमिक जांच के आधार पर आरोपी के खिलाफ भारतीय शस्त्र अधिनियम की धाराओं के अंतर्गत मामला दर्ज कर उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। पटना एयरपोर्ट थाना के प्रभारी ने बताया कि पूछताछ के दौरान आरोपी ने बार-बार बयान बदले और किसी भी ठोस जानकारी से बचता रहा। इस कारण उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई की गई।

पटना में एक सप्ताह से लापता महिला की शव बरामद

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के आईआईटी थाना क्षेत्र अंतर्गत कंचनपुर गांव के एक बगीचे में गुरुवार की देर रात ग्रामीणों ने एक अधेड़ महिला का सड़ा-गला शव पड़ा देखा। स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही अमहारा थाना की पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। पुलिस के अनुसार, मृत महिला की पहचान बिहटा थाना क्षेत्र के बंगला मुसरी निवासी 72 वर्षीय जानकी देवी के रूप में की गई है। वह मानसिक रूप से अस्वस्थ थीं और पिछले एक सप्ताह से लापता थीं। जानकी देवी के परिजनों ने उनके लापता होने की शिकायत पहले ही बिहटा थाना में दर्ज करवाई थी। जानकारी के अनुसार बृहस्पतिवार को जब गांव के कुछ लोगों ने बगीचे से दुर्गंध आती देखी, तो उन्होंने आसपास तलाश की। तभी उन्हें झाड़ियों के पास महिला का शव मिला, जो सड़-गल चुका था और उसकी पहचान मुश्किल हो रही थी। कुछ ग्रामीणों का मानना है कि महिला की हत्या कर शव को यहां लाकर फेंका गया है। उनका कहना है कि जानबूझकर महिला के चेहरे को बिगाड़ा गया है ताकि पहचान न हो सके। इस बीच पुलिस ने मौके से कोई संदिग्ध सामान या साक्ष्य बरामद नहीं किया है, जिससे घटना के कारणों पर सीधे तौर पर कुछ कहा जा सके। मामले की गंभीरता को देखते हुए पटना से फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी की टीम को भी सूचना दी गई है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और रिपोर्ट आने का इंतजार किया जा रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और फॉरेंसिक जांच के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि जानकी देवी की मौत किन परिस्थितियों में हुई और इसमें किसी की संलिप्तता है या नहीं। पुलिस परिजनों से भी पूछताछ कर रही है और महिला के अंतिम दिनों की गतिविधियों की जानकारी जुटा रही है।

पटना स्थित पुलिस लाइन में तैनात महिला कोस्टेबल्कि हुई मौत

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ राजधानी पटना के पुलिस लाइन में तैनात महिला कांस्टेबल की अचानक तबीयत बिगड़ने से इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक महिला कांस्टेबल की पहचान खगड़िया निवासी सोनी कुमारी के रूप में हुई है। यह घटना गुरुवार की रात की बताई जा रही है, जब अचानक सोनी कुमारी की तबीयत बिगड़ गई और उन्हें सांस लेने में परेशानी होने लगी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, गुरुवार रात ड्यूटी के दौरान महिला कांस्टेबल की तबीयत अचानक बिगड़ गई। उन्हें तत्काल नजदीकी तारा हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। महिला कांस्टेबल को अस्पताल लाने के समय ही उनकी हालत गंभीर बनी हुई थी। चिकित्सकों द्वारा उन्हें बचाने का हरसंभव प्रयास किया गया, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। वही प्रारंभिक जांच में हार्ट अटैक आने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों की पुष्टि हो सकेगी। इस घटना की पुष्टि गांधी मैदान थाना प्रभारी ने की है। फिलहाल पुलिस प्रशासन ने मृतका के परिजनों को इस दुखद घटना की सूचना दे दी है और आगे की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। महिला कांस्टेबल सोनी कुमारी एक कर्मठ और कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी के रूप में जानी जाती थीं। वही प्रशासन द्वारा उनके परिवार को हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया गया है। मृतका के पार्थिव शरीर को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंपे जाने की प्रक्रिया चल रही है।

पुल निर्माण मांग को लेकर नाराज ग्रामीणों ने उत्तर कोयल नहर निर्माण कार्य को रोका

दैनिक समाज जागरण
अनील कुमार संवाददाता
नबीनगर (औरंगाबाद)

नवीनगर (बिहार) नबीनगर प्रखण्ड क्षेत्र के लभरी गांव के समीप पुल का निर्माण नहीं किये जाने से नाराज ग्रामीणो ने निमार्णाधीन उत्तर कोयल नहर कार्य को अपने गांव के पास रोक दिया हैं। जानकारी के अनुसार पूर्व के बने उत्तर कोयल नहर को पुनः नये सिरे से निर्माण कार्य कराया जा रहा है निर्माण का कार्य जोर-शोर से किया जा रहा है। लेकिन लभरी के ग्रामीणों ने गांव के समीप आने जाने के लिए पुल बनाने की मांग करते हुए कार्य रोक दिया है। ग्रामीणों के विरोध के बाद लभरी गांव के समीप निर्माण कार्य ठप पड गया है।मामला गंभीर होता देख संवेदक के द्वारा प्रशासन को इसकी जानकारी दिया गया। सूचना मिलते ही स्थानीय थाना पुलिस बल के साथ अंचल अधिकारी निकहत प्रवीण मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों को समझने का प्रयास किया लेकिन ग्रामीण अपनी मांग पर अड़े रहें।अंचलाधीकारी के द्वारा बताया गया कि नहर निर्माण का कार्य चल रहा है। गांव के लोगों ने पुल बनाने की मांग को लेकर कार्य को रोककर विरोध किया है। घंटों देर तक प्रशासन द्वारा ग्रामीणों को समझने का प्रयास किया, लेकिन सभी ग्रामीण अपनी मांग को लेकर अड़े हुए हैं। सभी ग्रामीण व महिलाएं इससे संबंधित आवेदन सिंचाई विभाग अधिकारियों को दे दिए हैं। गांव के लोगों का कहना है कि हम सभी किसान वर्ग से आते हैं और 75 % जमीन नहर के उस पार है। गांव के समीप पूल नहीं होने से खेती के दिनों में काफी परेशानी होगी। गांव से करीब एक किलोमीटर दूर आगे देवी कांडी के समीप पुल निर्माण कराया जा रहा है तो दूसरा गांव से पिछे एक किलोमीटर की दूरी पर कांडी गांव के समीप पुल का निर्माण कार्य हो रहा है ऐसे में लभरी गांव के लोगों को नहर पार कर खेती करने या प्रखंड मुख्यालय से जुड़ने के लिए एक किलोमीटर अधिक दुरी तय करना होगा।इन सब परेशानियों को देखते हुए ग्रामीणों ने लभरी गांव के समीप नहर पार करने हेतु एक छोटा सा पुल देने की मांग पिछले चार-पांच महीने यानी नहर निर्माण कार्य आरंभ के दौरान से ही कर रहे हैं। नहर निर्माण कार्य में जुटे संबंधित अधिकारियों ने भी ग्रामीणों ने को आश्वासन देते हुए एक छोटा पुल निर्माण कराये जाने की बात कही थी। लेकिन अब इस बात से इन्कार किया जा रहा है जिससे नाराज लभरी गांव के ग्रामीणों ने कार्य को रोक दिया हैं। इनका कहना है कि जब तक हम लोगों को पुल नहीं बनेगा निर्माण कार्य ठप रहेगा।

पटना में गोली मारकर माली की हत्या

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के बिहटा थाना अंतर्गत बाजितपुर गांव में गुरुवार की देर रात उस समय हड़कंप मच गया जब गांव के ही एक माली की गोली मारकर हत्या कर दी गई। मृतक की पहचान बाजितपुर गांव निवासी नरेश कुमार के 30 वर्षीय पुत्र राकेश कुमार के रूप में हुई है, जो पेशे से एक माली था और शादियों व अन्य आयोजनों में सजावट का काम किया करता था। जानकारी के अनुसार, गुरुवार की रात राकेश कुमार एक शादी समारोह में सजावट का काम निपटाकर अपने घर लौट रहा था। उसी दौरान गांव के मंदिर के पास पहले से घात लगाए बैठे गांव के ही युवक कुणाल सिंह ने उसे रोक लिया। बताया जाता है कि दोनों के बीच पहले से कोई आपसी रंजिश चली आ रही थी, इसी को लेकर दोनों के बीच कहासुनी हुई और अचानक कुणाल सिंह ने राकेश को गोली मार दी। गोली लगने से राकेश वहीं गिर पड़ा और गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल अवस्था में परिजन उसे तुरंत बिहटा स्थित एक निजी अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही बिहटा थाना प्रभारी राजकुमार पांडेय पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और मामले की छानबीन शुरू की। घटनास्थल से पुलिस ने साक्ष्य एकत्र किए और पटना की फॉरेंसिक टीम को भी सूचित किया गया है। पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

मृतक राकेश कुमार अपने पीछे गर्भवती पत्नी और एक छोटे बच्चे को छोड़ गया है। उसकी हत्या से पूरे गांव में शोक और आक्रोश का माहौल है। ग्रामीणों ने बताया कि राकेश एक मेहनती और शांत स्वभाव का व्यक्ति था, जो अपने परिवार का पालन-पोषण मेहनत से करता था। उसकी किसी से कोई विशेष दुश्मनी नहीं थी, लेकिन कुछ महीनों से आरोपी कुणाल सिंह से किसी बात को लेकर उसका विवाद चल रहा था। घटना के बाद से आरोपी कुणाल सिंह फरार है। पुलिस ने आरोपी की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी शुरू कर दी है। वही बिहटा थानाध्यक्ष राजकुमार पांडेय ने बताया कि हमें घटना की सूचना रात में ही मिली। गांव पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि घायल राकेश को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया था, जहां उसकी मौत हो गई। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है।

गर्मी की छूट्टी में समर कैंप के लिए शिक्षा सेवकों का किया गया उन्मुखीकरण

दैनिक समाज जागरण
अनील कुमार संवाददाता
नबीनगर (औरंगाबाद)

नबीनगर (बिहार) शुक्रवार को बीआरसी परिसर नबीनगर में बच्चों की गर्मी की छुट्टी में समर कैंप आयोजन करने के लिए नबीनगर के सभी शिक्षा सेवक एवं तालीमी मरकज का एक दिवसीय कार्यशाला के आर पी राजकुमारी की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया।इस कार्यशाला में प्रथम संस्था से आए दिनेश कुमार सिंह एवं बारुण प्रखंड के प्रथम संस्था प्रभारी डॉली कुमारी ने सभी शिक्षा सेवकों को गर्मी की छुट्टी में कक्षा 4 से 6 तक के गणित में कमजोर बच्चों को दक्षता जांच कर उन्हें उनके स्तर तक पहुंचाना है।इसके लिए टेस्टिंग टूल के माध्यम से सभी शिक्षा सेवकों को बिस्तर से बताया गया। प्रथम से आए दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि समर कैंप का आयोजन 20 मई से प्रारंभ कर दिया जायेगा। कार्यशाला में उन्होंने विस्तार से बताते हुए कहा कि इसके लिए मैट्रिक या इससे ऊपर कक्षा के दो दो वीटी का चयन किया गया है जो बच्चों को सुबह या शाम उनके सुविधानुसार 1.30 घंटे गणित पढ़ाएंगे। वही कार्यशाला में के आर पी राजकुमारी द्वारा सभी शिक्षा सेवकों से दो दिनों के भीतर नए सत्र के लिए 20 असाक्षर महिलाओं और 25 बच्चों की सूची जमा करने को कहा गया।

पटना में युवक की हत्या से सनसनी, गांव के युवकों पर लगा हत्या का आरोप.

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ जिले के परसा थाना अंतर्गत सिमरा गांव में गुरुवार की रात एक युवक की हत्या कर दी गयी है। मृत युवक की पहचान धर्मेंद्र के 28 वर्षीय पुत्र मंटू कुमार के रूप में की गई है। शुक्रवार की सुबह जब ग्रामीणों ने गांव के बाहर उसका शव पड़ा देखा तो अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना मिलते ही टीम मौके पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। मृतक के परिजन पूरी तरह सदमे में हैं और लगातार चीख-पुकार मची हुई है. पत्नी और मां-बाप का रो-रोकर बुरा हाल है।परिवार

वालों का आरोप है कि कुछ परिचित युवकों ने पहले मंटू को कॉल कर बाहर बुलाया और फिर उसकी बेरहमी से पिटाई कर दी। गंभीर चोटों के कारण उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना को लेकर गांव के जिन युवकों पर शक है, उनके नाम पर एफआईआर दर्ज कराई गई है। पुलिस का कहना है कि शव पर चोट के निशान तो हैं लेकिन गहरे जख्म नहीं मिले हैं। थानाध्यक्ष मेनका रानी ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट होगा। उन्होंने कहा कि पुलिस मामले की बारीकी से जांच कर रही है और सभी पहलुओं को खंगाला जा रहा है। मृतक की पत्नी ने बताया कि शाम में मंटू को किसी का कॉल आया था, जिसके बाद वह घर से बाहर गया था। इसके बाद वह वापस नहीं लौटा। पुलिस कॉल रिकॉर्ड खंगाल रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि फोन किसने किया और उसका घटना से क्या संबंध है। वही पुलिस तकनीकी साक्ष्य और पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार कर रही है। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि हत्यारों को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

शंकरपुर में नौ कुंडीय लक्ष्मी नारायण महायज्ञ में वेद मंत्र के साथ स्वाहा:स्वाहा: से माहौल हुआ भक्तिमय

समाज जागरण
मनोज कुमारसाह , गोड्डा

मेहरमाः प्रखंड अंतर्गत शंकरपुर गांव में आयोजित नौ कुंडीय लक्ष्मी नारायण महायज्ञ में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही है। शुक्रवार को इसकः तीसरे दिन दर्जनों श्रद्धालुओं ने यज्ञ मंडप की परिक्रमा कर यज्ञ परिसर में स्थापित भगवान गणेश, भगवान श्रीराम, माता सीता, भगवान शिव माता पार्वती, मां दुर्गा सहित विभिन्न देवी देवताओं की स्थापित प्रतिमा का दर्शन व पूजन कर मेले का लुफ्त उठाया। महामंडलेश्वर गंगाचार्य महाराज तथा उप आचार्य शैलेंद्र शास्त्री महाराज द्वारा यज्ञ संपन्न कराया जा रहा है। प्रत्येक दिन यज्ञ दो पाली में सुबह आठ से 12 तथा संध्या तीन से छह बजे तक आयोजित की जा रही है। वेद मंत्र के साथ स्वाहाः स्वाहाः से माहौल पूरी तरह भक्तिमय बना हुआ है। सुबह शाम आरती और महा प्रसाद के लिए भी श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। इस अवसर पर अखंड संकीर्तन भी जारी है। साथ ही प्रत्येक दिन संध्या साध्वी पूजा शर्मा और साध्वी अंजली शर्मा एवं उनकी टोली द्वारा भागवत कथा किया जा रहा है। बीते गुरुवार कि शाम भागवत कथा में पूर्व विधायक अशोक कुमार भगत भी शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने यज्ञ और भागवत कथा के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए लोगों से इसका लाभ लेने का आह्वान किया। यज्ञ परिसर में कई सामाजिक कार्यकताओं द्वारा शुद्ध पेयजल शरबत, जुस आदि की व्यवस्था की गई है। यज्ञ समिति की ओर से प्रत्येक दिन भंडारा का भी आयोजन किया गया है। यज्ञ में यजमान की भूमिका पूजा समिति के अध्यक्ष रमेश कुमार सिंह, विभूति राम, सुमन कुमार, उमाशंकर राणा, राजेश कुमार, डब्लू कुमार, शीतल कुमार, विभाष कुमार, दीपक आनंद सभी अपनी- अपनी पत्नी के साथ मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में अध्यक्ष रमेश कुमार सिन्हा, सचिव विभूति प्रसाद राम, कोषाध्यक्ष उमाशंकर राणा तथा सदस्यों के रूप में शैलेंद्र सुमन, मनोज कुमार, सुमन कुमार, विभाश कुमार, राजेश कुमार, प्रभास कुमारसिन्हा, अभय प्रसाद राम, ज्योतिष प्रसाद राम, मांगन प्रसाद, गणेश प्रसाद राम, नीरज कुमार,गुंजन कुमार, रंजीत कुमार, राजेश, चंदन, विक्की, गौरव, पंकज सहित अन्य की ओर से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है।

जमशेदपुर के हॉस्पिटैलिटी सेक्टर को मिलेगा नया आयाम, रेडिसन होटल का उद्घाटन 18 मई 2025

दैनिक समाज जागरण
16.05.2025 जिला
संवाददाता चांद कुमार लायेक
पूर्वी सिंहभूम जमशेदपुर

जमशेदपुर शहर का हॉस्पिटैलिटी सेक्टर अब एक नए मुकाम की ओर बढ़ने जा रहा है। आगामी 18 मई 2025 को रेडिसन होटल जमशेदपुर के भव्य उद्घाटन के साथ शहर के पर्यटन उद्योग को नयी पहचान मिलेगी। बिस्टुपुर पी एंड एम हाई-टेक सिटी सेंटर मॉल के केंद्र में स्थित रेडिसन होटल आधुनिक सुविधाओं का बेहतरीन संगम है। होटल में कुल 105 शानदार कमरे हैं, जो इसे जमशेदपुर का सबसे बड़ा आवासीय इन्वेंट्री बनाते हैं। इसके अलावा, दो भव्य बैंक्वेट हॉल, एक बोर्डरूम, स्पा, सैलून, फिटनेस सेंटर, लाउंज बार, बिजनेस सेंटर और वॉक-इन लाइब्रेरी जैसी अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। होटल के महाप्रबंधक विकास वर्मा ने बताया कि रेडिसन होटल का उद्घाटन 18 मई को होगा जबकि व्यवसायिक रूप से 19 मई से प्रारंभ होगा। यह होटल न सिर्फ व्यवसायिक यात्रियों के लिए बल्कि पर्यटकों के लिए भी पहली पसंद साबित होगा। रेडिसन होटल का ऑल-डे डाइनिंग रेस्टोरेंट 'सारंडा' स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय व्यंजनों का स्वादिष्ट संगम है। इसके अलावा, दो प्राइवेट डाइनिंग रूम भी उपलब्ध हैं। होटल का लाउंज बार 'पलाश' प्राकृतिक प्रकाश और वाक-इन लाइब्रेरी के साथ खासतौर पर पोस्ट-वर्क रीलैक्सेशन के लिए डिजाइन किया गया है। बिजनेस मीटिंग्स और पारिवारिक आयोजनों के लिए होटल में आधुनिक तकनीक से युक्त 'सुबर्नरेखा' नामक पिलरलेस हॉल है। शादी जैसे निजी समारोहों के लिए विशेष डेकोर की व्यवस्था भी की गई है। स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के क्षेत्र में भी होटल ने खास इंतजाम किए हैं। यहां 'तत्त्वा स्पा' में विविध प्रकार उत्तम स्पा सेवाएं और फिटनेस सेंटर में पर्सनल ट्रेनिंग सेशन्स उपलब्ध हैं। विकास वर्मा ने कहा, "रेडिसन होटल जमशेदपुर न केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं देगा, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार और विकास के नए अवसर भी लाएगा। हमारा उद्देश्य शहर को एक नई आयाम देना है।" रेडिसन होटल का उद्घाटन जमशेदपुर के हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है, जिससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि यह शहर की आधुनिकता की छवि को भी मजबूती देगा।

भाजपा के नेता और मंत्री लगातार कर रहे सेना और तिरंगे का अपमान,भाजपा शीर्ष नेतृत्त्व मौन - आनन्द बिहारी दुबे

दैनिक समाज जागरण 16.05.2025 जिला संवाददाता चांद कुमार लायेक पूर्वी सिंहभूम जमशेदपुर

जमशेदपुर पूर्वी सिंहभूम जिला कांग्रेस अध्यक्ष आनन्द बिहारी दुबे ने अपने बयान जारी कर कहा कि भाजपा के नेताओं की ओर से लगातार हमारी सेना और तिरंगे का अपमान अत्यंत शर्मनाक और दुर्भाग्यपूर्ण है। पहले मध्य प्रदेश के एक मंत्री ने महिला सैन्य पदाधिकारी पर अभद्र टिप्पणी की फिर भाजपा के तिरंगा यात्रा के दौरान कई जगह तिरंगे के सम्मान से खिलवाड़ किया गया।

इनके राजस्थान के एक विधायक तो राष्ट्रीय ध्वज से अपना नाक और चेहरा पोछते देखे गए और अब मप्र के उपमुख्यमंत्री ने सेना का घोर अपमान किया है। पूरे देश की जनता सेना के शौर्य और तिरंगे के सम्मान मे मर-मिटने को तैयार है, लेकिन भाजपा के लोग सेना और तिरंगे को अपमानित कर रहे हैं और भाजपा अपने इन नेताओं पर कार्रवाई करने की जगह उन्हें बचाने में पूरा जोर लगा रही है। भाजपा ऐसा करके हमारी सेना और देशवासियों को क्या संदेश देना चाहती है ? क्या भाजपा का शीर्ष नेतृत्व एक रणनीति के तहत भारतीय सेना और तिरंगा ध्वज का अपमान करवा रही है ?

चाकुलिया प्रखण्ड में मनरेगा अंतर्गत संचालित बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत आम फलोत्पादन के लिए बाजार उपलब्धता हेतु प्रखंड स्तरीय सम्मेलन

दैनिक समाज जागरण
16.05.2025 जिला
संवाददाता चांद कुमार लायेक
पूर्वी सिंहभूम जमशेदपुर

आम बागवानी योजना के लाभुकों को उनके उत्पादित फलों का उचित मूल्य प्राप्त हो तथा बाजार का एक्सपोजर मिले इस बाबत विचार-विमर्श हेतु चाकुलिया प्रखण्ड परिसर में प्रखण्ड स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन में बीडीओ आरती मुंडा, एपीओ समेत जनप्रतिनिधि, लाभुक, बागवानी मित्र, कृषक मित्र, मेट, ग्राम रोजगार सेवक, प्रखण्ड कार्यक्रम पदाधिकारी, सहायक अभियंता, कनीय अभियंता, ATM, BTM, प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी, जनसेवक, पंचायत सेवक, JSLPS, CSOs एवं आम क्रेता/विक्रेता (Vendors), एनजीओ के प्रतिनिधि सहित विभिन्न संबंधित हितधारकों की सक्रिय भागीदारी रही । सम्मेलन का उद्देश्य बागवानी उत्पादों, विशेषकर आम के विपणन और मूल्य संवर्धन हेतु ठोस रणनीति विकसित करना था, जिससे लाभुकों को उचित बाजार मूल्य प्राप्त हो सके एवं बागवानी को एक सतत आजीविका के रूप में प्रोत्साहन मिल सके । कार्यशाला के पश्चात फिल्ड विजिट के दौरान एनजीओ Intent to Solution एवं श्रीसरन्या द्वारा पांच बागवानी लाभुकों के बगान का चयन किया गया जिसका उत्पाद वे बेचकर किसानों को मंडी के भाव के आधार पर देंगे, बिचौलियों की कोई भूमिका नहीं होगी। किसानों ने जिला प्रशासन के इस पहल की सराहना करते हुए कह कि औने-पौने दाम में आम बेचना पड़ रहा था, इस प्रयास से उन्हें उचित दाम मिलेगा तथा बाजार को भी समझ सकेंगे।

केंद्रीय मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने नेपाल के काठमांडू में प्रथम सागरमाथा संवाद में नाजुक पर्वतीय इकोसिस्टम्स की रक्षा के लिए 'वैश्विक कार्रवाई हेतु पांच सूत्रीय आह्वान' की रूपरेखा प्रस्तुत की

मंत्री महोदय ने अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट्स एलायंस के तहत सभी हिमालयी देशों से सहयोग करने का आह्वान करते हुए उन्नत सीमा पार संरक्षण प्रयासों पर बल दिया

केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने आज नेपाल के काठमांडू में आयोजित सागरमाथा संवाद के उद्घाटन सत्र में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इस उच्च स्तरीय वैश्विक संवाद का आयोजन 'जलवायु परिवर्तन, पर्वत और मानवता का भविष्य' थीम के तहत किया गया, जिसमें विश्वभर के मंत्रियों और जलवायु पर काम करने वाले अग्रणीय लोगों ने भाग लिया। शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए, श्री भूपेंद्र यादव ने वैश्विक जलवायु कार्रवाई के प्रति भारत की दृढ़ प्रतिबद्धता और हिमालय तथा अन्य पर्वतीय इकोसिस्टम्स की सुरक्षा के लिए सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने वैश्विक जलवायु संकट को संबांधित करने के लिए भारत की समर्पण भावना को रेखाकिंत किया। उन्होंने कहा, "इस ऐतिहासिक सभा में भारत का प्रतिनिधित्व करना गर्व का विषय है। सागरमाथा, जिसका अर्थ है 'आकाश का शीर्ष', उन पर्वतों की महिमा और उनकी रक्षा करने

विष्णुगढ़ में चोर बेलगाम,नींद में प्रशासन

चोरी का केंद्र बना विष्णुगढ़,बंद घरों को बना रहे है निशाना

प्रखंड में 6 महीने से चोरों का बोलबाला,ग्रामीणों का प्रशासन से उठता भरोसा

40 हजार नगदी समेत 5 लाख के जेवरात साफ कर गए चोर।

राहुल कुमार गुप्ता, संवादाता विष्णुगढ़, दैनिक समाज जागरण।

विष्णुगढ़ ।प्रखंड थाना क्षेत्र में चोरों का बोलबाला,लगातार दे रहे चोरी की घटना को अंजाम ।लगातार हो रहे चोरी से ग्रामीणों में भय का माहौल है ।6 महीने से चोरी का केंद्र बना

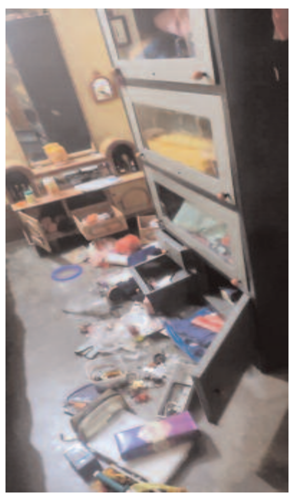

विष्णुगढ़ ।बीते गुरुवार रात्रि चेडरा निवाशी सुधीर कुमार राय पिता स्व.शंभू प्रसाद राय के घर चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम देकर 40 हजार नगदी समेत 5 लाख के जेवरात उड़ा ले गए।भुक्तभोगी सुधीर कुमार राय ने बताया कि सपरिवार घर के अंदर सोए थे,चोर सामने गेट का ताला तोड़कर घर के अंदर प्रवेश कर बड़ी सफाई से घटना को अंजाम दिया और परिवार के किसी सदस्य की इसकी भनक तक नहीं लगी ।सुबह उठकर देखा तो ताला टूटा हुआ था,घर का सामान बिखरा पड़ा था ।नगदी और जेवरात गायब थे ।भुक्तभोगी सुधीर कुमार राय के द्वारा विष्णुगढ़ थाने में आवेदन दे कर न्याय की मांग की है,मामले को लेकर जांच में जुटी पुलिस ।बताते है 6 महीने से लगातार हो रहे चोरी को लेकर प्रशासन के हाथ अब तक खाली ।ग्रामीणों का प्रशासन के प्रति मनोबल गिरता जा रहा है।

बड़कागांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एवं मॉडर्न पब्लिक स्कूल में डेंगू दिवस मनाया गया

समाज जागरण कुलदीप कुमार संवाददाता बड़कागांव

राष्ट्रीय डेंगू दिवस वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के तहत बड़कागांव प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अविनाश कुमार के अध्यक्षता में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बड़कागांव में डेंगू दिवस मनाया गया। वहीं मॉडर्न पब्लिक स्कूल में जागरूकता कार्यक्रम किया गया। डेंगू दिवस पर विद्यालय में क्विज प्रतियोगिता एवं जागरूकता के लिए रैली निकाला गया। मलेरिया सुपरवाइजर तरुण कुमार शर्मा के द्वारा बताया गया कि डेंगू एक हेमोरेजिक फीवर है। डेंगू वायरल बीमारी है इससे बचाव के लिए घर के आसपास जल जमाव नहीं होने देना है। कूलर के पानी को साफ करते रहना है, सप्ताह में एक दिन ड्राई डे

के रूप में मनाना है। डेंगू बीमारी का पता चलने पर तुरंत इसकी जानकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को दें। मौके पर मुख्य रूप से विद्यालय के प्राचार्य मो इब्राहीम, अन्य शिक्षक, स्वास्थ्य कर्मी मनोज प्रभाकर, नितेश रंजन, कमलेश कुमार, नवीन कुमार अन्य लोग उपस्थित थे।

विश्व डेंगू दिवस मे हुआ प्रभात फेरी/रेली /निबंध प्रतियोगिता का भव्य आयोजन।

आर्यन कुमार संवाददाता दैनिक समाज जागरण कटकमदाग।

/कटकमदाग प्रखण्ड के अंतर्गत सीएचसी/पीएचसी/आम/एचएससी मे एवं गांव के सरकारी/प्राइवेट स्कूलों मे विश्व डेंगू दिवस के अवसर पर हुआ विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन। चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अमित कुमार ,एमटीएस सुरेन्द्र कुमार, सी0एच0ओ0, निधि कुमारी,एएनएम सरिता कुमारी , रूपा कुमारी, मंजू कुमारी, लिपिक आशीष यादव, विकास कुमार,एमपीडब्ल्यू प्रदिप गिरी, राजेन्द्र प्रसाद, अनसुमन कुमार, दीपेश कुमार, मनोज कुमार,धुरेंद्र कुमार सिंह, पिंटू शर्मा, सहिया साथी दमयंती देवी सहिया नीरा देवी, माया देवी, तीला देवी एवं कर्मी के द्वारा भारतीय सेना के प्राक्रम को लेकर शौर्य दिवस, शहीद सैनिकों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए विश्व डेंगू दिवस कार्यक्रम का हुआ उद्घाटन। इसका मुख्य उद्देश्य डेंगू से सुरक्षा एवं बचाव

के प्रति जन समुदाय को जागरुक करना एवं बेहतर स्वास्थ के लिए उनका वैवहार परिवर्तन करना है। इस अवसर पर राजकीयकृत+2 उच्च विद्यालय कटकमसांडी के परिसर मे सभी छात्र छात्राओं एवं शिक्षको को लेकर प्रभात फेरी/रेली/निबन्ध प्रतियोगिता का हुआ भव्य आयोजन। उक्त कार्यकर्म की अध्यक्षता प्रभारी प्रधानध्यापक श्री विजय मसीह के द्वारा किया गया ।एमटीएस सुरेन्द्र कुमार ने डेंगू एवं अन्य वेक्टर जनित रोग के लक्षण, बचाव, एवं पूर्ण उपचार के बारे मे विस्तृत चर्चा करते हुए एक निबंध प्रतियोगिता कराया गया जिसमे प्रथम पुरस्कार कल्पना सिंह, दूतिये पुरस्कार प्राची कुमारी एवं तृतीय पुरस्कार अमित कुमार अग्रवाल को दिया गया। मानसून के दौरान एवं पश्चात डेंगू के प्रसरण की संभावना बढ़ जाती है। डेंगू वायरल बीमारी है जो संक्रमित मादा एडीस मच्छर के काटने से फैलता है। सप्ताह मे एक दिन ड्राई डे बनाने को कहा गया ताकि सभी तरह के जल पात्र मे पल रहे मच्छरों के प्रजनन अस्थल को नष्ट किया जा सके ।कार्य कर्म को सफल बनाने मे विद्यालय के सभी शिक्षकों ने सहयोग किया।

केरेडारी प्रखंड के बेंगवारी पंचायत के रैयतों तथा खनन परियोजना केरेंडारी (एनटीपीसी) के अधिकारियों के साथ उपायुक्त ने की वार्ता

शुद्ध पेयजल,प्रदूषण,रोजगार, सड़क, ब्लास्टिंग के समय स्थानीय लोगों की समस्या,महिलाओं को स्वरोजगार एवं कृषि जैसे मुद्दों पर उपायुक्त ने की निर्णायक चर्चा

एक सप्ताह के अंदर सभी मुद्दों पर कंपनी को प्रगति रिपोर्ट सौंपने का उपायुक्त ने दिया निर्देश

स्थानीय निवासियों और प्रभावित लोगों की समस्याओं और चिंताओं को नजरअंदाज न किया जाए: उपायुक्त

मनोज कुमार ब्यूरो चीफ दैनिक समाज जागरण हजारीबाग।

केरेडारी प्रखंड के बेंगवारी पंचायत के रैयतों तथा खनन परियोजना केरेंडारी (एनटीपीसी) के अधिकारियों के साथ उपायुक्त नैंसी सहाय ने आज शुक्रवार को कार्यालय सभाकक्ष में वार्ता की। बैठक में मुख्यतः शुद्ध पेयजल प्रदूषण,रोजगार, कृषि,सड़क, ब्लास्टिंग के समय स्थानीय लोगों की समस्या,महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने समेत कई मुद्दे पर निर्णायक चर्चा किया गया। केरेडारी का बेंगवारी पंचायत माइनिंग अधिग्रहण क्षेत्र में नहीं आता है,लेकिन सीमावर्ती पंचायतों में हो रहे खनन कार्यों के कारण यह पंचायत प्रत्यक्ष रूप से पूर्णतः प्रभावित है। खनन कार्य के कारण बेंगवारी पंचायत में शुद्ध पेयजल की समस्या,जमीनी जल स्तर में कमी,नदियों के सुख जाने से कृषि कार्य की समस्या उत्पन्न हो गई है,इन्हीं बिंदुओं के निराकरण को लेकर बेंगवारी पंचायत के रैयतों ने उपायुक्त के साथ बैठक की। उपरोक्त विषय को लेकर उपायुक्त नैंसी सहाय ने एनटीपीसी के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि रैयतों को शुद्ध पेयजल मिले यह सर्वोच्च प्राथमिकताओं में रहे,इस विषय पर किसी प्रकार का तर्क वितर्क स्वागत योग्य नहीं है। यह मनुष्य के स्वास्थ्य से जुड़ा है इसलिए इसे सर्वोच्च प्राथमिकता मिले। एनटीपीसी के द्वारा इन रैयतों को टैंकर के माध्यम से उपलब्ध कराए जा रहे पेयजल की जांच कराकर रिपोर्ट भेजने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि कंपनी इस बात का ख्याल रखे कि स्थानीयों को मूलभूत सुविधाओं से वंचित न होना पड़े। उन्होंने पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करानें को लेकर प्रभावित लोगों के घरों का आकलन कर डीप बोरिंग हेतु सर्वे कराने का निर्देश दिया ।सड़क के किनारे बसे होने के कारण ट्रकों से कोयले की ढुलाई के दौरान अत्यधिक कोल डस्ट और प्रदूषण के लिए ग्रीन नेट लगाने के उपायुक्त के निर्देश पर एनटीपीसी के द्वारा सहमति प्रदान की गई। कृषि को लेकर उपायुक्त ने कहा कई क्षेत्रों में कोल खनन के कारण जल स्तर कम होने तथा नदियों के सुख जाने से स्थानियों के कृषि कार्य प्रभावित हुए है उन्हें मर्चरिंग,ड्रिप सिंचाई, लिफ्ट सिंचाई के माध्यम से कृषि कार्य हेतु किस प्रकार की सुविधाओं को बहाल किया जा सकता है इस बाबत प्रखंड कृषि पदाधिकारी द्वारा प्रोजेक्ट तैयार कराने का निर्देश दिया,साथ ही एनटीपीसी को इस प्रोजेक्ट को धरातल पर उतारने के लिए सभी आवश्यक सहयोग करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य जीविका का महत्वपूर्ण श्रोत होता है ।रोजगार के मामले पर बेंगवारी पंचायत के शेष बचे 50 परिवारों को भी प्राथमिकता के आधार पर पॉलिसी के अनुसार नियुक्ति देने की बात कही,साथ ही भविष्य में भी रिक्तियों को भरने की आवश्यकता पर इन परिवारों के सदस्यों को प्राथमिकता देने का निर्देश दिया। खनन प्रभावित क्षेत्रों के परिवारों को आवश्यक सहयोग देने को भी कहा। उपायुक्त इन बचे 50 परिवारों की पूर्ण सूची भी उपलब्ध कराने को कहा। उपायुक्त ने वार्ता के दौरान कहा कि कंपनियां नौकरी में कार्यरत लोगों को प्रयाप्त और ससमय वेतन भुगतान करें। श्रम विभाग के वेतन प्रावधानों से इतर होकर वेतन में आवश्यक वृद्धि करे ताकि इस प्रभावित नागरिकों के जीवकोपार्जन में सहूलियत हो सके। महिलाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण देने की बात पर भी उपायुक्त ने बल देते हुए कहा कि लोकल महिलाओं के एंपॉवरमेंट पर विशेष ध्यान दे, सीएसआर एक्टिविटी से इन महिलाओं को बेहतर ढंग से प्रशिक्षित करें एवं स्थानियों को वरीयता दें। उपायुक्त ने बेहतर इलाज के लिए स्वास्थ्य केंद्रों को सुदृढ़ करने के लिए एनटीपीसी केरेंडारी को आवश्यक सुविधाओं को भी बहाल करने को कहा इसपर कंपनी के अधिकारियों ने स्वास्थ्य केंद्रों सभी सुविधाओं को बहाल करने सहित एक डॉक्टर को उस स्वास्थ्य केन्द्र में संबद्ध करने पर अपनी पूर्ण सहमति जताई।

उपायुक्त ने उपरोक्त सभी पहलुओं पर एक सप्ताह के अंदर अद्यतन रिपोर्ट उपलब्ध करानें के निर्देश कंपनी के अधिकारियों को दिया ।उपायुक्त ने अंत में कहा समाज की प्रगति,आर्थिक समृद्धि और लोगों की भलाई के लिए कंपनियां कार्य करे। यह भी आवश्यक है कि जिनकी जमीन पर खनन कार्य हो रहा है, उन स्थानीय निवासियों और प्रभावित लोगों की समस्याओं और चिंताओं को नजरअंदाज न किया जाए. उनके समस्याओं का समाधान करते हुए विकास की ओर कदम बढ़ाया जाए. इसके साथ ही उन्हें उचित मुआवजा, रोजगार के अवसर और संभावित भूमि पुनर्वास जैसे विकल्प प्रदान किए जाएं। बैठक में उपायुक्त के अलावा, अपर समाहर्ता संतोष कुमार सिंह, एसडीएम सदर वैद्यनाथ कामती, केरेडारी अंचलाधिकारी राम रतन बरनवाल, एनटीपीसी केरेडारी के अधिकारी व बेंगवारी पंचायत के रैयत उपस्थित थे।

बालिका उच्च विद्यालय बड़कागांव में वित्त रहित संयुक्त शिक्षक संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर एकदिवसीय शैक्षणिक हड़ताल किया गया।

समाज जागरण कुलदीप कुमार संवाददाता बड़कागांव

बड़कागांव : बालिका उच्च विद्यालय बड़कागांव में झारखंड के वित्त रहित संयुक्त शिक्षक संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर एक दिवसीय शैक्षणिक हड़ताल किया गया। हड़ताल के कारण विद्यार्थियों का पठन-पाठन का कार्य स्थगित रहा ।वहीं शिक्षक - शिक्षिकेतर एवं कर्मचारियों का मांग है कि हमें भी राज्य कर्मी का दर्जा दिया जाए। साथ ही जिस प्रकार संबद्ध डिग्री कॉलेजो को 75 प्रतिशत की अनुदान राशि वृद्धि कर दिया गया उसी प्रकार उच्च विद्यालय, इंटरमीडिएट कॉलेज ,मदरसा एवं संस्कृत

विद्यालय को भी 75 प्रतिशत अनुदान की राशि वृद्धि कर दिया जाए। वहीं विद्यालय के प्रधानाध्यापक राम लखन महतो ने कहा कि झारखंड के वित्त रहित शिक्षक संघर्ष मोर्चा के आह्वान पर कई वर्षों से इस प्रकार का धरना प्रदर्शन होता रहा है और जब तक हमलोगो की मांगे पूरी नहीं होती है तब तक हमलोग आंदोलन करते रहेंगे। मौके पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक राम लखन महतो ,वरिष्ट शिक्षिका विमला कुमारी, अशोक कुमार ,अख्तर हुसैन, शोभा कुमारी, कुलदीप कुमार ,शंकर महतो, शंकर राणा, जितेंद्र कुमार, मीना वर्मा, प्रमिला देवी एवं अर्जुन सिंह उपस्थित थे।

ज्ञानोदय विकास स्कूल बड़कागांव में राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम

समाज जागरण कुलदीप कुमार संवाददाता बड़कागांव

बड़कागांव : प्रखण्ड चिकित्सा प्रभारी के नेतृत्व में सामूहिक स्वास्थ्य केंद्र के द्वारा ज्ञानोदय विकास स्कूल में राष्ट्रीय डेंगू दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों के बीच डेंगू रोकथाम हेतु जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डेंगू बीमारी लक्षण,बचाव व अफवाह इत्यादि के बारे में बताया गया ।तथा बच्चों के अंदर प्रतियोगिता को बढ़ावा देने के लिए कक्षा आठवीं, नवमी और दसवीं के बीच में जागरूकता क्विज का भी आयोजन किया गया ।इसमें प्रथम स्थान पुष्पांजलि भवानी कक्षा नवमी , द्वितीय स्थान शशिकांत निराला कक्षा दसवीं के छात्र एवं

तृतीय कुमारी खुशी कक्षा दसवीं की छात्रा ने प्राप्त किया। विजेताओं को पुरस्कार के साथ प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया ।कार्यक्रम के मौके पर विद्यालय के सचिव सिकंदर कुमार सोनी ,प्राचार्य अरुण कुमार भारती, उप प्राचार्य लालदेव महतो , अनिता कुमारी ,अनामिका कुमारी ,ईश्वर दयाल महतो ,प्रेम कुमार ,आशीष कुमार ,कौशल कुमार, नागेंद्र मिश्रा, रंजीत शर्मा, राजेश गुप्ता, अविनाश मिश्रा, सतीश कुमार, वीणा कुमारी मीना कुमारी ,सबिया परवीन ,पूनम, प्रियंका, श्रुति, रूपा, अलीशा तिर्की, इन्दू एवं पूनम शामिल थे।

भीषण गर्मी को देखते सर्वधर्म मानवता मंच ने किया प्याऊ शिविर का आयोजन

मनोज कुमार ब्यूरो चीफ दैनिक समाज जागरण हजारीबाग।

हजारीबाग : सर्वधर्म मानवता मंच के तत्वावधान में सयुंक्त बिहार की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी सरस्वती देवी की याद में प्याऊ शिविर का आयोजन किया गया । प्याऊ शिविर का विधिवत उद्घाटन सयुंक्त रूप से मुख्य अतिथि आरटीओ विजय कुमार तथा डीटीओ बैजनाथ कामती साहब ने किया । एक माह तक चलने वाली प्याऊ शिविर का नेतृत्व सर्वधर्म मानवता मंच के जिला कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. भैया असीम कुमार ने की । इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित सर्वधर्म मानवता मंच के संस्थापक-सह-केन्द्रीय अध्यक्ष निसार खान ने कहा कि भुखों को खाना खिलाना और प्यासे को पानी पिलाना बड़ा ही पुण्य का कार्य है उन्होंने कहा कि भीषण गर्मी को देखते हुए प्याऊ शिविर में सत्तू का शर्बत चीनी का शर्बत गिला चना और खीरा का वितरण और विशेष कर बिन बोलता हुआ

जानवरों के लिए पानी की व्यवस्था समाजिक कार्यकर्ता डॉ. भैया असीम कुमार द्वारा की गई है वो काबील-ए-तारीफ है । उन्होंने कहा कि सर्वधर्म मानवता मंच की ओर से और आगे भी समाजिक कार्य किए जाएंगे । मौके पर प्रो. सुकल्याण मोईत्रा, सेवानिवृत्त शिक्षक जनाब ताजउद्दीन साहब तरंग ग्रुप के अध्यक्ष अमित गुप्ता प्रेस क्लब के अध्यक्ष कृष्णा गुप्ता गायक कलाकार आकाश सुबोध, तुलसी प्रसाद गुप्ता, भैया मुकेश, सोएब अहमद, रमेश प्रसाद गुप्ता, संतोष कुमार गुप्ता, रोहित कुमार के अतिरिक्त शहर के कई गणमान्य लोग उपस्थित थे ।

झारखंड विधानसभा की आवास समिति ने हजारीबाग जिले का दौरा किया

समिति ने सरकारी भवनों, आवासों और बुनियादी संरचनाओं की स्थिति की समीक्षा की।

मनोज कुमार ब्यूरो चीफ दैनिक समाज जागरण हजारीबाग।

झारखंड विधानसभा आवास समिति ने शुक्रवार को हजारीबाग जिले का दौरा किया। समिति के सभापति सह विधायक दशरथ गागराई और समिति के सदस्य सह सदर विधायक श्री प्रदीप प्रसाद ने शुक्रवार को परिसदन भवन में जिले के सरकारी भवनों, आवासों और बुनियादी संरचनाओं की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने विद्युत, शिक्षा, स्वास्थ्य, भवन निर्माण, ग्रामीण विकास, पथ निर्माण, जल संसाधन, कृषि एवं पशुपालन, कल्याण, नगर निगम, उत्पाद, परिवहन, वन, राजस्व एवं भूमि सुधार, खनन, पेयजल एवं स्वच्छता, गृह कार्य एवं आपदा प्रबंधन, एनएच सहित अन्य विभागों के कार्यों की समीक्षा की ।बैठक में उन्होंने पिछले तीन वर्षों के दौरान हुए मरम्मत कार्यों, नये भवन निमार्णों और उनसे संबंधित पत्राचार की जानकारी

संबंधित विभागों से ली। सभापति ने सरकारी छात्रावास, विद्यालयों एवं छात्रावासों की वर्तमान स्थिति, विगत वर्षों में हुए मरम्मत कार्य की जानकारी ली एवं अधूरे पड़े भवनों का निर्माण शीघ्र पूर्ण करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारियों को दिया। बैठक में बभनवे में बन रही पावर ग्रिड में आ रही समस्या को दूर करने के लिए संबंधित पदाधिकारियों को निर्देशित किया गया। बैठक में समिति के सभापति श्री दशरथ गागराई ने कहा कि झारखंड विधानसभा समिति को इस बैठक में कुछ विभाग से असंतोष प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन की जिम्मेवारी होगी कि आगे से जो भी विधानसभा की टीम आएगी, उस बैठक में सभी विभागों को पूरी तैयारी के साथ बैठक में भेजना सुनिश्चित करेगी। साथ ही अपने विभाग द्वारा क्रियान्वित सभी योजनाओं का पूर्ण जानकारी समिति को उपलब्ध करवाएगी। इस अवसर पर उक्त समिति के सभापति दशरथ गागराई के अलावे समिति के सदस्य विधायक श्री प्रदीप प्रसाद, अपर समाहर्ता श्री संतोष सिंह, डीआरडीए निदेशक मां देवप्रिया, डीपीओ श्री पंकज तिवारी, भू अर्जन पदाधिकारी निर्भय कुमार, सिविल सर्जन श्री सरयू प्रसाद, सदर अनुमंडल पदाधिकारी श्री बैद्यनाथ कामती, बरही अनुमंडल पदाधिकारी श्री जोहन टुड्डू, भवन निर्माण के कार्यपालक अभियंता सहित सभी विभाग के पदाधिकारी व कर्मी उपस्थित रहे।

झारखंड में मौसम का मिजाज भी पल-पल बदल रहा है।

समाज जागरण

कहीं बारिश की संभावना जताई गई है तो कहीं गर्मी और उमस की। मौसम विभाग के अनुसार, राज्य के विभिन्न हिस्सों में बारिश होने की संभावना जताई गई है, जिससे तापमान में गिरावट आ सकती है। 18 मई को पूरे राज्य में मेघ गर्जन, तेज हवा और बारिश के साथ वज्रपात की संभावना है। इसको

लेकर येलो अलर्ट भी जारी किया गया है। राज्य के मौसम में यह बदलाव 21 मई तक रहने की संभावना है।

उत्क्रमित उच्च विद्यालय जुगरा में चार दिवसीय ग्रीष्म अवकाश शिविर का समापन

समाज जागरण कुलदीप कुमार संवाददाता बड़कागांव

बड़कागांव : उत्क्रमित उच्च विद्यालय जुगरा में 4 दिनों तक बच्चों को विभिन्न प्रकार के खेल, रचनात्मक कार्य ,टीमवर्क समस्या समाधान व खेलकूद कार्यक्रम करवाए गए । इस दौरान बच्चों के बीच पाठ्य पुस्तक बैग डिक्शनरी का भी वितरण किया गया। मंच का संचालन सुजीत कुमार दांगी ने किया। वहीं बच्चों के बीच पुरस्कार वितरण किया गया। मौके पर

सांसद प्रतिनिधि कृष्णा राम, चेपाकल मुखिया अनिकेत नायक ,प्रभारी प्रधानाध्यापक अरविंद कुमार ,खेल प्रभारी अनीता तिर्की ,इको क्लब प्रभारी संजय कुमार पंडित, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी शिक्षिका सीमा कुमारी और जूली कुमारी , विनोद कुमार, सहायक शिक्षक कृष्ण कुमार सिंह, देवकांत शर्मा ,विकास कुमार ,विनोद कुमार दास, गिरधर कुमार और लिपिक सौरव कुमार द्वारका भारती एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

बड़कागांव में 19 की रात बनस मेला एवं 20 को झूलन होगा

समाज जागरण कुलदीप कुमार संवाददाता बड़कागांव

बड़कागांव राम जानकी मंदिर में बनस पूजा को लेकर तैयारी जोरों पर की जा रही है। राम जानकी मंदिर के पुजारी चिंतामणि महतो ने बताया कि लगभग 24 शिव भक्त पूजा में शामिल है। कल 18 मई को धुरिया लोटन

कार्यक्रम किया जाएगा। नदी में स्नान के पश्चात लोग राम जानकी मंदिर पहुंचेंगे। 19 मई की रात्रि को मेला होगा एवं 20 मई की सुबह 40 फीट ऊंचे लट्ठे से शिव भक्त झूलन एवं परिक्रमा करेंगे। मेला में आसपास गांव से हजारों लोग शिरकत करेंगे। पूजा को लेकर तैयारी की जा रही है। जिसमें मुख्य रूप से अध्यक्ष पिंटू गुप्ता, सचिव पवन कुमार, कोषाध्यक्ष अनिल प्रसाद दांगी, हरिनाथ राम, उपाध्यक्ष छोटी साव, प्रकाश कुमार, संरक्षक दामोदर प्रसाद मेहता, पुजारी चिंतामणि महतो ,प्रो लालदेव महतो, भोला प्रसाद दांगी, दिनेश कुमार, पिंटू सोनी, भरत प्रजापति, दर्शन प्रसाद कुशवाहा, हरी महतो, चमन महतो, अंतू महतो, प्रतिम महतो, चंद्रू महतो, जयहिंद महतो, पूजा प्रभारी कृतन महतो, कार्तिक भुइंया, चेतल महतो, कैलाश महतो, अरविंद कुमार, पदुम महतो, डोमन महतो, चंदा प्रभारी रविन्द्र लाल, सरजू भुइंया, सहादेव साव, राजेंद्र महतो, तुलेश्वर महतो, संगठन मंत्री मदन महतो, ललन कुमार, मंच संचालक रामचरित्र महतो, इंगलेश सोनी, बंधन महतो के अलावा दर्जनों लोग अपना योगदान दे रहे हैं।

फूड सेफ्टी ऑफिसर द्वारा खाद्य प्रतिष्ठानों में चलाया गया जांच अभियान।

मनोज कुमार ब्यूरो चीफ दैनिक समाज जागरण हजारीबाग।

उपायुक्त नैंसी सहाय एवं एसीएमओ डॉ शशि जायसवाल के निदेर्शानुसार खाद्य प्रतिष्ठानों में नियमित जांच अभियान चलाया गया। इसी क्रम में आज शुक्रवार 16 मई को खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी प्रकाश चंद्र गुग्गी के द्वारा मेसर्स डॉल्फिनो रिसॉर्ट, ओकनी, मेसर्स लॉक अप रेस्टोरेंट, मटवारी, मेसर्स चंपारण

मीट हाउस, राची पटना रोड और मेसर्स चिली वेनिल्ला, रांची-पटना रोड का निरीक्षण करते हुए पनीर और चाउमीन का सैंपल कलेक्शन किया गया। मेसर्स चंपारण मीट हाउस का लाइसेंस/पंजीकरण नहीं होने पर नोटिस दिया गया। जांच के क्रम में उन्हें पैकेजिंग सामग्री का खाद्य ग्रेड प्रमाण पत्र, कीट नियंत्रण का सही से प्रबंधन करना, परिसर की सफाई के साथ-साथ व्यक्तिगत सफाई और स्वच्छता बनाए रखने का निर्देश दिया गया। खिड़कियों और दरवाजों को कीट रोधी स्क्रीन से कवर करने का निर्देश दिया गया, साथ ही फूड हैंडलर्स का मेडिकल फिटनेस सर्टिफिकेट बनवाने और रिकॉर्ड मेंटेन करने का निर्देश दिया गया ।खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी द्वारा लगातार अभियान चला कर किसी भी प्रकार के मिलावट या खाद्य सुरक्षा से संबंधित अपराध को रोकने के लिए कार्रवाई की जा रही है।

इस्पात मंत्रालय की नई वेबसाइट का शुभारम्भ

इस्पात मंत्रालय ने अपने कार्यों में पारदर्शिता, पहुंच और दक्षता बढ़ाने के लिए नई वेबसाइट शुरू की केंद्रीय इस्पात एवं भारी उद्योग मंत्री श्री एचडी कुमारस्वामी ने आज 16 मई, 2025 को नई दिल्ली स्थित उद्योग भवन में इस्पात मंत्रालय की नई वेबसाइट का शुभारम्भ किया। नई वेबसाइट को इसके संचालन में पारदर्शिता, पहुंच और दक्षता बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है। नई वेबसाइट में एक आधुनिक और उपयोगकताओं के अनुकूल इंटरफेस है, जिससे वेबसाइट का इस्तेमाल करना और वहां से प्रासंगिक जानकारी प्राप्त करना सहज हो जाता है। इस नई वेबसाइट की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं: उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफेस: वेबसाइट एक स्पष्ट और सहज अनुभव प्रदान करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि हितधारक नीति दस्तावेजों, उद्योग डेटा और विभिन्न पहलों की जानकारी तक शीघ्रता से पहुंच सकते हैं। उन्नत साइबर सुरक्षा: वेबसाइट में संवेदनशील डेटा की सुरक्षा और मंत्रालय की ऑनलाइन उपस्थिति की अखंडता सुनिश्चित करने के लिए नवीनतम साइबर सुरक्षा उपायों को शामिल किया गया है। जीआईजीडब्ल्यू अनुपालन: वेबसाइट भारतीय सरकार की वेबसाइटों के लिए नवीनतम दिशानिर्देशों (जीआईजीडब्ल्यू) के अनुरूप भी है, जिससे विकलांगों सहित सभी नागरिकों के लिए पहुंच सुनिश्चित होती है। वेबसाइट विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है, जिससे आम जनता तक बेहतर पहुंच बनती है। यह नई वेबसाइट प्रशासन को बेहतर बनाने और भारतीय इस्पात क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की सरकार की प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण कदम है। वेबसाइट भारतीय इस्पात उद्योग पर व्यापक जानकारी प्रदान करती है, जिसमें उत्पादन आंकड़े, नीतिगत अपडेट और विभिन्न योजनाओं और पहलों के विवरण शामिल हैं।

"वेतन-पेंशन नहीं तो वोट नहीं: फैक्टनेब की सरकार को चेतावनी"

राज्यभर के 25 हजार शिक्षकों और कर्मचारियों को वेतन-पेंशन भुगतान में हो रही देरी, अगस्त-सितंबर में पटना में होगी निर्णायक सभा

समाज जागरण पटना ।

बिहार राज्य संबद्ध डिग्री महाविद्यालय शिक्षक शिक्षकेतर कर्मचारी महासंघ (फैक्टनेब) ने बिहार सरकार को स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि राज्य के लगभग 220 अनुदानित संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों में कार्यरत 25 हजार शिक्षकों एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों को शीघ्र वेतन और पेंशन का भुगतान नहीं किया गया, तो वे आगामी विधानसभा चुनाव में सरकार के घटक दलों को वोट न देने का निर्णय लेने को मजबूर होंगे। फैक्टनेब के अध्यक्ष डॉ. शंभुनाथ प्रसाद सिन्हा एवं मीडिया प्रभारी प्रो. अरुण गौतम ने एक संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि सरकार 'सबका साथ, सबका विकास' का नारा देती है, लेकिन संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों और कर्मचारियों को इससे वंचित रखा गया है। उन्होंने बताया कि बिहार विधानमंडल के कई सदस्यों ने भी इस मुद्दे को सदन में उठाया और मासिक वेतन भुगतान की मांग की। डॉ. सिन्हा ने यह भी बताया कि 30 अप्रैल 2025 को पटना उच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण निर्णय (एल पी ए नंबर 683/2023 एवं सी डब्ल्यू जे सी नंबर 808/2019) में सरकार को निर्देश दिया कि अनुदानित कॉलेजों में कार्यरत शिक्षकों और कर्मचारियों को नियमित वेतन और पेंशन दिया जाए।

फैक्टनेब के अनुसार, राज्यभर में इस मुद्दे को लेकर जागरूकता सभाएं आयोजित की जा रही हैं और अगस्त-सितंबर 2025 में पटना में एक बड़ी सभा कर 'वेतन-पेंशन नहीं तो वोट नहीं' कार्यक्रम की आधिकारिक घोषणा की जाएगी।

यह आंदोलन न केवल वेतन की मांग है, बल्कि यह शिक्षकों के सम्मान और अधिकारों की रक्षा का संकल्प भी है।

"वेतन भुगतान में देरी से नाराज शिक्षक-कर्मचारी, विश्वविद्यालय की लापरवाही पर भड़के"

सरकार ने 37.71 करोड़ की राशि जारी की, पर विश्वविद्यालय प्रशासन अब तक कॉलेजों तक नहीं पहुँचा सका अनुदान; भूख हड़ताल की चेतावनी

समाज जागरण मधेपुरा ।

राज्य सरकार द्वारा वित्त रहित डिग्री कॉलेजों के शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मचारियों के लिए जारी 37 करोड़ 71 लाख 91 हजार 500 रुपये की अनुदान राशि विश्वविद्यालय प्रशासन की लापरवाही की भेंट चढ़ती नजर

आ रही है। वर्ष 2014-17 के लिए यह राशि मार्च 2025 में ही आवंटित कर दी गई थी, लेकिन भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा एवं पूर्णिया विश्वविद्यालय अंतर्गत संबंधित कॉलेजों को अब तक इसका भुगतान नहीं किया गया है। वेतन की बाट जोह रहे शिक्षक और कर्मचारी अब आंदोलन के मूड में हैं। 'अनुदानित डिग्री कॉलेज शिक्षक-शिक्षकेतर कर्मचारी संघर्ष मोर्चा' के विश्वविद्यालय अध्यक्ष प्रो. मनोज भटनागर ने आरोप लगाया है कि विश्वविद्यालय प्रशासन जानबूझकर राशि को अपने बैंक खाते में रखे हुए है, जिससे हर माह ब्याज के रूप में मोटी रकम प्राप्त हो रही है। "सूद कमाने में व्यस्त, शिक्षकों की पीड़ा से बेखबर" प्रो. भटनागर ने कहा, जब सरकार ने राशि जारी कर दी है, तो फिर विश्वविद्यालय की देरी समझ से परे है। ऐसा प्रतीत होता है कि विश्वविद्यालय ब्याज लाभ के चक्कर में अनुदान को रोके हुए है। शिक्षकों की आजीविका संकट में है, पर प्रशासन अपनी बैंक खाता की शोभा बढ़ा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि वे इस मुद्दे पर शुक्रवार को कुलपति से मिलने विश्वविद्यालय गए थे, लेकिन कुलपति की अनुपस्थिति के कारण संवाद नहीं हो सका। भूख हड़ताल की चेतावनी, प्राचार्यों से सहयोग की अपील प्रो. भटनागर ने सभी संबंधित कॉलेजों के प्राचार्यों से भी आग्रह किया है कि वे विश्वविद्यालय द्वारा मांगे गए सभी दस्तावेज समय पर जमा करें, ताकि प्रशासन कोई बहाना न बना सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि अगर जल्द भुगतान की प्रक्रिया शुरू नहीं हुई, तो भूख हड़ताल और जिला स्तर पर विरोध प्रदर्शन जैसे कठोर कदम उठाए जाएंगे। शिक्षकों की पीड़ा, सरकार की जिम्मेदारी सरकार ने अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए राशि जारी कर दी है, अब विश्वविद्यालय प्रशासन पर सवाल उठ रहे हैं। शिक्षकों और कर्मचारियों की उम्मीदें अब न्यायपूर्ण और त्वरित कार्रवाई पर टिकी हुई है।

"पाँच माह से वेतन विहीन नियोजित शिक्षक पहुँचे भुखमरी की कगार पर: प्रदीप पप्पू"

जीओबी मद से वेतन नहीं मिलने पर बिहार के प्रारंभिक शिक्षक करेंगे चरणबद्ध आंदोलन, सरकार और शिक्षा विभाग पर लगाया गंभीर लापरवाही का आरोप

समाज जागरण पटना ।

बिहार राज्य प्रारंभिक शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष एवं बिहार शिक्षक एकता मंच के संयोजक प्रदीप कुमार पप्पू ने राज्य सरकार और शिक्षा विभाग पर तीखा हमला बोलते हुए कहा है कि राज्य के हजारों नियोजित शिक्षक बीते पाँच महीनों से वेतन के अभाव में भुखमरी का सामना कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि दिसंबर 2024 से अब तक वेतन नहीं मिलने से शिक्षकों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो चुकी है और अब वे आंदोलन के लिए विवश हो रहे हैं। श्री पप्पू ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा जीओबी मद से वेतन पाने वाले प्रारंभिक शिक्षकों के लिए दिसंबर 2024 से जिलों को राशि का आवंटन ही नहीं किया गया, जिसके चलते शिक्षक बिना वेतन के ही विद्यालयों में पठन-पाठन का कार्य कर रहे हैं। "काम का बोझ लगातार, वेतन शून्य" श्री पप्पू ने कहा, राज्य सरकार सिर्फ आदेश देना जानती है, वेतन देना नहीं। शिक्षकों से लगातार

कार्य लिया जा रहा है, लेकिन उनकी बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं की जा रही हैं। यह केवल प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि शिक्षकों के साथ एक प्रकार की मानसिक और आर्थिक प्रताड़ना है। उन्होंने यह भी उजागर किया कि शिक्षा विभाग का वह आदेश, जिसमें कहा गया है कि शिक्षक वेतन भुगतान के बाद ही डीआईओ एवं डीपीओ का वेतन होगा, एक दिखावा मात्र बनकर रह गया है, क्योंकि जिलों को आवंटन ही नहीं दिया जा रहा।

"गुणवत्ता की बात, पर हालात विपरीत" पप्पू ने कहा कि सरकार एक ओर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात करती है, वहीं शिक्षक वेतन के बिना काम कर रहे हैं। भूखे पेट क्या खाक पढ़ाएंगे शिक्षक? ये हालात बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ हैं, उन्होंने जोड़ा। "आंदोलन की राह पर शिक्षक" उन्होंने मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री, अपर मुख्य सचिव और शिक्षा निदेशक को ज्ञापन सौंपकर जीओबी मद से लंबित राशि का तत्काल आवंटन करने की मांग की है ताकि पाँच माह से रुका हुआ वेतन तुरंत दिया जा सके। प्रदीप पप्पू ने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने जल्द सकारात्मक कार्रवाई नहीं की, तो शिक्षक ससमय वेतन, प्रोन्नति, अनुकंपा नियुक्ति समेत अन्य मांगों को लेकर चरणबद्ध आंदोलन शुरू करेंगे।

बिहार के नियोजित शिक्षकों की यह पीड़ा न केवल आर्थिक संकट का संकेत है, बल्कि यह शिक्षा व्यवस्था के प्रति शासन की संवेदनहीनता का प्रमाण भी बनती जा रही है। अब देखना यह है कि सरकार समय रहते संज्ञान लेती है या आंदोलन की आँच और तेज होती है।

स्वास्थ्य सेवाओं को मिला नया आधार: मंत्री मंगल पांडेय ने 11.56 करोड़ की परियोजनाओं का किया शिलान्यास

अररिया जिले में बनेंगे 27 प्री-फैब स्वास्थ्य उपकेंद्र और हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, सुदूर गांवों तक पहुंचेगी प्राथमिक चिकित्सा सेवा

समाज जागरण
अररिया/डा. रूद्र किंकर वर्मा।

बिहार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने शुक्रवार को जिलेवासियों को स्वास्थ्य सेवाओं की नई सौगात दी। फारबिसगंज प्रखंड अंतर्गत ठीलामोहन में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में उन्होंने जिले के छह प्रखंडों में 11.56 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले 27 प्री-फैब स्वास्थ्य उपकेंद्र एवं हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर का शिलान्यास किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी अनिल कुमार, सिविल सर्जन डॉ. केके कश्यप, फारबिसगंज विधायक विद्यासागर केशरी, नरपतगंज विधायक जयप्रकाश यादव, पूर्व विधानसभा प्रत्याशी पंडित अजय कुमार झा, भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य नारायण झा सहित अन्य जनप्रतिनिधि और अधिकारी मौजूद थे। हर व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच हमारी प्राथमिकता अपने संबोधन में मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य है कि हर 3,000 से 5,000 की आबादी वाले क्षेत्रों में स्वास्थ्य उपकेंद्र स्थापित किए जाएं। इससे राज्य के हर नागरिक को बेहतर और सुलभ स्वास्थ्य सेवा मिल सकेगी। उन्होंने बताया कि प्रत्येक प्री-फैब स्वास्थ्य उपकेंद्र का निर्माण 1350 वर्गफुट में होगा और 42.84 लाख रुपये की लागत से इसे बनाया जाएगा। इन केंद्रों में वेलनेस हॉल, डॉक्टर कक्ष, नर्स कक्ष, टीकाकरण कक्ष, डे-केयर वार्ड, प्रयोगशाला और जरूरी मेडिकल फर्नीचर की सुविधा उपलब्ध होगी। मंत्री ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा राज्य सरकार की प्राथमिक प्रतिबद्धता है। जिले के प्रखंडवार स्वास्थ्य उपकेंद्रों का ब्योरा: अररिया प्रखंड - 07 उपकेंद्र फारबिसगंज प्रखंड - 07 उपकेंद्र भरगामा प्रखंड - 04 उपकेंद्र नरपतगंज प्रखंड - 06 उपकेंद्र जोकीहाट प्रखंड - 01 उपकेंद्र सिकटी प्रखंड - 02 उपकेंद्र इन सभी केंद्रों के निर्माण पर कुल मिलाकर 11.56 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। सुदूरवर्ती गांवों को मिलेगी राहत सिविल सर्जन डॉ. केके कश्यप ने बताया कि इन स्वास्थ्य उपकेंद्रों के निर्माण से जिले के सुदूर इलाकों में भी प्राथमिक चिकित्सा और स्वास्थ्य सुविधा की सुलभ पहुंच सुनिश्चित हो सकेगी। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की मजबूती सरकार के विजन का हिस्सा है। स्वास्थ्य मंत्री द्वारा किया गया यह शिलान्यास न केवल बुनियादी चिकित्सा सुविधा के विस्तार की दिशा में एक अहम कदम है, बल्कि यह राज्य सरकार की ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता को भी दशार्ता है। अब उम्मीद की जा रही है कि इन परियोजनाओं का कार्य शीघ्र शुरू होगा और समयबद्ध तरीके से पूरा भी किया जाएगा।

मुकेश सहनी की हुंकार, संजीव मिश्रा का संकल्प: "अब नहीं झुकेंगे, अब सरकार बनाएंगे"

पूर्णिया में वीआईपी की जोनल बैठक में शक्ति प्रदर्शन, सहनी बोले - मल्लाह समाज का बेटा बनेगा उपमुख्यमंत्री संजीव मिश्रा ने कहा -2025 में इतिहास रचने को तैयार है वीआईपी

समाज जागरण पूर्णिया ।

पूर्णिया के आर्ट गैलरी सह प्रेक्षागृह में शनिवार को विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) ने अपनी राजनीतिक ताकत का जबरदस्त प्रदर्शन किया। 'सरकार बनाओ, अधिकार पाओ' अभियान के तहत आयोजित जोनल बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मुकेश सहनी और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संजीव मिश्रा ने आगामी विधानसभा चुनाव के लिए स्पष्ट जनघोषणा कर दी -"अब सत्ता में भागीदारी हमारा हक है, और हम इसे लेकर रहेंगे!" कार्यक्रम में पूर्णिया जोन के सभी जिलों से आए हजारों कार्यकताओं की मौजूदगी ने बता दिया कि वीआईपी अब सिर्फ संगठन नहीं, एक जनांदोलन बन चुकी है। मुकेश सहनी की हुंकार - सत्ता के बिना अधिकार अधूरा अपने जोशीले संबोधन में श्री सहनी ने कहा -"जब तक हम अपनी सरकार नहीं बनाएंगे, हमारे समाज का हक सिर्फ भाषणों और घोषणा-पत्रों में ही रहेगा।" उन्होंने ऐलान किया कि 2025 में वीआईपी महागठबंधन का हिस्सा बनकर पूरे दमखम के साथ मैदान में उतरेगी, और "इस बार मल्लाह समाज का बेटा बिहार का उपमुख्यमंत्री बनेगा।" संजीव मिश्रा का संकल्प - 2025 में नया इतिहास राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संजीव मिश्रा ने कार्यकताओं को उत्साहित करते हुए कहा - "वीआईपी एक विचारधारा है, जो वंचितों को सत्ता में हिस्सेदारी दिलाने निकली है। आज जो जोश आपमें दिख रहा है, वह इस बात का संकेत है कि इस बार इतिहास रचा जाएगा।" उन्होंने सहनी को "गरीबों का मसीहा और बदलाव की सबसे बड़ी आवाज" बताया। रणनीति, संगठन और मिशन 2025 बैठक में 2025 के चुनाव को लक्ष्य बनाकर प्रत्याशी चयन, संगठन विस्तार, सोशल मीडिया प्रचार और जनसंपर्क योजनाओं पर चर्चा हुई। सभी जिलों के प्रतिनिधियों ने क्षेत्रीय रिपोर्ट प्रस्तुत कर एकजुटता और फील्ड स्तर की तैयारी का प्रदर्शन किया। बदलाव की बयार बन रही है वीआईपी राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, वीआईपी अब केवल निषाद समाज की पार्टी नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और प्रतिनिधित्व के नए ध्रुव के रूप में उभर रही है। मुकेश सहनी और संजीव मिश्रा की जोड़ी इसे मजबूत नेतृत्व और राजनीतिक मजबूती का नया विकल्प बना रही है।

बैठक में प्रमुख चेहरे

बम भोला सहनी, विजय महलदार, लाल बाबू सहनी, श्यामानंद सिंह, प्रकाश सिंह निषाद, सुमित मंडल, विकास कुमार सहित सैकड़ों ज़िला एवं प्रखंड स्तरीय नेता और कार्यकर्ता मौजूद थे। पूर्णिया की जमीन से उठी यह हुंकार बता रही है - 2025 की लड़ाई में वीआईपी न सिर्फ मैदान में है, बल्कि सत्ता की लड़ाई में निर्णायक मोड़ बन सकती है।

मुकेश सहनी की दिशा और संजीव मिश्रा की रणनीति मिलकर एक नया राजनीतिक समीकरण गढ़ रहे हैं।

यू.आर. कॉलेज रोसड़ा में चतुर्थ बिहार समाज विज्ञान सम्मेलन का आयोजन आज से शुरू

17-18 मई को "विज्ञान, समाज और विकास" विषय पर होगा दो दिवसीय सम्मेलन, राज्यभर से शिक्षक, छात्र और शोधार्थी लेंगे भाग: डा. घनश्याम राय

समाज जागरण रोसड़ा ।

बिहार समाज विज्ञान अकादमी द्वारा आयोजित चतुर्थ बिहार समाज विज्ञान सम्मेलन इस वर्ष यू.आर. कॉलेज, रोसड़ा में आयोजित किया जा रहा है। दो

दिवसीय यह सम्मेलन 17 और 18 मई 2025 को आयोजित होगा, जिसमें मुख्य विषय "विज्ञान, समाज और विकास" रखा गया है। इस शैक्षणिक आयोजन का उद्घाटन सत्र 17 मई को दोपहर 12:15 बजे नवीनीकृत कॉन्फ्रेंस हॉल में संपन्न होगा। सम्मेलन का आयोजन यू.आर. कॉलेज, रोसड़ा एवं डीबीकेएन कॉलेज, नरहन के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। कार्यक्रम के संयोजक एवं अकादमी के महासचिव सह यू आर कॉलेज रोसड़ा के प्रधानाचार्य डॉ. घनश्याम राय ने जानकारी दी कि सम्मेलन की सारी तैयारियाँ पूर्ण कर ली गई हैं और शैक्षणिक वातावरण में एक सार्थक विमर्श की अपेक्षा है।

राज्यभर के प्रतिभागियों की होगी सहभागिता

इस सम्मेलन में विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र, शोधार्थी, एवं शिक्षकगण भाग लेंगे और समाज विज्ञान से जुड़े विविध पहलुओं पर शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे। आयोजन का उद्देश्य समाज और विज्ञान के बीच गहरे संबंधों की पहचान करना तथा विकास की दिशा में नई दृष्टि प्रदान करना है। डॉ. राय ने बताया कि यह सम्मेलन प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक, संवादात्मक और प्रेरणादायक मंच प्रदान करेगा। साथ ही, यह समाज विज्ञान को जनहित और नीति निर्माण से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

बुद्धिजीवियों का महाकुंभ: रोसड़ा में समाज विज्ञान सम्मेलन से गूंजेगा विमर्श का स्वर

यू आर कॉलेज 17-18 मई को करेगा राष्ट्रीय संवाद की मेजबानी, 300 से अधिक प्रतिभागियों की होगी भागीदारी

समाज जागरण रोसड़ा ।

रोसड़ा, जिसे अब तक एक शांत कस्बाई पहचान मिली थी, अब दो दिनों के लिए राष्ट्रीय बौद्धिक विमर्श का मंच बनने जा रहा है। बिहार समाज विज्ञान अकादमी द्वारा आयोजित चतुर्थ समाज विज्ञान सम्मेलन 17 और 18 मई को उदयनाचार्य रोसड़ा महाविद्यालय में आयोजित हो रहा है। आयोजन की अंतिम तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं, और यू आर कॉलेज का परिसर विद्वानों, शोधार्थियों और समाज वैज्ञानिकों की आवाजाही से सरगर्म हो उठा है। ज्ञान और विचारों की होगी संगम यात्रा इस बहुप्रतीक्षित सम्मेलन का उद्घाटन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के कुलपति प्रो. संजय कुमार चौधरी करेंगे। उद्घाटन सत्र में प्रो. संतोष के. कार, प्रो. सुबोध नारायण 'मालाकार' (जेएनयू), प्रो. सुधीर चंद्र जेना (उत्कल विश्वविद्यालय), डॉ. अनिल दत्त मिश्रा (गांधीय चिन्तक), डॉ. डी. एम. दिवाकर (प्रख्यात अर्थशास्त्री), और प्रो. डॉ. लाल बाबू यादव जैसे दिग्गज वक्ता अपने विचार रखेंगे। संवाद, शोध और संवेदना का संगम आयोजन के संयोजक डॉ. घनश्याम राय ने बताया कि सम्मेलन की सभी व्यवस्थाएं अंतिम रूप ले चुकी हैं। उन्होंने कहा, "यह आयोजन सिर्फ एक सम्मेलन नहीं, बल्कि समाज विज्ञान की नई जमीन तैयार करने का एक प्रयास है।" उनका मानना है कि इससे क्षेत्रीय स्तर पर शोध कार्यों को नयी ऊर्जा मिलेगी। सम्मेलन के दौरान विभिन्न तकनीकी सत्रों में देशभर से आए शोधार्थी और प्राध्यापक अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे। अब तक 300 से अधिक प्रतिभागियों की पुष्टि हो चुकी है, जिनमें से 50 से अधिक पहले ही रोसड़ा पहुंच चुके हैं। प्रतिभागियों के ठहरने की समुचित व्यवस्था महाविद्यालय के छात्रावासों में की गई है। रोसड़ा: बौद्धिक आंदोलन का नया पड़ाव इस सम्मेलन से यह स्पष्ट है कि छोटे शहर भी अब बड़े विचारों के वाहक बन रहे हैं। रोसड़ा, जो अब तक शैक्षणिक गतिविधियों के सीमित दायरे में जाना जाता था, अब राष्ट्रीय विमर्श की धड़कन महसूस करेगा। आगामी दो दिन समाज विज्ञान के छात्रों, अध्यापकों और चिंतकों के लिए शोध, संवाद और संवेदना की त्रिवेणी के रूप में याद रखे जाएंगे।

क्यूसीओ ने उद्योग जगत का समर्थन प्राप्त किया है क्योंकि उसने भारतीय निमार्ताओं को वैश्विक बाजारों तक पहुंचने में मदद की है: श्री पीयूष गोयल

डीपीआईआईटी ने घरेलू और वाणिज्यिक विद्युत उपकरणों की सुरक्षा पर क्षैतिज क्यूसीओ पर हितधारक परामर्श बैठक आयोजित की अब तक शुरू किए गए प्रत्येक क्यूसीओ ने अंततः क्षेत्रों का समर्थन प्राप्त किया है क्योंकि उन्होंने न केवल उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार किया है बल्कि भारतीय निमार्ताओं को बड़े बाजारों तक पहुंचने में भी मदद की है।

सरकार एक ऐसी प्रणाली बनाने के लिए प्रतिबद्ध है जो उपभोक्ता सुरक्षा और उद्योग प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करती है। यह बात श्री पीयूष गोयल ने कल नई दिल्ली में डीपीआईआईटी द्वारा आयोजित स्टेकहोल्डर मीट में विद्युत उपकरणों के लिए क्यूसीओ के कार्यान्वयन के महत्व पर जोर देते हुए कही। बैठक में 20 सितंबर, 2024 को डीपीआईआईटी द्वारा अधिसूचित घरेलू, वाणिज्यिक और इसी तरह के विद्युत उपकरणों की सुरक्षा पर क्षैतिज क्यूसीओ के कार्यान्वयन में उद्योग के सामने आने वाले मुद्दों पर चर्चा की गई। उद्योग ने अपनी चिंताओं को प्रस्तुत किया और आईएस 302 (भाग 1): 2008 के अनुसार विभिन्न विद्युत उपकरणों पर क्षैतिज क्यूसीओ के कार्यान्वयन में उनके सामने आने वाले मुद्दों को उजागर किया, जैसा कि आईएस 302 (भाग 1): 2024 / / आईईसी 60335-1: 2020 द्वारा संशोधित किया गया है। उद्योग ने भारत में केवल उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के निर्माण और बिक्री को सुनिश्चित करने के क्यूसीओ के इरादे का भारी समर्थन किया। हालांकि, उन्होंने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की जटिलता पर विचार करते हुए पहले तैयार माल पर क्यूसीओ और उसके बाद घटकों और कच्चे माल पर क्यूसीओ अधिसूचित करने का अनुरोध किया। उन्होंने अनुपालन समयसीमा को रेखांकित करने के लिए घरेलू विनिर्माण क्षमताओं और उपलब्ध प्रौद्योगिकियों के मानचित्रण की भी सिफारिश की। इसके लिए चरणबद्ध रोलआउट का भी प्रस्ताव किया गया। उद्योग द्वारा उठाई गई प्रमुख चिंताओं में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित शामिल थे- घरेलू और विदेशी निमार्ताओं के लिए बीआईएस प्रमाणीकरण प्राप्त करने के लिए अपर्याप्त समय उपलब्ध होना; ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर गैर-बीआईएस चिह्नित उत्पादों की विरासत स्टॉक और अस्वीकृति के मुद्दे को संबोधित करना। माननीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने उद्योग द्वारा उठाई गई चिंताओं को स्वीकार किया तथा क्यूसीओ के कार्यान्वयन की समयसीमा बढ़ाने के अनुरोध पर विचार करने के साथ-साथ विरासत स्टॉक के मुद्दे पर भी सहमति व्यक्त की। उन्होंने उद्योग से अनुरोध किया कि वे सार्वजनिक वित्तपोषित प्रयोगशालाओं, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की प्रयोगशालाओं तथा राज्य सरकार के संस्थानों आदि में आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ अधिक परीक्षण सुविधाएं स्थापित करने के लिए प्रस्ताव लेकर आएं, ताकि पूरे भारत में उद्योग के लिए मजबूत और सुलभ परीक्षण बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराया जा सके। माननीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद ने कहा कि "मंत्रालय क्यूसीओ को लागू करने में परामर्शी और सहयोगात्मक दृष्टिकोण के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है। हम साथ मिलकर यह सुनिश्चित करें कि 'मेड इन इंडिया' वैश्विक स्तर पर सुरक्षा, गुणवत्ता और विश्वास का प्रतीक हो।" डीपीआईआईटी क्यूसीओ के लिए क्षेत्रीय तत्परता सुनिश्चित करने और सुचारू रोलआउट सुनिश्चित करने के लिए परीक्षण बुनियादी ढांचे में अंतराल की पहचान करने की दिशा में काम कर रहा है। डीपीआईआईटी परीक्षण और प्रमाणन इकोसिस्टम को सुव्यवस्थित करने के लिए बीआईएस के साथ मिलकर काम कर रहा है, जिससे इसे विशेष रूप से एमएसएमई के लिए अधिक सुलभ, कुशल और किफायती बनाया जा सके। ये पहल देश के भीतर असाधारण गुणवत्ता वाले विश्व स्तरीय उत्पादों को विकसित करने के लिए भारत सरकार की अटूट प्रतिबद्धता को दशार्ती हैं, जो एक आत्मनिर्भर भारत बनाने के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

आईआईएफटी ने दुबई में पहला विदेशी परिसर खोलकर वैश्विक उपस्थिति का विस्तार किया

भारतीय विदेश व्यापार संस्थान (आईआईएफटी), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त निकाय है। इसने दुबई, संयुक्त अरब अमीरात में अपना पहला विदेशी परिसर स्थापित करने की घोषणा की है। यह आईआईएफटी की वैश्विक उपस्थिति का विस्तार करने और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार शिक्षा में भारत की भागीदारी को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह ऐतिहासिक प्रगति शिक्षा मंत्रालय से मिली मंजूरी और विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनापत्ति प्रमाण पत्र मिलने के बाद संभव हुई है। यह भारतीय उच्च शिक्षा के वैश्वीकरण में एक गौरवपूर्ण क्षण है और यह एनईपी 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप है, जो भारतीय संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीयकरण और वैश्विक शिक्षण केंद्रों के निर्माण पर जोर देता है। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आईआईएफटी को बधाई दी। उन्होंने कहा, "यह वास्तव में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना को दशार्ता है, जो भारतीय शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण और वैश्विक स्तर पर विचार नेतृत्व को आकार देने में इसकी बढ़ती भूमिका में एक नया अध्याय जोड़ता है। यह भारत-यूएई साझेदारी को मजबूत करने का भी प्रमाण है। यह नया परिसर भविष्य के व्यावसायिक नेताओं को गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।"

ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा में स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय का भव्य स्वागत

महाविद्यालय के विकास को लेकर मंत्री ने दी शुभकामनाएं, स्वास्थ्य सेवाओं में प्रगति की सराहना

समाज जागरण मधेपुरा ।

ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा के मुख्य द्वार पर शुक्रवार को बिहार सरकार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार ने उनके आगमन पर प्रसन्नता जताते हुए उनके द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की। स्वागत के दौरान मंत्री श्री पांडेय ने महाविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य और शैक्षणिक विकास के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों के साथ समन्वय बनाते हुए स्वास्थ्य विभाग सामाजिक जागरूकता की दिशा में भी लगातार कार्य कर रहा है।

स्वास्थ्य विभाग की उपलब्धियों की सराहना

महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो. कैलाश प्रसाद यादव ने श्री पांडेय को धन्यवाद देते हुए कहा कि उनके कार्यकाल में स्वास्थ्य विभाग ने उल्लेखनीय प्रगति की है और जनहित में कई सराहनीय योजनाएं लागू की गई हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि मंत्री के नेतृत्व में विभाग का चहुंमुखी विकास आगे भी जारी रहेगा।

सेहत केंद्र बना जनजागरूकता का माध्यम

एनएसएस के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सुधांशु शेखर ने जानकारी दी कि

महाविद्यालय परिसर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा एक सेहत केंद्र संचालित किया जा रहा है। यह केंद्र नियमित रूप से स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम, परामर्श शिविर और चिकित्सा सेवाओं का आयोजन करता है, जिससे छात्रों एवं स्थानीय लोगों को लाभ मिल रहा है।

उपस्थित गणमान्य व्यक्ति

इस मौके पर पूर्व विकास पदाधिकारी प्रो. ललन प्रसाद अद्री, असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मनोज कुमार ठाकुर, डॉ. रंजन कुमार, शोधार्थी सौरभ कुमार चौहान, लेखापाल डॉ. अशोक कुमार अकेला सहित कई शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय में स्वास्थ्य मंत्री का यह दौरा स्वास्थ्य एवं शिक्षा के समन्वय की दिशा में एक सकारात्मक कदम माना जा रहा है। इससे न केवल महाविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण को बल मिलेगा, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति छात्रों की जागरूकता भी बढ़ेगी।

ब्रिटेन से एफटीए के लिए गोयल की यात्रा

भारत और ब्रिटेन ने करीब एक साल के बाद फरवरी में औपचारिक रूप से तीन स्तरीय बातचीत शुरू की हैं - FTA, BIT और दोहरा अंशदान सम्मेलन या सामाजिक सुरक्षा समझौता।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने दो दिवसीय ब्रिटेन यात्रा में अपने समकक्ष जोनाथन रेनॉल्ड्स से मुलाकात की। इससे दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक लंबित मुद्दों को सुलझा कर मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) आगे बढ़ाया जा सकेगा। इसके अलावा शुल्क घटाने, बाजार में पहुंच बढ़ाने और एफटीए के जरिये व्यापार मानदंडों को सरल बनाने, अमेरिका के देश-वार जवाबी शुल्क लगाए जाने की योजना पर भी ध्यान केंद्रित किया जाना है। अमेरिका ने देश-वार जवाबी शुल्क लगाने को 9 जुलाई तक के लिए टाल दिया है।

यह बैठक उस समय हो रही है जब अमेरिका के व्यापार संरक्षणवादी नीतियां अपनाए जाने से वैश्विक व्यापार नीतियों में व्यापक बदलाव आ रहा है। गोयल ने एक्स पर सोमवार को बताया, द्विपक्षीय व्यापार और निवेश को मजबूत करने पर चर्चा के मकसद से दो दिवसीय यात्रा पर ब्रिटेन आया। मेरे पहले कार्यक्रम में ब्रिटेन के व्यापार व कारोबार मंत्री जोनाथन रेनॉल्ड्स के साथ सार्थक बातचीत हुई। इससे भारत-ब्रिटेन के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की हमारी प्रतिबद्धता को बल मिला।

सरकारी अधिकारियों ने बताया कि भारत और ब्रिटेन के बीच व्यापार वाताएं निष्कर्ष के करीब पहुंच रही हैं। गोयल से पूर्व वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी इस माह की शुरूआत में लंदन गई थीं और द्विपक्षीय व्यापार समझौता (बीआईटी) वाताओं को बढ़ावा मिला था। हालांकि दोनों पक्ष निवेश समझौते के लंबित मुद्दों में मुख्य रूप से विवादों का समाधान करने में विफल रहे। इसके अलावा केंद्रीय बजट 2025-26 में भारत के वर्तमान मॉडल बीआईटी को नया रूप देने और और निरंतर विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने की दिशा में कुछ प्रगति हुई और इसे ह्यअधिक निवेशक अनुकूलह्ल बनाने के घोषणा की गई।

बीआईटी के अलावा एफटीए से जुड़े कुछ लंबित मुद्दे भी हैं। इन लंबित मुद्दों में भारत का सामाजिक सुरक्षा समझौते को शामिल करना और ब्रिटेन का वित्तीय सेवाओं में अधिक पहुंच देना शामिल हैं। भारत ने ब्रिटेन के 2027 तक कार्बन सीमा समायोजन तंत्र को पेश किए जाने पर चिंताएं जताई हैं। ब्रिटेन व्हीस्की और वाहनों पर कम शुल्क के लिए मोलभाव कर रहा है।

भारत और ब्रिटेन ने करीब एक साल के बाद फरवरी में औपचारिक रूप से तीन स्तरीय बातचीत शुरू की हैं झ मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए), द्विपक्षीय निवेश संधि (बीआईटी) और दोहरा अंशदान सम्मेलन या सामाजिक सुरक्षा समझौता। मुक्त व्यापार समझौते की घोषणा के बाद गोयल और उनके ब्रिटिश समकक्ष ने दूसरी बार बैठक की है। भारत-यूके एफटीए वाताओं की शुरूआत जनवरी 2022 में हुई और इस समझौते को नौ महीनों में पूरा करने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया गया था। हालांकि ब्रिटेन में राजनीतिक अस्थिरता, विभिन्न लंबित मुद्दे और अप्रैल से जुलाई के बीच दोनों देशों में आम चुनाव होने के कारण इस समझौते तक पहुंचना और लंबित हो गया।

कई बार टलने के बाद बाजारों में इस हफ्ते से कॉमन कॉन्ट्रैक्ट नोट होगा लागू

कई बार टलने के बाद, एफपीआई और संस्थागत निवेशकों को फायदा देने के लिए कॉमन कॉन्ट्रैक्ट नोट प्रणाली लागू

पिछले साल में कई बार टलने के बाद भारतीय बाजार इस हफ्ते कॉमन कॉन्ट्रैक्ट नोट की व्यवस्था लागू करने जा रहा है। इस कदम से विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों और अन्य संस्थागत प्रतिभागियों को फायदा मिलने की उम्मीद है और इसे ट्रेड सेटलमेंट को व्यवस्थित करने के तौर पर देखा जा रहा है। कॉन्ट्रैक्ट नोट में लेनदेन का औपचारिक रिकॉर्ड होता है। उसमें शेयरों की संख्या, कीमत, ब्रोकरेज शुल्क, कर और अन्य जरूरी सूचनाएं होती हैं। अभी ब्रोकर हर एक्सचेंज के लिए अलग-अलग अनुबंध जारी करते हैं, भले ही वह समान ऑर्डर हो। इससे अक्सर कीमतों में फर्क हो जाता है।

नई प्रणाली के तहत बीएसई और एनएसई दोनों में निष्पादित ऑर्डरों के लिए एकल भारित औसत मूल्य (डब्ल्यूएपी) की गणना की जाएगी जिसमें ब्रोकर एक इकट्ठा अनुबंध नोट जारी करेंगे। बाजार के प्रतिभागियों ने बताया कि एकल इलेक्ट्रॉनिक अनुबंध नोट न होने से पहले एफपीआई केवल एक एक्सचेंज पर ही ट्रेडिंग कर पाते थे, भले ही दूसरे पर बेहतर कीमत मिल रही हो।

बाजार के एक अंदरूनी सूत्र ने कहा, संस्थाएं अपने ऑर्डर के लिए सर्वोत्तम भाव और बेहतर निष्पादन सुनिश्चित करने में असमर्थ रहती थीं। कॉमन कॉन्ट्रैक्ट नोट के लिए मुख्य रूप से एफपीआई ने जोर दिया था। इस बदलाव से एक्सचेंजों के बीच आपसी संचालन क्षमता में और इजाफे की उम्मीद है।

हालांकि इस व्यवस्था की घोषणा पहली बार मई 2024 में की गई थी। लेकिन इसके अमल में कई बार देर हुई। पहले इसे अगस्त 2024, फिर जनवरी 2025 तक और बाद में मार्च 2025 किया गया। सूत्रों ने संकेत दिया है कि व्यापक मॉक ट्रेडिंग सत्रों और उद्योगव्यापी तैयारियों के बाद यह प्रणाली अब शुरू होने के लिए तैयार है। हालांकि कई लोगों ने इस बदलाव के लिए परेशानी वाले मसलों और परिचालन लागत और जटिलता के बारे में बताया है।

पिछले तीन हफ्तों में स्टॉक एक्सचेंजों, क्लियरिंग कॉरपोरेशनों और बाजार के प्रतिभागियों ने कई परीक्षण किए हैं। इनमें अकेले इस महीने उपयोगकर्ता स्वीकृति परीक्षण (यूएटी) के 10 दौर शामिल हैं। अब तक, एनएसई क्लियरिंग के तहत नौ कस्टोडियन और बीएसई के इंडियन क्लियरिंग कॉरपोरेशन (आईसीसीएल) के तहत दो कस्टोडियन ने अपनी तैयारी की पुष्टि की है। कस्टोडियन एफपीआई और संस्थागत ट्रेडों को उनकी प्रतिभूतियों और फंडों को होल्ड करके सहज बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं।

कुछ बाजार प्रतिभागियों ने संभावित समस्याओं को लेकर चेतावनी दी है, विशेष रूप से इस बात के कारण कि एक्सचेंज सीधे-सीधे प्रोसेसिंग (एसटीपी) के माध्यम से सौदों की वैल्यू की रिपोर्ट कैसे करते हैं। एसटीपी लेनदेन के प्रोसेसिंग के लिए स्वचालित प्रणाली है।

एक प्रतिभागी ने बताया, एनएसई दो दशमलव स्थानों में सौदे की वैल्यू की जानकारी देता है। लेकिन बीएसई एसटीपी फाइलों में चार दशमलव स्थानों का उपयोग करता है। इस अंतर के कारण हैंड डिलिवरी ट्रेड में इजाफा हो सकता है, जिसके लिए मैन्युअल ब्रोकर हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। सूचकांक पुनसंर्तुलन जैसे ज्यादा वॉल्यूम वाले दिनों को लेकर भी चिंताएं हैं जहां अंतर का ज्यादा असर हो सकता है। इसके अलावा कुछ कस्टोडियन ने संकेत दिया है कि नई प्रणाली को अपनाने के लिए बड़े मूलभूत बजलावों की जरूरत हो सकती है और इसमें खासी लागत आ सकती है। एक अन्य प्रतिभागी ने कहा, एफपीआई वर्तमान प्रक्रिया से अच्छी तरह वाकिफ हैं और इस बदलाव से मौजूदा स्थिति में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं होगा।

'ट्रंप शुल्क का नहीं होगा ज्यादा असर'

डीएफएस ने समिति को सूचित किया कि सरकार संसद के अगले सत्र में अनियमित ऋण गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाने संबंधी विधेयक ला सकती है।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के शीर्ष अधिकारियों ने मंगलवार को संसदीय समिति को डॉनल्ड ट्रंप प्रशासन द्वारा लगाए गए शुल्क के भारत पर पड़ने वाले आर्थिक असर के बारे में अपने विचार साझा किए और कहा कि भारत पर इसका असर बहुत अधिक नहीं होगा।

अधिकारियों ने समिति से कहा कि चीन और अमेरिका के बीच घटते कारोबारी संबंधों से भारत को दीर्घावधि के हिसाब से लाभ हो सकता है।

कांग्रेस के लोक सभा सांसद केसी वेणुगोपाल की अध्यक्षता में बनी लोक लेखा समिति (पीएसी) ने मंगलवार को दो बैठकें कीं। एक बैठक रिजर्व बैंक के शीर्ष अधिकारियों के साथ हुई जबकि एक बैठक वित्तीय सेवा विभाग (डीएफएस) और कुछ सरकारी बैंकों के प्रबंध निदेशकों के साथ हुई। दोनों बैठकों का मुख्य विषय बैंकिंग में सुधार था। रिजर्व बैंक के साथ हुई बैठक में रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा और डिप्टी गवर्नर राजेश्वर राव मौजूद थे। वहीं दूसरी बैठक में डीएफएस सचिव और भारतीय स्टेट बैंक, इंडियन बैंक, केनरा बैंक, आईडीबीआई, पंजाब नैशनल बैंक के प्रबंध निदेशक मौजूद थे। शुल्क को लेकर रिजर्व बैंक के गवर्नर और डिप्टी गवर्नर ने बताया कि केंद्रीय बैंक अभी भी असर का विश्लेषण कर रहा है, लेकिन उसका दृष्टिकोण सकारात्मक है कि इसका कोई भीषण असर नहीं पड़ेगा। डीएफएस ने समिति को सूचित किया कि सरकार संसद के अगले सत्र में अनियमित ऋण गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाने संबंधी विधेयक ला सकती है।

भारतीय उद्योग जगत की आय वृद्धि पर विश्लेषक सतर्क

स्टैंडर्ड चार्टर्ड और कोटक जैसे दिग्गज ब्रोकरेज ने भारत के शेयर बाजार को लेकर दिखाया सतर्क रुख, अमेरिकी टैरिफ और वैश्विक सुस्ती को बताया मुख्य कारण भले ही बाजार निचले स्तरों से बढ़ गए हों लेकिन विश्लेषकों ने आगामी तिमाहियों में भारतीय उद्योग जगत की आय वृद्धि के अनुमानों को लेकर सतर्कता बरतनी शुरू कर दी है।

स्टैंडर्ड चार्टर्ड के विश्लेषकों ने परिसंपत्ति वर्ग के तौर पर भारत समेत सभी प्रमुख क्षेत्रों के इक्विटी बाजारों की रेटिंग घटाकर तटस्थ कर दी है, क्योंकि अमेरिकी टैरिफ को लेकर नीतिगत अनिश्चितता और उतार-चढ़ाव बढ़ने की वजह से कमजोर रिस्क-रिवार्ड की स्थिति बन रही है। उनका मानना है कि निफ्टी 50 सूचकांक 12 महीने में 26,000 का आंकड़ा छुएगा जो मौजूदा स्तर से करीब 7 फीसदी की तेजी है।

स्टैंडर्ड चार्टर्ड में इक्विटी रणनीति के प्रमुख डेनियल लैम ने फूक हीन यैप, माइकल केम आदि के साथ रिपोर्ट में कहा है, ह्यहम भारत के शेयर बाजारों को लेकर तटस्थ बने हुए हैं क्योंकि उन पर टैरिफ का असर तुलनात्मक रूप से कम है, लेकिन नकारात्मक आय संशोधनों से प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। हम आसियान पर अंडरवेट बने हुए हैं क्योंकि चीन के निर्यात की दिशा बदलने से आसियान के कारोबारों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और आय की गति प्रभावित हो रही है।

उम्मीदें ज्यादा

कोटक इंस्टीट्यूशनल इक्विटीज के प्रबंध निदेशक और सह-प्रमुख संजीव प्रसाद जैसे अन्य लोगों का भी मानना है कि बाजार भारतीय कॉरपोरेट जगत के आय अनुमानों को लेकर कुछ ज्यादा ही आशावादी और आत्मसंतुष्ट दिखता है। प्रसाद ने शुभदीप रक्षित, अनिंद्य भौमिक और सुनीता बल्दवा के साथ मिलकर तैयार एक रिपोर्ट में लिखा है, वित्त वर्ष 2026 और वित्त वर्ष 2027 के लिए आय अनुमानों में कुछ क्षेत्रों और कंपनियों में गिरावट देखी गई है। हमारा मानना है कि वैश्विक और घरेलू वृद्धि पर दबाव के कारण राजस्व में गिरावट आएगी। फिलहाल, हम वित्त वर्ष 2026 के लिए निफ्टी-50 सूचकांक के शुद्ध लाभ में 12 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान लगा रहे हैं।

प्रसाद का मानना है कि इस स्तर पर बाजार वैश्विक जीडीपी वृद्धि व अमेरिकी टैरिफ पर अनिश्चितता के मद्देनजर ऑटोमोबाइल, आईटी सेवाओं, दवा और विशेष रसायनों जैसे निर्यात-केंद्रित क्षेत्रों के राजस्व को लेकर बहुत अधिक आशावादी हो सकते हैं।

केआईई का मानना है कि ऑटोमोबाइल के मामले में ऊंचे टैरिफ से टाटा मोटर्स जैसी कंपनियों के राजस्व पर प्रभाव पड़ेगा। नोट में कहा गया है कि बहुत कम भारतीय कंपनियों का अमेरिका में परिचालन है और अगर अमेरिका ऑटोमोबाइल व कलपुर्जों पर मौजूदा टैरिफ जारी रखता है तो अमेरिका में विनिर्माण इकाइयों वाली वाहन कंपनियों की तुलना में उन्हें भारी नुकसान होगा।

नॉन-टैरिफ बैरियर पर पर भारत-अमेरिका में बनी सहमति, साइड लेटर से होगा समाधान!

भारत और अमेरिका साइड लेटर पर हस्ताक्षर कर इस मुद्दे को कर सकते हैं हल

भारत और अमेरिका प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते से इतर कथित अनुबंध (साइड लेटर) पर हस्ताक्षर करके विवादास्पद गैर-शुल्क बाधाओं का समाधान कर सकते हैं। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने नाम उजागर नहीं करने की शर्त पर कहा, ह्यदोनों सरकारों के बीच आपसी समझ के तहत भारत और अमेरिका के बीच कई साइड लेटर पर हस्ताक्षर किए जा सकते हैं। ये मुख्य रूप से गैर-शुल्क बाधाओं से संबंधित होंगे।ह्ल

मुक्त व्यापार समझौते के संदर्भ में साइड लेटर अलग-अलग दस्तावेज होते हैं, जिन पर मुख्य समझौते के साथ-साथ बातचीत की जाती है ताकि विशिष्ट चिंताओं को दूर किया जा सके या दोनों पक्षों के बीच विशेष व्यवस्था की जा सके। ये कानूनी रूप से बाध्यकारी होते हैं लेकिन केवल उन्हीं देशों के बीच मान्य होता है जो उस पर हस्ताक्षर करते हैं।

उदाहरण के लिए आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते को पूरा करते समय ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने ऑस्ट्रेलिया में कार्यरत भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों की विदेशी आय पर कर लगाने से रोकने के लिए अपने घरेलू कानूनों में संशोधन करने पर सहमति व्यक्त की थी। इससे भारत सरकार द्वारा उठाई गई दोहरे कराधान निषेध संधि से संबंधित चिंता का समाधान हो गया। हालांकि यह आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते का हिस्सा नहीं था लेकिन दोनों देशों के व्यापार मंत्रियों द्वारा एक-दूसरे को पत्र लिखकर आपसी समझ को रेखांकित करते हुए इसे औपचारिक रूप दिया गया।

हाल के दिनों में अमेरिका ने भारत में अमेरिकी व्यवसायों के सामने आने वाली गैर-शुल्क बाधाओं पर गंभीर चिंता जताई है। हाल में भारत की यात्रा पर आए अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने भी गैर-शुल्क बाधाओं को हटाने और अमेरिकी कंपनियों को अधिक बाजार पहुंच प्रदान करने पर जोर दिया था।

इस महीने की शुरूआत में विदेशी व्यापार बाधाओं पर जारी राष्ट्रीय व्यापार अनुमान रिपोर्ट में अमेरिका के व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) ने भारत के डिजिटल पर्सनल डेटा संरक्षण अधिनियम (डीपीडीपीए) के मसौदा नियमों पर चिंता व्यक्त की थी।

यूएसटीआर को दिए गए प्रस्तुतिकरण में गूगल, एमेजॉन, मास्टरकार्ड जैसी कंपनियों की संस्था कोलिशन ऑफ सर्विसेज इंडस्ट्रीज (सीएसआई) ने स्थानीय सामग्री की आवश्यकता और यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) तथा रुपे कार्ड को अनुचित लाभ देने, डेटा स्थानीयकरण, दूरसंचार उपकरणों का अनिवार्य परीक्षण और प्रमाणन की आवश्यकता, विदेशी कंपनियों पर कर में भेदभाव, आईटी उत्पादों पर सीमा शुल्क आदि का जिक्र किया था। अमेरिकी कंपनियों ने भारत सरकार द्वारा दिए गए गुणवत्ता नियंत्रण संबंधी आदेशों पर भी चिंता जताई है।

इकनॉमिक लॉ प्रैक्टिस में सीनियर पार्टनर संजय नोतानी ने कहा कि दोनों देशों को गैर-शुल्क बाधाओं को समझने के लिए हर क्षेत्र से संबंधित अलग दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, ह्यवर्तमान में धातु, रसायन, औद्योगिक उत्पाद, पूंजीगत वस्तुओं और दूरसंचार सहित कई क्षेत्रों में इस तरह की गैर-शुल्क बाधाएं मौजूद हैं। हमें सबसे पहले इन बाधाओं की प्रकृति का आकलन करने की आवश्यकता है क्योंकि सभी के लिए एक समाधान नहीं हो सकता है।

स्मॉलकैप म्युचुअल फंडों में टॉप 10 निवेशकों की हिस्सेदारी में गिरावट

बाजार की उतार-चढ़ाव के बीच स्मॉलकैप फंडों में संकेद्रण में कमी आई

म्युचुअल फंडों की स्मॉलकैप योजनाओं में 10 अग्रणी निवेशकों के निवेश की हिस्सेदारी में गिरावट आ रही है और मार्च 2025 में यह घटकर 14 महीने के निचले स्तर पर पहुंच गई। उद्योग निकाय एसोसिएशन ऑफ म्युचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के आंकड़ों के विश्लेषण से यह जानकारी मिली। माध्य स्मॉलकैप योजनाओं में 2.03 फीसदी निवेश 10 अग्रणी निवेशकों से आता है। एक साल पहले यह 2.43 फीसदी था। यह कमी तब आई है जब हाल में स्मॉलकैप में लार्जकैप के मुकाबले दोगुनी गिरावट आई है।

बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स में 17.1 फीसदी की गिरावट आई है जबकि सेंसेक्स अपने सर्वकालिक उच्च स्तर से 8.6 फीसदी कम हुआ है। निवेशकों की निवेश में कमी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मंदी के दौरान स्मॉलकैप कंपनियों में लिक्विडिटी में कमी हो जाती है। इससे किसी योजना की उन शेयर से बाहर निकलने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

कम संकेद्रण से रिडम्प्शन यानी निवेश निकासी के भुगतान के लिए कम कीमत पर पोजीशन बेचने का जोखिम कम हो जाता है। इससे फंड में बच रहे लोगों की गिरावट के दौरान स्थिति और खराब होने की संभावना होती है। मीडियन यानी माध्य उन 30 स्मॉलकैप फंडों का मध्य मूल्य है, जिनके डेटा उपलब्ध हैं।

कुछ फंडों में काफी अधिक संकेंद्रण है। इसमें आईटीआई स्मॉलकैप फंड (शीर्ष 10 निवेशकों से 19.92 फीसदी) और ट्रस्ट एमएफ स्मॉलकैप फंड (शीर्ष 10 का 22.83 फीसदी) शामिल हैं। ट्रस्ट म्युचुअल फंड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) संदीप बागला ने बताया कि स्ट्रेस टेस्ट से पता चलता है कि ट्रस्ट स्मॉलकैप फंड योजना एक ही दिन में 50 फीसदी की बिकवाली कर सकती है (जबकि अन्य योजनाओं के लिए यह औसत सात दिन है)।

ट्रस्ट फंड नवंबर 2024 में लॉन्च किया गया था। यह दूसरे फंडों की तुलना में आकार में छोटा है। बागला ने कहा कि इन दोनों कारणों से बड़े निवेशकों से उसे अपेक्षाकृत ज्यादा महत्त्व मिला हो सकता है। शुरूआती निवेशकों में से कुछ अक्सर 5 करोड़ या उससे अधिक के चेक देने वाले निवेशक या इकाइयां होती हैं, जो वेल्थ मैनेजरों और अन्य बड़े वितरकों के जरिए आती हैं।

बड़ा शुरूआती निवेश छोटे फंड के लिए ज्यादा संकेंद्रण में बदलता जाएगा। बागला के अनुसार जैसे-जैसे अधिक निवेशक आते हैं, संकेंद्रण घटता जाता है। असल में, डिस्क्लोजर से पता चलता है कि नवंबर 2024 में शीर्ष 10 निवेशकों का संकेन्द्रण 29.37 फीसदी था जो तब से घटकर 22.83 फीसदी रह गया है, जबकि परिसंपत्तियां मार्च के अंत तक 405.1 करोड़ से बढ़कर 817.1 करोड़ रुपये हो गई हैं।

बागला ने कहा, हमें लिक्विडिटी को लेकर कोई चिंता नहीं है। इस बारे में जानकारी के लिए आईटीआई को भेजे गए ईमेल का जवाब नहीं मिला। इसी तरह आईटीआई स्मॉलकैप फंड भी स्ट्रेस की स्थिति में भी दो दिन में अपने पोर्टफोलियो का 50 फीसदी हिस्सा बेच सकता है जबकि औसत सात दिन है। स्मॉलकैप सेगमेंट के लिए 50 फीसदी लिक्विडेशन के लिए औसत दिन फरवरी में देखे गए 6.5 दिनों की तरह ही थे।

ट्रांसेंड कैपिटल के निदेशक कार्तिक जवेरी ने कहा कि सलाहकार और वितरक आम तौर पर तब तक नए फंड से बचते हैं जब तक कि उनका ट्रैक रिकॉर्ड न बन जाए। उन्होंने कहा कि विचार करने के लिए संकेंद्रण एक और पैमाना हो सकता है, लेकिन ऐतिहासिक अस्थिरता और प्रदर्शन जैसे अन्य कारकों को प्राथमिकता दी जाती है। उन्होंने कहा, निवेशक रिटर्न पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

मार्च में स्मॉलकैप फंडों के पास कुल परिसंपत्तियों के प्रतिशत के रूप में करीब 7.4 फीसदी नकदी थी। हालांकि यह फरवरी में रहे 9 फीसदी के स्तर से नीचे आ गई है। दूसरे शब्दों में, मार्च तक स्मॉलकैप योजनाओं के पास 21,720 करोड़ रुपये का धन था और उसका इस्तेमाल गिरावट में निवेश करने या रिडम्प्शन यानी निकासी के भुगतान के लिए किया जा सकता था। एम्फी के मुताबिक ऐसी योजनाओं ने मार्च में 4,092.1 करोड़ रुपये का निवेश हासिल किया, जो फरवरी के मुकाबले 10 फीसदी ज्यादा है।

अनिश्चितता से चमका सोना

भारत में यह प्रति 10 ग्राम एक लाख रुपये का स्तर पार कर चुका है।

वर्ष 2025 में सोना बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली परिसंपत्ति रहा और जनवरी से अब तक अमेरिकी डॉलर के हिसाब से इसकी कीमत 28 प्रतिशत बढ़कर रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच चुकी है। भारत में यह प्रति 10 ग्राम एक लाख रुपये का स्तर पार कर चुका है। हालांकि छह अंकों की सीमा पार करने के बाद मुनाफावसूली शुरू हो गई। बीते महीने कीमतों में काफी उतार-चढ़ाव नजर आया। आंशिक तौर पर इसके लिए अमेरिकी टैरिफ नीति का अनिश्चित रुख जिम्मेदार रहा।

लिबरेशन डे के बाद तेजी पकड़ने के बाद सोने की कीमतों में कुछ गिरावट आई क्योंकि राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने टैरिफ के मुद्दे पर अपना रुख कुछ नरम किया। परंतु निरंतर वृहद आर्थिक अनिश्चितता तथा वैश्विक मुद्रास्फीति के ऊंचे स्तर पर रहने की संभावनाओं के बीच इसकी कीमतों में दोबारा तेजी आ गई। मुद्रास्फीति और व्यापक तौर पर वृहद अनिश्चितता को लेकर बचाव के पारंपरिक उपाय के रूप में केंद्रीय बैंक से लेकर आम परिवार तक सोने का इस्तेमाल करते हैं। यकीनन अधिकांश केंद्रीय बैंकों ने सोने का भंडार बढ़ा लिया है। हालांकि प्रक्रिया की शुरूआत टैरिफ से जुड़ी अनिश्चितता से बहुत पहले हो गई थी परंतु अमेरिकी सरकार के कदमों से उत्पन्न अनिश्चितता ने इसका आकर्षण बढ़ा दिया।

सोने की मांग और उच्च मुद्रास्फीति का रिश्ता प्रमाणित है और निकट भविष्य में वह सही साबित हो सकता है। हाल के दिनों में अमेरिकी टैरिफ नीति की अस्थिरता के कारण कीमतें दिन में तीन-चार बार बदलीं। यह संभव है कि अमेरिकी टैरिफ में और इजाफा, अमेरिकी साझेदार देशों की ओर से जवाबी टैरिफ आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित करे और ग्राहकों के लिए सोने की कीमतों में और अधिक इजाफा हो जाए। टैरिफ की जंग के परिणामस्वरूप कुछ जिंस कारोबारियों का अनुमान है कि डॉलर के हिसाब से सोने की कीमतों में 25 फीसदी का इजाफा हो सकता है। डॉलर के साथ इसका रिश्ता अन्य संभावित प्रभावों की ओर ले जा सकता है। एक तो यह है कि कमजोर डॉलर अक्सर सोने की कीमतों में इजाफे की वजह बनता है क्योंकि कीमतें डॉलर आधारित हैं। अगर अमेरिकी ट्रेजरी प्रतिफल में इजाफा जारी रहता है और डॉलर कमजोर होता है तो इसका भी असर दिख सकता है। उस स्थिति में उच्च मुद्रास्फीति का संकेत जाएगा और दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में धीमापन आएगा जिससे वैश्विक गतिविधियां धीमी हो सकती हैं। इससे सोने की मांग बढ़ सकती है।

टैरिफ की जंग से इतर अन्य नीतिगत अनिश्चितता इस बात के इर्दगिर्द केंद्रित रहेगी कि अमेरिका अपने स्वर्ण भंडार का नए सिरे से आकलन कर सकता है। अमेरिका के पास करीब 8,150 टन सोना है जिसका मूल्यांकन वह करीब 42 डॉलर प्रति 31 ग्राम करता है। सोने की मौजूदा कीमत करीब 3,340 डॉलर प्रति 31 ग्राम है। यानी इसका नए सिरे से आकलन सोने को लेकर धारणा में काफी बदलाव कर सकता है। अगर अमेरिका अपने हिस्से का स्वर्ण भंडार बेच देता है तो इससे कीमतों और धारणा पर काफी असर होगा। भारत सरकार के पास करीब 876 टन और परिवारों के पास करीब 25,000 टन सोना है। ध्यान देने वाली बात है कि स्टॉक और बॉन्ड के उलट एक धातु के रूप में सोना कुछ नहीं देता। परंतु यह आभूषण उद्योग की बुनियाद है। इस उद्योग को इन अस्थिर हालात में अपनी इन्वेंट्री का सावधानी से इस्तेमाल करना होगा क्योंकि खुदरा कीमतें जहां रोजमर्रा की कीमत से जुड़ी रहती हैं वहीं इन्वेंट्री महीनों पहले तैयार की जाती है। इससे मुनाफा प्रभावित होगा। इसके अलावा गोल्ड लोन भी नकदी जुटाने का लोकप्रिय माध्यम है।

2024-25 में गोल्ड लोन बाजार 76 फीसदी की दर से बढ़ा और रेटिंग एजेंसी इक्रा के अनुसार चालू वर्ष में वह 10 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। रिजर्व बैंक ने हाल ही में एक नया नियमन पेश किया जिसे इस प्रकार तैयार किया गया है कि गोल्ड बॉन्ड में गड़बड़ियों को कम किया जा सके। यह समझदारी भरा है क्योंकि कीमतों में अचानक गिरावट से बैंकों आदि का जोखिम अचानक बहुत बढ़ सकता है। केंद्रीय बैंक को इस बाजार पर सख्त निगरानी रखनी होगी और साथ ही सोने को लेकर अपने जोखिम का भी प्रबंधन करना होगा क्योंकि वैश्विक कीमतों में बहुत अधिक उतार-चढ़ाव की स्थिति है।